श्रीराधाकुञ्जविहारिणे नमः

श्रीमत्सारस्वतद्विजकुमुदकलाधररसिकसम्प्रदायाद्याचार्यवर्य
श्रीजयदेवमहाप्रभुप्रणीतं, तथा तद्वंशज 'दार्शनिकसार्वभौम'
श्रीरामरायगोस्वामिनिर्मित ब्रजभाषापदावली सहितं—

* श्रीगीतगोविन्दम् *

आचार्य श्री यमुनावल्लभगोस्वामी शास्त्रीजी के कथनानुसार
मुंगेरस्थ राजर्षि श्रीरघुनन्दन प्रसाद सिंह के. टी. एम्. एल. ए.
द्वारा प्रकाशित

Vrindavan Das
Govind Kund, Vrindavan
Nityananda Baba Ashram

मिलने का पता—
श्रीराधामाधव मन्दिर—श्रीजयदेव पीठ
कालीदह मार्ग—श्रीवृन्दावनधाम

श्रीराधाकुञ्जविहारिणे नमः

श्रीमत्सारस्वत द्विजकुमुदकलाधर रसिकसम्प्रदायाचार्य वर्य
श्रीजयदेवमहाप्रभुप्रणीतं, तथा तद्वंशज दार्शनिक सार्वभौम
श्रीरामरायगोस्वामीनिर्मित ब्रजभाषापदावली सहितं—

* श्रीगीतगोविन्दं *

प्रारभ्यते

आचार्य श्री यमुनावल्लभगोस्वामि शास्त्रीजी के कथनानुसार
मुंगेरस्थ राजर्षि श्रीरघुनन्दन प्रसाद सिंह के. टी. एम्. एल. ए. ने
प्रकाशित कराया।

मिलने का पता—

श्रीराधामाधव मन्दिर—श्रीजयदेव पीठ

कालीदह मार्ग—श्रीवृन्दावनधाम

दो शब्द

आधुनिक पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित कुछ लोग कहेंगे कि इस इक्कीसवीं शताब्दी के प्रगतिशील युग में इन पुरानी पुस्तकों के पुनरावर्तन की क्या आवश्यकता है, इससे हमारा क्या लाभ है।

उन्हीं महानुभावों से मैं प्रार्थना रूप में नम्र निवेदन करता हूं कि एकाग्र चित्त से इस अलौकिक रस का आस्वादन करें।

श्री जयदेव महाप्रभु ने सानुभव द्वारा प्राप्त भगवल्लीला का यथार्थ वर्णन करके हम वर्तमान जीवों के लिये वरदान रूप में यह ग्रन्थ-रत्न प्रस्तुत किया है।

इसी प्रकार तद्वंशज श्री रामराय प्रभु ने श्री व्रजभाषा में पद्यानुवाद करके इसके गहन रस को पान करने के लिये—और भी सरलता प्रदान की है। उसके लिये हम और हमारी भावी परम्परा उभय महानुभावों की चिर कृतज्ञ रहेंगी।

इस ग्रंथ के सुन्दर सम्पादन और प्रकाशन के लिये आ० यमुनावल्लभ गो० शास्त्रीजी तथा श्रीमान् राजा रघुनन्दन प्रसाद सिंह एम० एल० ए० अनेकानेक धन्यवाद के पात्र हैं। सरस्वती और लक्ष्मी का यह संगम उत्तरोत्तर घनिष्ठ होकर ऐसे-ऐसे और भी जन हितकारी कार्य कराता रहे। यही रसेश्वर के चरणों में प्रार्थना है। मूल और पद्यावली के साथ-साथ शास्त्रीजी सरल भाषा अनुवाद भी दे देते तो मेरे जैसे जनसाधारण उससे विशेष आकृष्ट होकर रसास्वादन द्वारा लाभान्वित होते।

—कल्याणदास ठकर

(अवैतनिक अधिकारी श्रीनाथजी भण्डार, कलकत्ता.)

॥ श्रीजगन्नाथाष्टकम् ॥

कदाचित्कालिन्दीतटविपिनसङ्गीतकरवो
मुदाभीरीनारीवदनकमलास्वादमधुपः
रमा शंभु ब्रह्मा सुरपति गणेशार्चितपदो-
जगन्नाथस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥१॥

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपुच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचरि कटाक्षं विदधते ।
सदा श्रीमद्वृन्दावन वसति लीला परिचयो ॥२॥

महाम्भोधेस्तीरे कनक रुचिरे नील शिखरे
वसन्प्रासादान्तः सहज बलभद्रेण बलिना ।
सुभद्रा मध्यस्थः सकल सुरसेवावसरदो ॥३॥

कृपा पारावारः सजल जलद श्रेणि रुचिरो
रमावाणी रामस्फुरदमल पद्मेक्षण मुखैः ।
सुरेन्द्रै राराध्यः श्रुतिगण शिखागीत चरितो ॥४॥

रथारूढो गच्छन् पथिमिलित भूदेव पटलैः
स्तुतिप्रादुर्भाव प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः ।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकल जगतां सिन्धुसुतया ॥५॥

परब्रह्मापीडः कुवलयदलोत्फुल्लनयनो
निवासीनीलाद्रौ निहित चरणोनन्त शिरसि ।
रसानन्दो राधा सरसवपुरालिङ्गनसुखो ॥६॥
नवैप्राथ्यं राज्यं नचकनकतांभोग विभवं
न याचेहं रम्यां निखिल जनकाम्यां वरवधूम् ।
सदा काले-काले प्रमथपतिना गीत चरितः ॥७॥
हरत्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते
हरत्वं पापानां वितति मपरां यादव पते ।
अहो दीनानाथं निहित मचलं निश्चितपदम्
जगन्नाथस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥८॥
प्रभो भोजः श्रीमत्प्रिय पदसरोजस्मरणधी-
सुधी धीरादेशोत्सव विभव सन्दर्शनसुखी ।
तदेवान्तर्यामी विदधदिह सन्तापशमनं
जगन्नाथस्वामी नयनपथगामी भवतुमे ॥९॥

इति श्रीहरदेवसूनुभोजदेवप्रणीतं सन्ततिदायकं—
श्रीजगन्नाथाष्टकं समाप्तम् ।

* श्री राधाकुंजबिहारिणे नमः *

सम्पादकीय वक्तव्य

प्रस्तुत ग्रन्थरत्न प्रभु की प्रेमोन्मादभरी वाणी है, शुद्ध प्रेम का श्रीराधाकृष्णलीला से परिचय होना ही प्रेम का लक्षण है, लोक में जिसे काम नाम से पुकारते हैं, वही भगवत् में निहित प्रेम कहलाता है। यह उपासना राग मार्ग की है, जिसका पुराणों के पश्चात् यही आद्य काव्य है। श्री शंकराचार्य, श्री रामानुजाचार्य, श्री मध्वाचार्य, श्रीनिम्बार्काचार्य, श्रीमद्वल्लभाचार्य, महाप्रभु आदि सभी के प्राचीन अर्वाचीन अनुयायियों ने इस पर व्याख्या की है। अतः यह प्रबन्ध चक्रवर्ती पदासीन है श्री आद्य रसिकाचार्य चूड़ामणि श्री जयदेव महाप्रभु की नर-लीला अनुपम और अद्भुत है। इस पुस्तक से सभीको उसका आस्वादन एवं सन्तोष होगा।

आपका चरणसेवक—
आचार्य श्री यमुनावल्लभ गोस्वामी शास्त्री
श्री जयदेवपीठ
कालीदह रोड—श्रीधाम, वृन्दावन

द्रव्य सहायक राजवंश वर्णनम्

आसीत् पुरा पाटलिपुत्र वासी रामप्रसादोऽमल पुण्य राशिः।
श्रीकृष्णपादार्चन सद्धृताशी राजन्यवर्यातिनय प्रकाशी ॥१॥

सवा सौ वर्ष पहले की बात है कि पटना के रहनेवाले हैहय क्षत्रिय वंशोद्भव परम धर्मात्मा बाबू रामप्रसादजी किसी समय मुंगेर आ गये। यहाँ भूमिपति होकर धर्म से जीवन बिताने लगे और आपने बबुआघाट श्री गंगाजी पर बनवाया, तथा आपके एक बाजार का नाम भी बबुआ बाजार है॥ १॥

अगणित गुण धारणैकचित्तः प्रभुपद पंकज भक्तिभाव वित्तः।
शुभकुल विनयीच रामपुत्रश्चिरमरुचत् "कमलेश्वरी" जनत्रः ॥२॥

बाबू श्री रामप्रसादजी के घर में अनेक गुणों से परिपूर्ण तेजस्वी भक्तिभाव वाले विनयी पुत्र श्री राजा कमलेश्वरीप्रसाद सिंह उत्पन्न हुए। आपने के० पी० स्कूल, टाउन हाल, वाटर-वर्क्स तथा जनाना अस्पताल बनवाया। आपकी धर्मपत्नी राजमाता श्री मिट्ठनदेवी ने श्री गंगाजी पर श्री जगन्नाथजी का मन्दिर तथा कष्टहरनी जनाना घाट बनवाया।

तत्सुतौ शास्त्र निष्णातौ द्वौवभूवतुरुत्तमौ।
धर्मशीलो वयो ज्येष्ठः श्रीराजा शिवनन्दनः ॥३॥
अनेक शास्त्र पाण्डित्य पूर्णोनल्पगुणस्तथा।
श्रीमद्वीर पदाकांक्षी राजास्ते रघुनन्दनः ॥४॥

श्री राजा कमलेश्वरीप्रसाद सिंह के दो पुत्र रत्न हुए—बड़े श्री राजा शिवनन्दनप्रसाद सिंह एम० एल० ए०, छोटे श्री राजा रघुनन्दनप्रसाद सिंह एम० एल० ए०।

राजा श्री शिवनन्दनप्रसाद सिंह के दो पुत्र हुए—बड़े श्री राजा देवकीनन्दनप्रसाद सिंह एम० एल० सी०। आप ने मुंगेर में श्री शिवनन्दननाथ महादेवजी का, एवं श्री ब्रजकिशोरजी का मन्दिर तथा पटना में सेनेट हाल कई लाख रुपये से तैयार कराया। और चाचाजी के साथ-साथ पटना, मुंगेर एवं दिल्ली में जच्चा-गृह बनवाये। छोटे पुत्र परम भागवत कुमार यदुनन्दन प्रसाद सिंह हुए। इन्हीं की कुमारी श्रीविष्णुप्रिया देवी विद्यमान हैं। इनके दो पुत्र भी हैं।

श्री राजा कमलेश्वरीप्रसाद सिंह के छोटे पुत्र आनरेबुल सर राजा श्री रघुनन्दनप्रसाद सिंह के० टी० एम० एल० ए०का जन्म वि० सं० १९३९ अगहन सुदी ६ मंगलवार को हुआ।

बाल्यकाल से ही आपके लक्षण अनुपम थे। कुमार अवस्था में ही आपने श्री गो० वामनदास मजुमदार से दीक्षा ग्रहण की और प्रति क्षण श्री महाप्रभुजी की कृपाबल से भगवन्नाम में निमग्न रहते हैं। आप मिर्जापुर में "हैहय क्षत्रिय महासभा" के सभापति हुए। तथा १९२१ सन् में आपने मुंगेर में प्रेम-मन्दिर निर्माण कराया, जिसमें अहर्निश श्री हरिनाम कीर्तन कराने से बिहार प्रान्त में नाम गंगा का स्रोत बहा दिया।

सन् १९२४ में आपका राजा-पद प्राप्त हुआ और सन् १९२७ में प्रयागवर्ती अखिल भारतीय गो-रक्षा सम्मेलन में सभापति का आसन मिला। दिल्ली में ५ वर्ष बिहार और उड़ीसा की जनता के प्रतिनिधि होकर कौंसिल आफ स्टेट के आनरेबुल मेम्बर रहे, वहाँ भी गो-रक्षा के विषय में बिल पेश किया ; किन्तु वोटों की कमी के कारण पास नहीं हुआ। उस समय पं० मदनमोहन मालवीय भी मेम्बर थे।

और बिहार प्रान्तीय हिन्दू-महासभा के सभापति हुए एवं सनातन-धर्म महासभा तथा सनातन-धर्म कालेज के प्रेसीडेन्ट रहे और ५ वर्ष से अधिक इण्डियन लेजिस्लेटिव एसेम्बली के मेम्बर रहे।

एक हास्पिटल तथा कालेज के छात्रों के लिये होस्टल बनवाया। सन् १९३२ में श्रीधाम बृन्दावन रेलवे स्टेशन के पास श्री राधा-मोहनजी का विशाल मन्दिर बनवाया। मुंगेर तथा श्री बृन्दावन के मन्दिर के लिये लाखों रुपये की जागीर भेंट की, जिससे दोनों स्थान की सेवा यथावस्थित चल रही है।

मुंगेर के पुराने राज-घर को भूकम्प में गिरने के बाद आपने बड़ा उच्च प्रासाद बनवाया। मन्दिर का भी फिर से नया निर्माण कराया।

आपकी धर्म-पत्नी रानी साहिबा श्री सरस्वती देवी तो साक्षात् दयालुता, उदारता एवं भावुकता-भरे धर्म की मूर्त्ति ही हैं।

आपके परम उदार कुमार श्रीशचीनन्दनप्रसाद सिंह भी नम्रता परिपूर्ण पिताजी के गुणों से सब प्रकार सम्पन्न हैं। आप दिल्ली में हैहय क्षत्रिय सभा के सभापति हुए। छोटी-सी अवस्था में ही सारा राज्य-भार सम्हाल लिया है।

आपके भी दो सुकुमार कुमार हैं—बड़े अनन्त चतुर्दशी को पैदा हुए थे, इससे उनका सार्थक नाम चि० कुमार श्रीअनन्तप्रसाद सिंह है। छोटे तो बहुत ही चतुर चि० कुमार श्रीकृष्णप्रसाद सिंह नाम वाले हैं। इनकी माता बड़ी विदुषी हैं। भगवान् श्रीराधा-मोहनजी कृपा करें, जो यह राजकुल भक्ति परिपूर्ण बना रहे।

श्रीमान राजा साहिब की दो पुत्रीरत्न भी हैं—बड़ी तो परम निष्ठावाली सती सरल स्वभाववती राजकुमारी श्रीहरिप्रिया देवी हैं, जिनके पति परम उदार बाबू श्रीबसन्तलाल सिंहजी हैं। छोटी राजकुमारी श्रीअनङ्ग मञ्जरी हैं, जो सर्व गुण विभूषित हैं। इनके पति बाबू राजेन्द्रप्रसादजी हैं।

इतना वैभव होते भी श्री राजर्षि तथा श्रीमती रानी साहिबा भजन में तो प्रत्येक भक्त को अनुकरणीय हैं।

भक्तभूषण राजा साहिब संस्कृत साहित्य तथा अंग्रेजी के ऊँचे मर्मज्ञ हैं। हमको यही कहना पड़ता है कि दम्पति अपने सदृश आप ही हैं। आपने कितने ही धर्म-ग्रन्थ प्रकाश किये हैं—जिनमें श्री वृन्दावन वाटिका, श्री हरिभक्ति सुधानिधि, श्री हरिनाम कीर्तनमाला तथा संगीत माधव एवं श्री जयदेव महाप्रभु का

गीतगोविन्द तथा श्री रामराय गोस्वामीजी की पदावली आपके हाथ में उपस्थित है।

हमारे देखने में सहिष्णु सदाचारी सन्तसेवी संस्कृतज्ञ आप ही आये। आप की प्रशंसा जितनी की जाय थोड़ी है।

लेखक—

आचार्य श्री देवकीनन्दन गोस्वामी

श्री राधामाधवजी का मन्दिर

श्री वृन्दावन धाम

श्रीमान् आनरेबुल सर राजा श्री रघुनन्दन प्रसाद सिंह
के० टी० एम० एल० ए०

राजवाटी—मुंगेर

श्रीराधामाधवौ विजयते

* आद्यरसिकाचार्य श्रीजयदेव महाप्रभु की जीवन लीला *

विक्रम की नवमी शताब्दि में यजुर्वेद माध्यन्दिनी शाखाध्यायी पंचप्रवर कौशल्य गोत्रोत्पन्न मौलेय सारस्वत ब्राह्मण एवं खत्रियों के पुरोहित पंडित श्रीगिरिधारी मिश्र पंजाब प्रान्तीय लवपुर (लाहौर) में रावी नदी के किनारे निवास करते थे।

आपके मन्दिर में ठाकुरजी की जगह श्रीमद्भागवत का पूजन होता था। आपने तीन बार श्रीमद्भागवत की अष्टोत्तर शत पारायण कीं। जिनके फल में आपके यहाँ श्री शुकदेव जी ने जन्म लिया, इनको हरदेव भी कहते थे।

श्रीहरदेवजी के यहां दशमी शताब्दि में कार्तिक शुक्ला गोपाष्टमी के दिन मुलतान स्थानीय पं० बंशीलाल जी तिक्खे की पुत्री श्री सुन्दरी जी से श्री भोजदेवजी का जन्म हुआ।

आपका विवाह मुलतान के निकटवर्ती ऊँचे गाम के रहनेवाले गोपीलाल जी की कन्या श्री राधादेवी जी से हुआ। इन्हीं श्री राधाभोज को रसिक सम्प्रदायाचार्य श्री जयदेव महाप्रभु के माता-पिता होनेका गौरव है।

यह दम्पती सन्तान न होने के कारण "धनं च धर्मैक फलं" के न्याय से सर्वदा सन्त सेवा करते थे। साधुजनों की आज्ञा से पौरोहित्य को तिलांजलि दे तीर्थ यात्रा के लिये चल दिये।

जब दक्षिण यात्रा में थे तो वहाँ श्री उडूपीक्षेत्र (श्रीमत्स्या-वतारस्थल) के निकट वेल्लनाटी ग्राम में आनन्दतीर्थ श्री मन्मध्वाचार्य का दर्शन मिला। (श्री मन्मध्वाचार्य का प्रादुर्भाव विक्रम सं० १०६५ की आश्विन शुक्ला दशमी रविवार को श्री नारायण भट्ट जी की धर्मपत्नी विद्यावतीजी से हुआ था। आपने श्री वदरिकाश्रम में श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यासजी से श्री गोपालमंत्र की दीक्षा प्राप्त की, आपके अलौकिक वचनामृत से मुग्ध श्री भोज दम्पती ने आचार्यजी से दीक्षा ग्रहण की। पश्चात् श्री जगन्नाथपुरी पधारे। यहाँ तीन वर्ष तक श्री गुरुमंत्र के चार पुरश्चरण किये।

एक दिन रथारूढ श्री जगन्नाथजी के सम्मुख प्रेम विभोर हो आप स्वरचित "जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे" इस अष्टक का गान कर रहे थे कि अकस्मात् जनता के देखते-देखते श्रीजगदीश में से अलौकिक तेजपुंज प्रकट हुआ और आप में लीन हो गया।

मूर्छित भोजदेव को लोग निवास स्थान ले गये। हजारों यात्री आपके दर्शनार्थ लालायित थे। श्री राधाजी पति की इस अवस्था से खिन्न थीं किन्तु तत्कालीन सम्राट् श्री बल्लालसेन स्वयं सेवकों को साथ ले आपकी सेवा में निमग्न थे।

रात बीत गई सुप्रभात हुआ। पं० जी जज गग कहते चेतन हुए। राजा साहिब ने एकान्त में आपसे पूछा—भगवन् अपने

जीवन में हमने ऐसा चमत्कार आज ही देखा है। अचेतन समय में आप जज गग क्या कहते थे ?

भोजदेवजी ने कहा राजन् मैंने पुत्र की इच्छा से अनुष्ठान किया था। कल ही उसे समाप्त कर दर्शन करने आया था। मेरे स्तवन से प्रभु प्रसन्न हुए और यह आज्ञा हुई कि हम स्वयं तुम्हारे यहाँ प्रघट होंगे और मैं कुछ नहीं जानता।

महाराज वल्लालसेन अत्यन्त हर्षित थे। प्रार्थना करने लगे भगवन् यदि ऐसी बात है तो इस देश का सौभाग्य उदय होगा। आप कृपाकर हमारे यहाँ पधारिये।

अत्यन्त अधिक आग्रह कर दम्पती को वीरभूमि ले गये। वहाँ अपने कन्दवेल के वगीचे में विराजमान कर दिया। अवतार का समय आया और ग्यारहवीं शताब्दि में माघ शुक्ला वसन्त पंचमी मकर संक्रान्ति को दिन के १२ वजे अभिजित में श्री जगन्नाथजी भक्तरूप से स्वयं प्रघट हुए।

महाराज ने "कन्दविल्व" में डेरा डाल दिया। जनता दर्शन के लिये उमड़ पड़ी। जय जगन्नाथ देव की २। यह हर्ष-ध्वनि सभी ओर सुनाई पड़ने लगी। शीघ्रता में जगन्नाथ छोड़ लोग—जयदेव की जय २ कहने लगे, यही प्रभु का जयदेव नाम विख्यात हुआ और सब गाने लगे। आपकी बाल लीला बड़ी अद्भुत है। जब ग्यारह वर्ष के थे तो एक ही वर्ष में पिता माता आपका यज्ञोपवीत कर गोलोक पधार गये।

आप प्रेम में पागल थे। इसका लाभ उठाने का एक निरंजन

नामक ब्राह्मण झूठा कागज बनाकर आपसे बोला—जयदेव, तुम्हारे पिता पर हमारे हजार रुपये थे या तो दे दो नहीं तो मकान छोड़ दो।

आप प्रसन्न हुए, कहने लगे—मकान और उसका सब सामान लेलो, तुमको दिया। हर्षित होकर सब सामान निकाल गाड़ी में भरने लगा। आप भी सहारा देने लगे। इतने ही में उसकी कन्या रोती आई, दादा घर में आग लग गई। यह सुन निरंजन घर को चला किन्तु प्रभु तो उससे पहिले ही उन आग की लपटों में घुस गये। आपके भीतर जाते ही वंध्या पुत्र की तरह आग लुप्त हो गई। निरंजन आप श्री के अलौकिक महत्व को देख सदा के लिये आपका अनन्य सेवक बन गया।

एक दिन चरण सेवा करते-करते सम्राट् ने प्रार्थना की भगवन् पुत्र की लालसा है, आपने अपना उच्छिष्ट ताम्बूल दिया। जिससे महारानी से कुमार लक्ष्मणसेन का जन्म हुआ। कुमार के जन्मोपलक्ष में सम्राट् ने कन्दविल्व श्री प्रभुजी को भेंट कर दिया।

प्रेमोन्माद में प्रभु सब त्यागकर पुरी चले गये। यदृच्छा लाभ संतुष्ट हो निवास करने लगे। वहाँ एक दाक्षिणात्य ब्राह्मण दम्पति ने श्री जगन्नाथ जी से प्रार्थना की भगवन् यदि मेरे घर सन्तान होगी तो पहिली सन्तति आपके लिये भेंट करूँगा। माधवी महारानी से पद्मावतीजी हुई। १२ वर्ष की पद्मावती को लेकर भगवान के लिये समर्पण की। जगन्नाथजी ने स्वप्न में कहा कि जयदेव मेरे ही स्वरूप है, उन्हें कन्या देदो मेरी आज्ञा है।

सुदेब पुत्री को वृक्ष के नीचे बैठे श्री जयदेवजी के पास छोड़ता कहने लगा भगवान् की आज्ञा है आप लीजिये और लड़की से कहा यही तेरे पति हैं, इनके साथ रहो कहकर चला गया।

आप पद्मावतीजीसे बिना कुछ कहे उठकर चल दिये और श्री जगन्नाथजी से कुछ कहने के लिये मन्दिर में घुस गये। पण्डाओं ने लाठियों से मारा, खून बहने लगा, पद्मावतीजी रोने चिल्लाने लगीं, अरे मेरे पति हैं, इन्हें मत मारो।

इधर पुरी का राजा दर्शन करने आया तो देखता है कि श्री जगन्नाथजी के वस्त्र रक्तप्लावित हैं कड़ाई कर राजा ने पंडाओं से पूछा किन्तु जगदीश स्वयं प्रकट हो कहने लगे आज इन्होंने मुझे बहुत मारा है जयदेव मेरे ही स्वरूप है उस दिन से मन्दिर में पंडाओं द्वारा श्री जयदेवजी की पूजा होने लगी।

महाराज बल्लाल सेन मर चुके थे महारानी ने प्रार्थना कर आपको कन्दविल्व पधराया श्री पद्मावतीजी संग आई श्रीजय-देव प्रभु के नित्य नए चरित्र होते थे कहाँ तक लिखें।

ब्रज-यात्रा

एक बार आपश्री पद्मावतीजी को महारानी के पास छोड़ कन्दविल्व से ब्रज यात्रा को पधारे आपकी पद-पद पर पूजा होती थी कन्नौज में महाराज जयचन्द राठौर ने आपसे ठहरने की प्रार्थना की वहाँ सती होने जाती हुई किसी बाल-विधवा के पति को चरणामृत दे जिला दिया नगर में कोलाहल हो गया।

आप रात्रि में ही चल दिये और श्री मथुरा में पधारे व्रज में यथेष्ट भ्रमण किया भाद्रपद श्री कृष्णाष्टमी को रात्रि समय श्री यमुना तटवर्ति रावल ग्राम में आपको प्रथम तो श्री राधामाधव-जी की केलि के दर्शन हुए पश्चात् स्नान करते श्री यमुनाजी से श्री राधामाधवजी का श्याम स्वरूप प्राप्त हुआ।

प्रभात में व्रजवासियों ने आप का स्वरूप सहित अभिषेक किया और खूब दधि कांदा हुआ १५ दिन रावल में ही विराजे फिर मथुरा के लिये पधारे।

यहाँ सकुटुम्ब तीर्थयात्रार्थ आये हुए लाहौर वासी पं० पूर्ण-चन्द्र गोस्वामीजी से श्री यमुना स्नान में वार्तालाप हुआ वहां उन्होंने अपने मित्र का पुत्र और जगद्वन्द्य आपके स्वरूप का अनुभव किया तो आपको अपने पास में रख लिया ६ महीने मथुरा में रहे संस्कारवश श्री पूर्णचन्द्रजी ने अपनी कन्या श्री रोहिणीजी के साथ आपका पाणिग्रहण करा दिया। और अपने छोटे लड़के पराशर को आपकी सेवा में दे दिया। होली के समय व्रज में आए हुए आमेर नरेश मथुरा में आपके दर्शन कर प्रार्थना करने लगे भगवन् थोड़ा राजपूताने को भी चरण रज से पुनीत बनाइये। आप अनुरागवश श्री रोहिणी और पराशर को श्री राधामाधवजी की सेवा देकर दो दिन के लिये आमेर पधारे।

आमेर में भीड़ लग गई कि श्री जगन्नाथजी के अवतार श्री जयदेव प्रभु पधारे हैं दर्शनार्थियों ने भारी आग्रह कर एक

महीने आपको पधरा लिया। एक दिन एकान्त में महाराज सुमेरसिंह ने विनय की भगवन्! आपको सब लोग श्री जगदीश का अवतार बताते हैं किन्तु उनके स्वरूप में तो श्रीचरण तथा हस्त कमलों का दर्शन नहीं होता आपके श्री अंग में तो सभी है प्रभु ने हँसकर बात टाल दी।

किसी दिन आप दर्शनार्थियों के साथ महाराज के कहने के अनुसार आमेर के पास दूसरे गाँव में चले गये वहाँ बहुत-सा द्रव्य भेट में आया उसे लेकर रात्रि में ही बिना कहे आप इकले आमेर पधारे। भयानक पहाड़ियों में चोरों ने द्रव्य तो छीन लिया और हाथ-पैर काटकर कुएँ में डाल दिया आप वही कीर्तन करने लगे।

सन्ध्या समय वायु सेवन के लिये निकले महाराज को कुएँ से शब्द सुनाई पड़ा, आपने उन्हें निकलवाया। आपकी ऐसी दुरवस्था देख भारी कष्ट पाया और पूछा कि उन दुष्टों का रंग रूप बतलाओ कैसे थे। आपने कह दिया कि हमने देखा ही नहीं। महाराज आपको घर लाये और सेवार्थ मनुष्य भेजकर मथुरा से श्री रोहिणीजी तथा पराशरजी को बुलवाया। पूर्ण-चन्द्रजी दोनों को समझा बुझाकर मथुरा से ही लाहौर चले गये।

और इन दोनों ने आपकी जो अवस्था देखी, रोने लगे। आपने चुप किया, श्रीराधामाधवजी की सेवा सादर चलने लगी। आपने उपदेश में महाराज को सन्त सेवाका महत्व बतलाया। महाराज ने भी सन्त-सेवा प्रारम्भ की। एक दिन

वे ही चार चोर तिलक लगाकर आये, आपको देख लौटने लगे। आपने तत्काल सिपाही भेजकर इन लोगों को रुकवा लिया और उनके चरणों में प्रणाम कर महाराज से कहा यह हमारे शिक्षा-गुरु हैं।

अब तो उनका अत्यन्त आदर होने लगा। जैसे-जैसे सत्कार बढ़ता वे घबराते थे। आठ दिन रखा, अन्त में अच्छी द्रव्य सेवा कराकर विदा किया और मार्ग-रक्षक साथ दिये।

रास्ते में सिपाहियों ने पूछा महाराज! आपकी जैसी सेवा किसी की नहीं हुई इसका कारण क्या है? चोरों ने कहा अरे भाई यह लूला-लँगड़ा जो है यह चोर है। हमने इसको चोरी का दण्ड भोगते देखा है यह बात खुल न जाय इसके लिये हमारी सेवा कराई है। चोरों का इतना कहना था कि पृथ्वी फट गई गई और चोर उसमें समा गये।

रक्षक चकित हो द्रव्य लौटाकर महाराज के पास लाये। महाराज शीघ्र ही प्रभु के पास आये और सब समाचार कहा। प्रभुजी दुःखित हो हाथ-पैर मीडने लगे। महाराज के देखते-देखते आपके पंजे निकल आये। यह संवाद घर-घर में फैल गया और महाराज को अनुभव हो गया कि प्रभुने मुझे यह श्री जगन्नाथ स्वरूप का दर्शन कराया है।

आप महाराज के मन्दिर में श्री राधामाधवजी का एक स्वरूप स्थापन कर पराशर रोहिणी सहित राजपूताना से बंगाल

पधारे। यहाँ महारानी तथा पद्मावतीजी आपके बुलाने के लिये देवी पूजा कर रही थीं।

आपके आते ही महाराज श्रीलक्ष्मण सेन राजसिंहासनासीन हुए। और आप श्री के चरणों में प्रार्थना की कि अब कहीं न पधारें। यहाँ ही श्री राधामाधवजी की सेवा करिये। आपने लक्ष्मण सेन को साहित्यरत्न बना दिया और विद्वानों की सभा स्थापन की। उस समय का आपका काव्य "सदुक्तिकर्णामृत" है जो छपा हुआ उपस्थित है। महाराज की सभा के विद्वान् गोवर्द्धनाचार्य, उमापति धर, शरण, धोयी कविराज प्रभृति सभी प्रभु की सेवा करते थे, किन्तु आप सदैव सब से हिलमिल कर रहते थे। महाराज लक्ष्मण सेन की रानी बासन्तीमणि श्री पद्मावतीजी से बड़ा प्रेम करतीं। श्री रोहिणीजी श्री राधामाधव-जी की सेवा करती रहती थीं। सौ० बासन्तीमणि रानी के पास पद्मावतीजी विराज रही थीं। इतने में ही रोती हुई विधवा ननद आई रानी रोने लगी, पता लगा कि इनकापति मर गया। सुनकर पद्मावतीजी ने कहा यह कैसी स्त्री है जो पति मरने पर जी रही है, इन शब्दों से सभी को कष्ट हुआ।

कुछ समय व्यतीत हुआ एक दिन रानी ने कहा कि आज महाराज के साथ कविराज प्रभु वन में पधारे थे वहाँ बाघ ने आपका भक्षण कर लिया। श्री पद्मावतीजी श्रवणकर मूर्छित हुई और मर गई।

जब प्रभु बाहिर से पधारे तो महल में रानी को रोते देख

आपने सब समाचार पूछा सुना आपने अपना चरणामृत दे दिया। उसको मुख में डालते ही श्री पद्मावतीजी जीवित हो गईं और आपका पातिव्रत जगत् में विख्यात हो गया।

प्रभु चरण नित्य श्री गंगा स्नान के लिये पधारते थे श्री गंगाजी दूर थीं। श्री गंगाजी ने कहा आप आने का कष्ट न करें, मैं आपके दरवाजे पर जो नदीं हैं उसमें सुप्रभात होते ही आ जाऊँगी। इसका परिचय होगा कि उसमें नवीन कमल खिले मिलेंगे। वही हुआ और आज पर्यन्त श्री जयदेवी गंगा कन्द-विल्व में विद्यमान हैं।

वैष्णव धर्म का प्रचार

महाराज लक्ष्मणसेन का पुत्र कुमार हेमन्त सेन पाँच वर्ष की आयु में असाध्य बीमार हो गया। बंगाल में देवी पूजा का प्रचार बहुत था। आपके पुरोहित चण्डीदास आये और उपाय बताया कि नवदुर्गा है, नरवलि देने से कुमार अभी अच्छे हो जाएंगे।

आपकी आज्ञा को कौन टाल सकता था, क्योंकि आप राजगुरु तथा शाक्त मत के आचार्य थे। पुराने चण्डी मण्डप में मा काली के सन्मुख मनुष्य मंगा लिये। इससे सब दुखी थे और रो रहे थे। उधर हेमन्तकुमार मर गये। अब क्या था भट्टाचार्य महाशय ने शीघ्र ही हेमन्त को काली मा के सामने रखवाया और कहा बलि प्रारम्भ करो। कुमार अभी जिन्दा हो जायेंगे। ऐसा करुण-क्रन्दन था कोई माथा फोड़ रहा है। कोई

मूर्छित पड़ा है। महारानी इस दृश्य को देख स्वयं गिर गई हैं। महाराज लक्ष्मणसेन शोकातुर हैं। एक साथ सब लोगो ने दीन पुकार प्रारंभ की है।

सब के देखते-देखते खंभ से नृसिंह भगवान.की तरह श्रीजयदेव महाप्रभु प्रकट हुए। आपके दर्शन से खलबली मच गई। प्रभु ने भट्टाचार्य की करतूत देखकर कहा रे हिंसक! यह क्या कर रहा है? क्या मा काली बेटों को खाती है, हट एक तरफ—इस वाक्सुधा का पान कर जनता तो मानो जी पड़ी और आपने तत्काल श्रीकृष्ण-कीर्तन प्रारंभ कराया।

अब क्या था ऐसा प्रेमानन्दमय कीर्तन हुआ जिसकी तुमुल हर्षध्वनि से आकाश गूँज उठा और एक प्रहर के संकीर्तन से श्रीकाली मा श्रीकृष्ण बन गई तथा हेमन्तको गोद में उठा लिया, खेलता हुआ हेमन्त मा ने पाया।

इस चरित्र से चण्डीदास आपके चरण सेवक हो गये और श्रीवाल्मीकिजी की तरह कवियों में नाम पाया। देश भर में श्रीहरि नाम के साथ-साथ श्रीजयदेव महाप्रभु का जयजयकार हुआ और सभी वैष्णव बन गये।

श्री गीतगोविन्द रचना से परिचय

एक दिन प्रेमोन्माद में पराशर के साथ आप पुरी से आ रहे थे। रास्ते में घनघटा देख आपने ब्रज के रावल ग्राम में जो "मेघैर्मेदुरमम्बरं" श्लोक रचा था उसकी गान लीला में मूर्छित हो गये। पराशर उस घोर जंगल में आपकी ऐसी स्थिति

से खिन्न थे कि स्वयं श्रीहरि भोजन का सामान लाये। आपको उठाकर खिलाया पिलाया और अन्तर्ध्यान हो गये। आपकी वंशी रह गई। प्रभु ने ध्यान द्वारा आपके पास पहुँचाई। आपने घर आकर श्री गीतगोविन्द लिखा जिसकी काव्य-सुधा का किसी से तुलना करना केवल वाल्य चापल्य है।

श्री गीतगोविन्द के प्रथम श्लोक में इष्टदेव श्री राधामाधवजी का नाम वस्तु निर्देशात्मक मंगलाचरण है, चतुर्थ पद्य में कविरत्नों का वर्णन है। जिस समय आपने श्री राधामाधवजी के सम्मुख गान प्रारंभ किया तो सभी अवतारों के स्वरूप आपके सम्मुख हुए अतः समस्त अवतारों का प्रधान लक्ष्य श्रीकृष्ण को मान कर वर्णन किया—

तीसरे सर्ग में, "वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रवणेन।
"कन्द विल्व समुद्र सम्भव रोहिणीरमणेन।

इस पद में दूसरी पत्नी श्री रोहिणीजी का नाम दिया, जिसका श्लोक है :—

"या रोहिणी निगदिता निज वाल्यकाले
शंनः करोतु युवती तु कलावती सा
श्रीकृष्णदेवजननी जयदेवपत्नी
पाराशरस्य भगिनी व्रत पूर्णपुत्री

यह सं० १४६० की लिखित श्री लक्ष्मणभट्टजी की टीका में है। कलावती नाम सप्तम सर्ग स्थित "वसतु हृदि युवतिरिव कोमल 'कलावती" इस प्रवन्ध में है। बंगला ग्रंथ में भी लिखा है :—

कन्द विल्व ग्राम आमार समुद्र समाना।
समुद्र संभव चन्द्र तैछे सम जाना॥
रोहिणी नामे ते जथा चन्द्रेर वनिता।
रोहिणीरमण आमि एइ गुप्त कथा॥
इत्यादि

बारहवें सर्ग में श्रीपराशरजी तथा माता-पिता श्री राधाजी और श्री भोजदेवजी का वर्णन है।

जब प्रभु दशम सर्ग लिख रहे थे, तो प्रसंग आया कि श्रीकृष्ण आप श्री प्रियाजी से कहते हैं कि अपना श्रीचरण मेरे मस्तक पर दीजिये। इसे संकोचवश विचाराधीन छोड़ गंगा स्नान को गये पीछे से आपके रूप में श्री जगन्नाथजी ने प्रथम तो भोजन किया पश्चात् आपका इच्छित पद स्वयं लिखा। थोड़ी देर सोकर पधारे, जब प्रभु आये तब देखते हैं कि उनसे पहिले दोनों पत्नी भोजन करती हैं, आपने सब समाचार सुना और ग्रन्थ को देख आनन्द निमग्न हो गये। वह चरण यह है,—"देहि पद पल्लवमुदारम्"

श्री गीतगोबिन्द प्रचार

एकबार संगीताचार्य बूडनमिश्र दिग्विजय करते कन्दविल्व आये। यहां श्री राधामाधवजी के मन्दिर में राज-समाज इकट्ठा हुआ और समस्त गायकों को परास्त कर विजयपत्र मांगने लगे, तब प्रभु ने वीणा हाथ में लेकर "रति सुखसारे गतमभिसारे," इस पंचम सर्ग की अष्टपदी का गान किया केदार राग में, सभी चकित हुए और बूडनमिश्र आपके शिष्य हो गये।

महाराज लक्ष्मणसेन ने पुरी में श्रीजगन्नाथजी के सम्मुख अनेक गायकों को एकत्रित कर श्रीगीतगोविन्द का गान कराया। श्री जगन्नाथजी भी मुख से ताल देने लगे, सब चकित हुए और ग्रन्थ की बहुत-सी प्रति घर-घर लिखी गई तथा नित्य पाठ होने लगे।

पुरी के राजा ने अधिक प्रचार देख नवीन गीतगोविन्द बनवाकर विद्वानों से उसका प्रचार करने को कहा। राजा को सब ने समझाया कि गीतगोविन्द तो एक ही अलौकिक है दूसरा नहीं हो सकता।

इस पर सभा जोड़ी गई और उसमें श्री जगदीश की साक्षी का निर्णय हुआ। दोनों पुस्तकें मन्दिर में रख किवाड़ बन्द किये। भगवान ने राजा की पुस्तक पृथ्वी में पटक, प्रभु के ग्रन्थ को हार में लिपटा लिया। इस अपमान से भूपति समुद्र में डूबने चला, प्रभु ने उनको समझा कर अपने ग्रन्थ में १२ श्लोक राजा के रख दिये।

इस पुस्तक का इतना प्रचार हुआ कि स्त्री पुरुष, बड़े छोटे, ऊंच नीच सभी जातिवाले गाने लगे। कोई दिन मालिन की लड़की "पश्यति दिशि दिशि रहसि भवन्तम्" इसे गाती थी और बैंगन तोड़ती जाती थी, श्री जगदीश पीछे-पीछे सुनते फिरते थे। आपका जामा फट गया।

जब पुरीनरेश दर्शन करने आये तो भगवान् के फटे वस्त्र देख पंडाओं पर कुपित हुए, किन्तु आपने स्वप्न में सारा हाल

कहा। राजा ने पालकी भेजकर उस लड़की को बुलाया और मन्दिर में श्री गीतगोविन्द गाने के लिये सुव्यवस्थित कर दिया। इसे देख बहुतसी लड़कियां इकट्ठी हो गईं और देवदासी नाम से विदित हुईं।

एक पठान घोड़े पर बैठा "चन्दन चर्चित नीलकलेवर—इस अष्टपदी को गाता जाता था। श्री जी भी पीछे दौड़ रहे थे आपके श्रीअंग वस्त्र वागे सब धूलि-धूसरित हो गये।

महाराजा ने डौंडी पिटवाई कि कोई भी गीतगोविन्द का पाठ या गान चलते-फिरते न करे, वैठकर और एक आसन पास बिछाकर पाठ करे। श्री नाभाजी ने इसका अनुभव वर्णन किया है।

* श्रीभक्तमाल *

श्री जयदेव "कविनृपचक्रवर्ती खण्डमण्डलेश्वर आनकवि
प्रघट भयो तिहुँलोक गीतगोविन्द उजागर।
कोक काव्य नव रस्य सरस श्रृंगार को सागर॥
अष्टपदी अभ्यास किए तेहि बुद्धि बढावैं।
राधामाधव पढत सुनत निश्चय तहाँ आवैं॥
सन्त सरोरुह खंड कों पद्मावति सुख जनक रवि
श्री जयदेव "कविनृप चक्रवर्ति खंडमंडलेश्वर आन कवि

गो० श्री रामरायजी ने भी लिखा है :—

रसिकवर श्री जयदेव उदार।
होते जो न मही में तौ को गातौ कुंजविहार॥
महारस सागर पूरन चन्द।
कोमल ललित पदावलि विलसित उदयो गीतगोविन्द॥
कृष्ण निजु कर कमलन पूर्यौ।
अपनों रूप दिखावन कारन जग शंसय चूर्यौ॥
जुगल रसको यह प्रथम प्रकाश।
ता पाछें सब कोऊ वरन्यौ ले लघु गुरु आभास॥ इत्यादि।

श्रीमद् गीतगोविन्द तीनों लोक में गाया जाता है। सब दिशा, सभी आचार्य एवं सम्प्रदायों का जीवनधन बना हुआ है। श्रीवल्लभाचार्यमहाप्रभु श्रीजगन्नाथपुरी पधारे, तो श्रीजगदीश ने आज्ञा की कि अपने सम्प्रदाय में श्रीगीतगोविन्द का प्रचार करो। श्रीत्रिपती बालाजीकी सीढ़ियों पर तैलङ्ग भाषा में लिखा था। अब उन पत्थरों को दीवालों में लगा दिया है।

श्री जयदेवजी यवनों के उपद्रव के पहिले ही सपरिवार श्री वृन्दावन पधारे। यहाँ रोहिणीजी से श्रीकृष्णदेव प्रकट हुए। आपकी आज्ञा से श्री पराशरजी श्रीरोहिणी श्रीकृष्णदेव श्री गीत गोविन्द को लेकर श्री राधामाधव जी के साथ पंजाब चले गये और श्री पद्मावती जी तथा श्री जयदेव महाप्रभुजी वन-विहार स्थल में नित्यलीला के लिये अन्तर्ध्यान हो गये।

श्रीगीतगोविन्द की इतनी व्याख्या प्राप्त हैं

	(टीका)	(टीकाकार)
१	रागमाला	श्री वृहस्पति मिश्र
२	सन्दर्भ दीपिका	आस्थान चतुरानन धृतिदास वैश्य
३	वचन मालिका	माधव दास
४	भाव विभाविनी	उदयनाचार्य
५	रसिक प्रिया	कुंभाजी राणा
६	गंगा	श्रीकृष्णदेव
७	अर्थरत्नावली	गोपालचन्द
८	पद द्योतनिका	नारायण भट्ट
९	सर्वाङ्ग सुन्दरी	नारायण दास
१०	प्रियतमा	पीताम्वर
११	रसकदंव कल्लोलिनी	भगवद्दास
१२	भाव विलासिनी	भावाचार्य
१३	मत्ता	मानाङ्कदेव
१४	माधुरी	रामतारण
१५	कान्ता	रामदत्त
१६	सानन्द गोविन्द	श्रीरूपदेव
१७	वैजयन्ती	श्री लक्ष्मण भट्ट
१८	माधवी	बनमाली भट्ट
१९	प्रथमाष्टपदी विवृति	गो० श्री विट्ठलनाथ दीक्षित

२०	श्रुतिरंजनी	विश्वेश्वर भट्ट
२१	रस मंजरी	शंकर मिश्र
२२	वैदर्भी	शालिनाथ
२३	साहित्य रत्नाकर	शेष रत्नाकर
२४	पद भावार्थ चन्द्रिका	श्रीकान्त मिश्र
२५	हर्षोदया	श्रीहर्ष
२६	गीतगोविन्द तिलकोत्तम	हृदयाभरण
२७	साहित्य रत्नमाला	मेघनाथ पुत्र शेषरत्नाकर
२८	गोविन्द तत्व वोधिनी	कुमारखाँ
२९	सारदीपिका	जगत् हरि
३०	गीतगोविन्द प्रबोध	रामभद्रात्मज रामकान्त
३१	श्रुतिरंजनी	कौंड्ड भट्ट भ्राता यज्ञेश्वर सूनु लक्ष्मीधर (लक्ष्मण सूरि)
३२	अनूपोदय	अनूप सिंह
३३	सद्व्याख्या	चिदानन्द भिक्षु
३४	व्याख्या मालिका	ध्वांतकर
३५	पदाभिनय मञ्जरी	गढाके अर्जुनदास का पुत्र चन्द्र साहिपालित वासुदेब वाचा सुन्दर
३६	शशिलेखा	मिथिलावासी भवेश सुत कृष्णदास
३७	श्रुतिसार संजनी	तिरुमलराज
३८	बालवोधिनी	चैतन्यदास गोस्वामी

३९	परमा	परमानन्द
४०	गीतगोविन्द माधुरी	गोविन्दचन्द्र
४१	वासन्ती	श्रीरामराय गोस्वामी
४२	रासकौमुदी	श्री नन्दकिशोर गोस्वामी

* श्री जयदेव महाप्रभु वंशावली *

श्री गिरधारी मिश्रजी
श्री हरदेव मिश्रजी
श्री भोजदेव मिश्रजी
गो० श्रीजयदेव महाप्रभु
(रसिकाचार्य)
गो० श्रीकृष्णदेव प्रभुजी
गो० श्रीगोविन्ददेवजी
,, श्रीमुकुन्ददेवजी
,, श्रीअनन्यदेवजी
श्री माधवदेवजी
,, प्रद्युम्नलालजी
,, मोहनलालजी
,, नन्दगोपालजी
,, गुरुगोपालजी

भ्राता २

श्री रामराय गोस्वामी
श्री चन्द्रगोपाल प्रभु
श्री राधिकानाथ गोस्वामी
श्री ब्रह्मगोपाल गोस्वामी
गो० श्री कल्याण रायजी
गो० श्री चुन्नीलालजी

भ्राता २

श्री नन्दकिशोरचन्द्रजी गोस्वामी
श्री ब्रजकिशोरजी गोस्वामी
श्री वासुदेव गोस्वामी
श्री प्रियतमलालजी गोस्वामी
श्री यमुनावल्लभ गोस्वामी

भ्राता ३

श्री देवकीनन्दन गोस्वामी
श्री गोविन्दवल्लभ गोस्वामी
श्री विट्ठलनाथ गोस्वामी

श्री गीतगोविन्दप्रिया पदावली

इसके रचयिता श्री गीतगोविन्द कर्ता श्री जयदेव महाप्रभु से ११ वीं पीढी में एवं कलि पावनावतार श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु के कृपापात्र 'दार्शनिक सार्वभौम' श्री रामराय गोस्वामीजी महाराज वि० सं० १५४० बैशाख शुक्ला ११ को प्रकट हुए थे। भक्तमाल में श्री नाभाजी ने लिखा है:—

विप्र सारस्वत घर जनम श्री रामराय हरि रति करी
भक्ति ज्ञान वैराग योग अन्तर गति पागे
काम क्रोध मद लोभ मोह मत्सर सब त्यागे
कथा कीर्तन मगन सदा आनन्द रस झूले
सन्त निरखि मन मुदित उदित रवि पंकज फूले
वैर भाव जिन द्रोह किय तासु पागि खिसि भूपरी ॥वि०१६३॥

"श्रीनाथजी के अधिकारी अष्टछापवर्ति श्रीकृष्णदासजी लिखते हैं:—

"परम रसिक जन मंगल छाये।"
पुन्य अपूरव प्रघट भये श्री रामराय गोस्वामि सिधाये
महाप्रभु श्री वल्लभ सुत श्री विट्ठलजू को दै उपदेश सिहाये
हित हरि वंश हंस सम्मत अति आचारजजू मित्र मिलाये
नित्यानन्द महाप्रभु पद रज शिष्य प्रसिद्ध जगत हितु आये
गोकुल गाम बर्ष द्वै वसि पुनि तीरथ सन्त अनन्त वनाये
भज श्रीकृष्णदास लखि परम हंस गति बहुत समें बपु
दृगन जुडाये।

आमेर के राजा श्रीभगवानदासजी आपके प्रधान शिष्य हुए, जिन्होंने गोवर्द्धन में श्री हरदेवजी का मन्दिर तथा मानसी गंगा का घाट बनवाया था। ब्रह्मसूत्रपर आपकी रचित "श्री गौरविनोदिनी वृत्ति है, ब्रजभाषा में" श्री आदिवाणीजी आदि ४००० पद हैं।

आपश्री का सिद्धान्त था—

और कोऊ समझै सो समझो, हमको इतनी समझ भली।
ठाकुर श्री नन्दकिशोर हमारे, ठकुरानी श्री वृषभानु लली।
सुबल आदि सब सखा श्यामके, श्यामा संग ललितादि अली।
ब्रजपुर वास सैल वन विहरन, कुञ्जन - कुञ्जन रंग रली।
इनके लाड़ चाव सुख सेवा, भाव बेल रस फलन फली।
कहें भगवान हितु श्रीरामराय प्रभु, सबते इनकी कृपा भली।

आप के ११ शिष्य और भी थे, यथा—

भक्ति भगवानदास ज्ञान कों गरीबदास,
बांके वैराग विष्णुदास के दिखाने हैं।
जोग कों जुगलदास अन्तरगति राधानाथ,
काम कों किशोर क्रोध केशव कों माने हैं।
मद कों मनोहर लोभ लाखादास मोह मधु,
मत्सर हरिदास त्याग तीरथ पिछाने हैं।
कथा तत्व भागवत कीर्तन सुख रामराय,
जा विधि सों द्वादश गुरु संग लिपटाने हैं।

श्री गो० रामरायजी के लघुभ्राता श्री गो० प्रभुचन्द्रगोपालजी ने ब्रह्मसूत्र पर श्रीराधामाधव भाष्य लिखा है, इनके पौत्र श्रीब्रह्मगोपाल प्रभु ने सं० १७ सोमें सेंधिया महाराज से श्रीवृन्दावन में भूमि पाकर श्री ब्रह्मपुरी मुहल्ला बसाया, इनके सौ वर्ष बाद श्रीनन्दकिशोर चन्द्र गोस्वामीजी ने श्री मद्भागवत की ब्रजगाथा व्याख्या लिखी, श्रीराधारमण सेवाधिकारी विद्यावागीश गो० श्री राधाचरणजी ने लिखा है।

श्री कालिय ह्रद निकट व्याससुत दर्शन दीने
भावअर्थ गंभीर प्रेम परिपूरन कीने
करिप्रबन्ध कल्पना कथा की प्रथा चलाई
वशी करन सम कियौ चित्तश्रोता समुदाई
भयो न कोई होयगो वक्ता त्रिभुवन रंध्रमा
श्री नन्दकिशोर पूरन कला भये "भागवत चन्द्रमा" ॥६१॥

आपके लघु भ्राता श्री ब्रजकिशोर गोस्वामीजी के विषय में भारतेन्दु बाबू श्री हरिश्चन्द्रजी का यह लेख है।

जगतबिदित जयदेव कवि सेवित चरन रसाल
विन्दावन विलसत अजहु राधामाधव लाल
राधामाधवलाल बिहारीजी सन्निधि लखि

सेवे चन्दगुपाल रूप सुन्दर चित्रा सखि
रामराय सम्बन्ध प्रेम बल्लभकुल सबसुखि
सेवा सात्विक भाव एक दिन हौं देखी चखि
मिले गुसाईं मोहि श्रीब्रजकिशोर सेवालगत
दर्शन विन्दाविपिन फल हरीचन्द जेही जगत,

भारतेन्दु बाबूकी हिन्दी कविता टीका भी श्री गीतगोविन्द पर है।

श्री ब्रजकिशोरजी के पौत्र गो० श्री प्रियतमलालजी महाराजने "श्रीरसिकाचार्य चरितावली" रचना की, जिसमें सभी पुरातन प्रमाणों का संग्रह कर श्रीजयदेव प्रभु की जीवनलीला से संसार को परिचित कराया, उसीके अनुसार यह सब लिखा है, हमको अपने पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य श्रीयमुनाबल्लभ गो० शास्त्रीजी द्वारा यह समस्त साहित्य मिला।

अतः यह लीला लिखने में हमको सुविधा मिली, यह सभी चरित्र संस्कृत तथा हिन्दी काव्य में है, जिसका पूर्ण प्रकाश समयानुसार किया जायगा। भगवान् श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुजी इस श्रीगीतगोविन्द को बड़े प्यारसे सुनते थे, इसका प्रमाण "श्रीचैतन्यचरितामृत" में इस प्रकार है :—

"चण्डिदास विद्यापति रायेर नाटकगीति
कर्णामृत श्रीगीतगोविन्द ।
स्वरूप रामानन्द सने महाप्रभु रात्रि दिने
गाये सुने परम आनन्द ॥

इत्यादि श्री गीतगोविन्द की मीमांसाके लिये एक ग्रंथ ही पृथक किया जाय, यह तो दिग्दर्शन मात्र है, महानुभाव इतने प्रयाससे सन्तोष लाभ करेंगे तो हमारा कर्तव्य सफल होगा।

इस लेख में कितनी ही हिन्दी की तथा विराम, कौमा आदि की अशुद्धि मानवोचित सहज दोषों से रह गई हैं, उन्हें महानुभाव क्षमा कर, सुधार कर पढ़ेंगे ; यही प्रार्थना है।

लेखक—
कुमार शचीनन्दनप्रसादसिंह
"भ्रमर"
श्री राजवाड़ी, मुंगेर

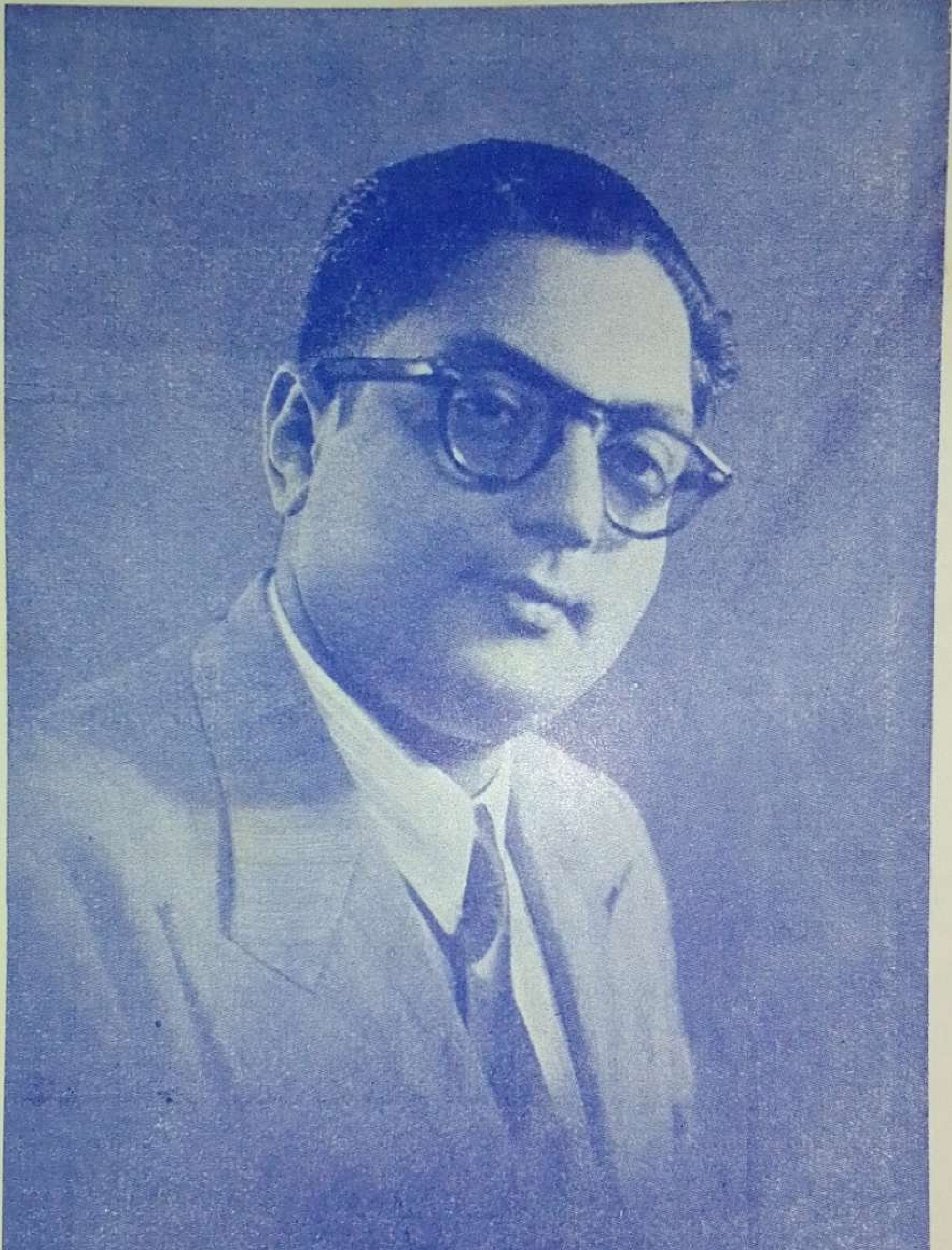

श्रीमान् राजकुमार श्री शचीनन्दन प्रसाद सिंह "भ्रमर"

राजवाटी—मुंगेर

* श्रीराधाकुञ्जविहारिणे नमः *

श्रीचैतन्यग्रन्थमाला का २५वाँ पुष्प *

अथ गो० श्रीरामरायजी प्रणीत व्रजभाषा पदावली सहित

श्रीगीतगोविन्द सामोद दामोदरः

प्रथमः सर्गः

दो०— श्रीराधामाधव चरन सेवासुख अधिकार ।
सहज दया जयदेव प्रभु गायो सरस विहार ॥१॥

महामाधुरी तासु जह ललित गीतगोविन्द ।
रामराय तिनकी शरन गावत पद सुखकन्द ॥२॥

वन्दौं श्रीगुरु गौर पद जगमग जोति अभंग ।
मिल अनंगमंजरि सहित एक अंग दो रंग ॥३॥

मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै-
र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय ।
इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमं
राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलयः ॥१॥

कवित्त— घनघिरि आयौ वन सघन तिमिर छायौ-
रैंनि में डरैंगे देखि लेखि यों दृगन ते
नन्दनी कहत वृषभानुनन्दिनी सों नन्द-
नन्दनहि घरे जाहु लैकें वेगि वन ते।
सखी के वचन पाइ प्रेम के रचन भरे
चले तरु तीर छांह जमुना पुलिन ते।
रामराय मारगि रहसि रस केलि भरे
ऐसे राधामाधौ वाधा हरें मेरे मनते ॥१॥

वाग्देवताचरितचित्रितचित्तसद्मा
पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्ती ।
श्रीवासुदेवरतिकेलिकथासमेत
मेतं करोति जयदेवकविः प्रवन्धम् ॥२॥

सवैया—
वानी के चित्र चरित्रसों चित्त निकेतन जासु विचित्र चिन्यौ है।
देवी श्रीराधिका के पदपंकज दासनु में समराजु गिन्यौ है।
कुञ्जविहारी के लीला भरे रससिंधु सों प्रेम प्रवन्ध जन्यौ है।
श्रीजयदेव कवीश्वर के महिमामृत गीतगोविन्द वन्यौ है ॥२॥

यदि हरिस्मरणे सरसं मनो
यदि विलासकलासु कुतूहलम् ।
मधुरकोमलकान्तपदावलीं
शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम् ॥ ३ ॥

जो चित चाहत कुंज विहार रसामृत पान महान सुधाहू।
कै कमनीय विशाल कला कवि काव्य जु कान परै जह चाहू ॥
तौ अति सुन्दर सुन्दर श्याम की लीला उमंग तरंग प्रवाहू।
श्री जयदेव कवीश्वर की रचना सुनि गीत गोविन्द उछाहू ॥३॥

वाचः पल्लवयत्युमापतिधरः सन्दर्भशुद्धिं गिरां
जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूहद्रुतेः ।
शृङ्गारोत्तरसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्द्धनः
स्पर्धीकोपिनविश्रुतः श्रुतिधरोधोयी कविक्ष्मापतिः ॥४॥

शब्द आडम्बर में निपुन उमापति धर,
जाकी कविता में अर्थ गौरव न पायौ है।
क्लिष्ट काव्य कर्ता श्री शरन गोवर्द्धन जू,
काव्य में सिंगार रस विरस सुनायौ है।
धोई नृप सुनते ही धारन कर लेत शीघ्र,
भाव आदि तिनको न ठीक ठहरायौ है।
प्रेमभरी रचना के संग संदरभ शुद्धि,
रसकौ सरूप जयदेव प्रभु गायौ है ॥४॥

अष्टपदी—

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदं
विहितवहित्रचरित्रमखेदम् ।
केशवधृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ॥१॥

क्षितिरति विपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे,

धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ।

केशवधृत कच्छपरूप जय जगदीश हरे ॥२॥

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना,

शशिनि कलंककलेव निमग्ना ।

केशवधृत शूकररूप जय जगदीश हरे ॥३॥

तव करकमलवरे नखमद्भुतशृंगं,

दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम् ।

केशवधृत नरहरिरूप जय जगदीश हरे ॥४॥

छलयसि विक्रमणे वलिमद्भुतवामन,

पदनखनीरजनितजन पावन ।

केशवधृत वामनरूप जय जगदीश हरे ॥५॥

क्षत्रियरुधिरमयेजगदपगतपापं,

स्नपयसि पयसि शमितभवतापम् ।

केशवधृत भृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥६॥

वितरसिदिक्षु रणेदिक्पति कमनीयं,

दशमुखमौलिवलिं रमणीयम् ।

केशवधृत रघुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥७॥

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं,
हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ।
केशवधृत हलधररूप जय जगदीश हरे ॥८॥

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं,
सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ।
केशवधृत बुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥९॥

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालं,
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।
केशवधृत कल्किशरीर जय जगदीश हरे ॥१०॥

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं,
शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ।
केशवधृत दशविधरूप जय जगदीश हरे ॥११॥

प्रलय उदधि सों वेद, आपुहि हरि रक्षा करे,
माने कछुक न खेद, सत्यव्रत मनु सुख भरे।
केशव अनुपम मीन, जय जगदीश हरे॥ (१)

कठिन सु-पीठ विशाल, गिरि मंडल तापर लसे,
दिव्य सु-दीठ रसाल, लोक चक्र जापर बसे।
केशव कच्छप रूप, जय जगदीश हरे॥ (२)

दशन शिखर पर वास, सहजु करायौ धरनिकौ,
मनहु चन्द छवि भास, दीखत शोभा वरनिको।
केशवरूप बराह, जय जगदीश हरे॥ (३)

श्रीकर कमलन बीचु, नख मनु अद्भुत सींग हैं,
हिरन कशिपु को खींचु, फार्‍यो उदर जु धींग है।
केशव श्री नरसिंह, जय जगदीश हरे॥ (४)

बलि छलिवे के हेत, श्री उपेन्द्र नामहु धरे,
सकल शुद्धि कर देत, जो जल पद नख सों छरे।
केशव वामन वेश, जय जगदीश हरे॥ (५)

छत्रिय रुधिर तड़ाग, कितने भर परघट करे,
किये तहां पुनि जाग, न्हान करत पापहु हरे।
केशव परशूराम, जय जगदीश हरे॥ (६)

लंकेश्वर दशशीश, रन में काटे बान सों,
किये सहायक कीश, दश दिश बलि प्रदान कों।
केशव दशरथ राम, जय जगदीश हरे (७)

रोहिनि नन्दन वीर, नागसुता संग रास किय,
खेंचो जमुना नीर, अवगाहन उल्लास हिय।
केशव हलधर राम, जय जगदीश हरे (८)

पशु हिंसा लखि आप, वेदहु की निन्दा करी,
दयासिंधु हर ताप, सुगत विशारद श्री हरी।
केशव बुद्ध शरीर, जय जगदीश हरे॥ (९)

म्लेछ समूह विनाश, हेतु लेंहि तरवार कर,
कलि मल करि हैं नाश, धर्म सनातन धार हर।
केशव कल्कि स्वरूप, जय जगदीश हरे॥ (१०)
श्री जयदेव उदार, रामराय भगवान धन,
देंहि सहज भव तार, होइ जोय अनुराग मन।
केशव दश विध रूप, जय जगदीश हरे॥ (११)

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यान् दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते,
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः॥१॥

कवित्त—

वेदनु उधार्‌यो पीठ भूधर समार्‌यो भूमि,
मंडल कों दंत धारि हिरना को मार्‌यो है।
बलि के छलैया छत्रीवंश के दलैया लंका-
पति के मिटैया रघुनाथ रूप धार्‌यो है।
कालिन्दी कर्षन कृपा वर्षन सुदीनन पै,
म्लेच्छ अघमर्ष कलि कल्मष प्रतार्‌यो है।
ऐसे दशरूप धारें हारें सग भूमि भारें,
रसिक बिहारें कृष्णचन्द्र जग तार्‌यो है॥१॥

(द्वितीय प्रबन्ध गुर्जरी राग प्रति म० ताल)

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए,
कलित ललित वनमाल, जय जयदेव हरे ॥ध्रु०॥१॥
दिनमणिमण्डलमण्डन भवखण्डन ए,
मुनिजनमानसहंस, जय जयदेव हरे ॥२॥
कालियविषधरगञ्जन जनरञ्जन ए,
यदुकुलनलिनदिनेश, जय जयदेव हरे ॥३॥
मधु-मुर-नरक-विनाशन गरुड़ासन ए,
सुरकुलकेलि निदान, जय जयदेव हरे ॥४॥
अमल कमलदल लोचन भवमोचन हे,
त्रिभुवन भवन निधान,जय जयदेव हरे ॥५॥
जनकसुता कृत भूषण, जित दूषण हे,
समर शमित दशकंठ,जय जयदेव हरे ॥६॥
अभिनव जलधर सुन्दर, धृत मन्दर हे,
श्रीमुख चन्द्र चकोर, जय जयदेव हरे ॥७॥
तव चरणे प्रणतावय, मिति भावय हे,
कुरु कुशलं प्रणतेषु, जय जयदेव हरे ॥८॥
श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदम् ,
मङ्गलमुज्वल गीतं, जय जयदेव हरे ॥६॥

(द्वितीय प्रबन्ध अष्टपदी)

श्री राधिका उरोज रंग रंजित कुण्डल धारु।
जय जयदेव हरे हरे वनमाला उर चारु॥१॥
दिनमणि मंडल मंडना भवभय करि विध्वंश।
जय जयदेव हरे हरे मुनि मन मानस हंस॥२॥
कालिय विषधर गंजना जनरंजन प्रिय वेश।
जय जयदेव हरे हरे जदुकुल नलिन दिनेश॥३॥
मधु मुर नरक विनाशना गरुड़ासन भगवान।
जय जयदेव हरे हरे सुर कुल केलि निदान॥४॥
अमल कमलदल लोचन भवभय मोचन ध्यान।
जय जयदेव हरे हरे त्रिभुवन भुवन निधान॥५॥
जनक सुता कृत भूषणा जित दूषन खर बीर।
जय जयदेव हरे हरे हत दशकण्ठ शरीर॥६॥
नव जलधर सुन्दर सुवपु धृतमन्दर वर जोर।
जय जयदेव हरे हरे राधा वदन चकोर॥७॥
तव पद पल्लव प्रणति हे भक्त भूप घनश्याम।
जय जयदेव हरे हरे कुशल करहु अविराम॥८॥
श्री जयदेव कवीशकृत उज्ज्वल मंगल गीत।
रामराय भगवान हित गावत परम पुनीत॥९॥

पद्मा पयोधर तटी परिरंभ लग्न-
काश्मीर मुद्रित मुरो मधुसूदनस्य,

व्यक्तानुरागमिव खेलदनङ्ग खेद
स्वेदाम्बुपूर मनु पूरयतु प्रियं वः ॥१॥

कवित्त—

प्यारी पयोधर केशर कीच लगी हिय बीच आलिंगन कीये,
मानों किशोरी के प्रेमपराग महाअनुराग की मुद्रा कों दीये।
गाढ़ मिलाप पसीना भये तिनके कछु बिन्दु विराजत हीये,
ऐसे मदोन्मदमत्त श्री माधवलाल करें जनरंजन जीये ॥१॥

बसन्ते वासन्ती कुसुम सुकुमारै रवयवै-
भ्रमन्ती कान्तारे बहुविहित कृष्णानुसरणाम्।
अमन्दं कन्दर्पज्वर जनित चिन्ताकुलतया,
चलद्वाधांराधां सरसमिदमूचे सहचरी ॥२॥

कवित्त—

वासन्ती कुसुमन समान सुकुमार अंग,
विन्दावन भूमि में भमत कृष्ण अनुसरें।
पीड़ित अमन्द कन्दर्प के प्रचंड वेग,
चिन्ता अति चिन्तित विचित्र ज़ुर कों धरें।
आई सखिपास सुखराश की विलास कथा,
कहि के किशोरी के दुरन्त दुख को हरैं।
सोई जयदेव हरि राधा तन वाधा दरें,
वरनन सों आनंद उमंग झरना झरैं ॥२॥

(तृतीय प्रबन्ध वसन्त राग रूपक ताल)

ललित लवङ्ग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे,
मधुकर निकर करम्बित कोकिल कूजित कुञ्ज कुटीरे,
विहरति हरि रिह सरस बसन्ते ।
नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि जनस्य दुरंते ।।ध्रुव।।१।।
उन्मद् मदन मनोरथ पथिक बधूजन जनित विलापे ।
अलिकुल संकुल सुमन समूह निराकुल बकुल कलापे ।।२।।
मृगमद् सौरभ रभस वशंवद नवदल माल तमाले ।
युवजन हृदय विदारण मनसिज नख रुचि किंशुक जाले ।।३।।
मदन महीपति कनक दण्ड रुचि केशर कुसुम विकाशे ।
मिलित शिलीमुख पाटल पटल कृतस्मर तूण विलासे ।।४।।
विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुण वरुण कृत हासे ।
विरहि निकृन्तन कुन्तमुखाकृति केतकि दन्तुरिताशे ।।५।।
माधविका परिमल ललिते नव मालति जाति सुगन्धौ ।
मुनि मनसामपि मोहन कारिणि तरुणाकारण बन्धौ ।।६।।
स्फुरदति मुक्तलतापरिरंभण मुकुलित पुलकित चूते ।
वृन्दावन विपिने परिसर परिगत यमुना जल पूते ।।७।।

श्री जयदेव भणित मिदमुदयतु हरि चरणस्मृति सारम्।
सरस बसन्त समय बन वर्णन मनुगत मदन विकारम् ॥८॥

ललित लवङ्गलता मिली कोमल मलय समीर,
मधुकर सहचरि कोकिला कूजत-कुञ्ज कुटीर,
ऋतु-बसन्त बिहरत गिरधारी।
बिरही-बिरह हरणकर्ता हरि चलु वृषभानु दुलारी ॥१॥
उन्मद-मदन मनोरथ डूबी पथिक बधूजन जनित विलाप।
अलिकुल संकुल कुसुमावलि जहाँ व्याकुल दीखत बकुल-कलाप ॥२॥
कस्तूरीसम सुर-भित सोभित नवल-नवल दल माल तमाल।
जुबजन हृदय विदारन कारण काम नखाकृति केशर जाल ॥३॥
मदन मही-पति छत्र तनायो सो जह केशर कुसुम विकाश।
पुहप गुलाब मिले भौंरामनु कामदेव के तरकस पास ॥४॥
करुन बृच्छ के कुसुम करत हैं खिलि २ निर्लज्जनुकौ हास।
कुन्त शस्त्र सम दीखत केतक कुसुम-बसन्त बने बनुवास ॥५॥
ललित सुगन्ध माधवी-लतिका मालति जाति अनूपम पास।
मुनिजन मनकी मोहनि कारी सहज मित्र जुबजन अभिलास ॥६॥
वासन्ती के मिलत भयो हैं मंजरिमनु रोमांच रसाल।
चहुँदिश पुलिन उछाह मचो है श्री विन्दावन जमुना नाल ॥७॥
श्री जयदेव बसन्त सुनायो राधामाधव सुमिरन सार।
रामाराय अद्भुत सुख पायो जुगल सिंगार अनंग बिहार ॥८॥

दरविदलित मल्ली बल्लि चञ्चलराग
प्रकटित पट वासै वासयन् काननानि,
इहहि दहति चेतः केतकी गन्ध बन्धु
प्रसर दसम बाण प्राणवद्गन्ध वाहः ॥१॥

आधी खिली नव मल्ली की बल्ली को सोंधलियें जह वायु पधारी,
हाथ नहीं कछु आवै सखी बिरहीजन की कुल-जाति बिगारी।
केतकी सों कर हेत की बात समात नहीं हियमें छलधारीं,
कामके वान समान बसन्त में जानपरी दुखदाई दुधारी ॥१॥

अद्योत्सङ्गवसद्भुजङ्ग कवलक्लेशादि वेशाचलं
प्रालेय प्लवनेच्छयानुसरति श्रीखण्ड शैलानिलः।
किञ्च स्निग्ध रसाल मौलि मुकुलान्यालोक्य हर्षोदया
दुन्मीलन्ति कुहूः कुहूरिति कलोत्ताला: पिकानां गिरः ॥२॥

राधे बसन्त की वायु बहे मलयाचल सों हिम सैल सिधारी।
मानों भुजङ्ग बिषाक्त भई दुखिया सुख हेतुही जाति बिचारी।
कोकिल वाल रसाल की मंजुल मंजरी देखि भई मतवारी,
मीठी मनोहर वोलत बाँनी छिपै नहीं प्रानी सुखारी-दुखारी ॥२॥

उन्मीलन्मधु गन्ध लुब्धमधुप व्याधूत चूतांकुर
क्रीडत्कोकिल काकली कलकलै रुद्गीर्ण कर्ण ज्वराः।
नीयन्ते पथिकैः कथं कथमपि ध्यानावधानक्षण
प्राप्त प्राण समा समागम रसोल्लासै रमी बासराः ॥३॥

आमकी मंजरी कामकी खंजरी गूँज रही अलि आवलि पाये,
मोहनी मीठी सी तान कमान चलावत कोकिल काकली गाये।
पावत तापु प्रतापु महापथ पांथन साथ जों प्यारी कों लाये,
कैसें बितावत हैं दिन आली ज्यों राधा बिना बनमाली कहाये॥३॥

अनेक नारी परिरम्भ सम्भ्रम-
स्फुरन्मनोहारि विलास लालसम्,
मुरारिमारादुपदर्शयन्त्य सौ-
सखी समक्षं पुनराह राधिकाम् ॥४॥

केतिक प्यारीनु प्यार लियें तौहू चैन हिये न परे जेहि प्यारी,
काहू सों बात करें अरु काहू के मन्दिर जात सिहात मुरारी।
देखौ समीप सों जाइ रहे पर ध्यान में आनही राजदुलारी,
केवल लाल विलास के लालची दूजौ कछू न चहें श्रीबिहारी ॥४॥

(चतुर्थ प्रबन्ध रामकली रागेण रूपक तालेन गीयते)

चन्दन चर्चित नील कलेवर पीत बसन बनमाली,
केलि चलन्मणि कुण्डल मण्डित गण्ड युगस्मित शाली।
हरि रिह मुग्ध बधू निकरे,
विलासिनि विलसति केलि परे ॥ध्रु०॥१॥

पीन पयोधर भार भरेण हरिं परिरभ्य सरागम,
गोपबधूरनुगायति काचिदुदंचति पंचम रागम् ॥२॥

काऽपि विलास विलोल विलोचन खेलन जनित मनोजम्,
ध्यायति मुग्धवधू रधिकं मधुसूदन वदन सरोजम् ॥३॥
काऽपि कपोल तले मिलितालपितुं किमपि श्रुतिमूले,
चारु चुचुम्ब नितम्बवती दयितं पुलकैरनुकूले ॥४॥
केलिकला कुतुकेन च काचिदमुं यमुनाजल कूले,
मंजुल वंजुल कुञ्जगतं विचकर्ष करेण दुकूले ॥५॥
करतल ताल तरल बलयावलि कलित कलस्वन वंशे,
रास रसे सहनृत्य परा हरिणा युवतिः प्रशशंसे ॥६॥
श्लिष्यति कामपि चुम्बति कामपि कामपि रमयति रामाम,
पश्यति सस्मित चारुतरा मपरा मनुगच्छति बामाम् ॥७॥
श्री जयदेव कवेरिदमद्भुत केशव केलि रहस्यम्,
बृन्दावन विपिने ललितं वितनोतु शुभानि यशस्यम् ॥८॥

वने आजु नन्दलाल सखी प्रेम मादक पियें,
संग ललना लियें जमुना तीरे।
फूली केशर कमल मालती,
सघन वन मन्द सुगन्ध शीतल समीरे ॥१॥
नील मनि वरन तन कनक मण्डित बसन,
परम सुन्दर चरन परस माला।
मधुर मृदुहास परकास दशनावली,
छबि भरे इतरात दृग विशाला ॥२॥

किये चन्दन खोर वदनारबिन्द,
मकरन्द लुब्ध भ्रमर कुटिल अलकें।
हलत कुण्डल लटक चलत जब श्यामघन,
मणिन की कांतिकल गण्ड झलकें ॥३॥
एक चम्पक तनी कृष्ण रस मत्तनी,
करे राग पञ्चम लागि सोहै।
एक हरि मुख निरखि धर रही ध्यान मनु,
चित्र सम भई हरि हिये मोहै ॥४॥
एक दामिनी-सी भुजमेलि ग्रीवा,
बात कहन मिस मुखसों जु मुख मिलायो।
एक नवकुञ्ज में खेंचि रही कटिबंध,
आपनों लाल चित चोर पायो ॥५॥
एक श्यामहि हेरि सुभग लोचन फेरि,
विहँसि बोली भले कान्ह कपटी।
एक सोंधे भरी छुटे बारन खरी,
एक बिनु कंचुकी रीझि लपटी ॥६॥
एक श्यामा कनक कञ्ज बदनी,
प्रेम मकरन्द भरी हरि निरखि विकसी।
ताके रसलुब्ध रहे लपट सामरो भ्रमर,
प्रान प्यारी भुजन बीच जु लसी ॥७॥
रसिक मनिरंगभरे विहरत बिन्दाविपुन,
संग सखी मंडल प्रेम पागी।

कहै भगवान हित श्रीरामराय प्रभु,
सोई जाने जाहि लगन लागी ॥८॥

विश्वेषा मनुरंजनेन जनयन्नानन्द मिन्दीवर
श्रेणी श्यामल कोमलै रुपनयन्नङ्गै रनङ्गोत्सवम्
स्वच्छन्दं ब्रजसुन्दरी भिरभितः प्रत्यङ्ग मालिङ्गितः
शृङ्गारः सखि मूर्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति ॥१॥

मूरतिधार सिंगार सने सुकुमार कुमार सों प्यार बढ़ावें,
अंग अनंग के रंग भरे कों ब्रजाङ्गना प्रेम उछंग चढ़ावें।
ए ऋतुराज वसन्त लसन्त हसन्त अनन्त-सी लीला दृढ़ावें,
नील सरोरुह श्याम किशोर कों जोर भरी मदमत्त लड़ावें ॥१॥

रासोल्लास भरेण विभ्रमभृता माभीर वामभ्रुवा
मभ्यर्ण परिरभ्य निर्भर मुरः प्रेमान्धया राधया
साधुत्वद्वदनं सुधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति
व्याजादुद्भटचुम्बितः स्मित मनोहारी हरिः पातुवः ॥२॥

भीर आभीर कुमारीन की तहाँ धीरज नेक न चित्त में धारें,
प्रेम मदान्ध श्रीराधिका रास में अद्भुत काम की केलि विचारें।
प्यारे सुधानिधि आनन आपु औ गीतहू तैसीही शोभाकों धारें,
यों कहि चुम्बित तृप्त भरे मुसक्यान भरे हरि रच्छा कों पारें ॥२॥

[इतिश्रीगीतगोविन्दप्रियायां सामोद दामोदरो नाम
प्रथमः सर्गः समाप्तः]

द्वितीयः सर्गः

विहरति वने राधा साधारण प्रणये हरौ
विगलित निजोत्कर्षा दीर्ष्यावशेन गतान्यतः,
क्वचिदपि लताकुंजे गुञ्जन्मधुव्रत मण्डली
मुखर शिखरे लीना दीना प्युवाच रहः सखीम् ॥१॥

कृष्ण कौ प्रेम समान सभी ब्रज गोपिन में जब रास रचायो,
श्रीविन्दावन कुञ्जलता बलि पुञ्ज मधुव्रत गुञ्ज मचायो।
ईरखा प्यारी के चित्त भई पिय प्यार न अन्य के संग सुहायो,
जाइ छिपी तजि कुञ्जन में पुनि तापसों आपु सखी कों सुनायो ॥१॥

(पंचम प्रबन्ध गुर्जरी राग रूपक ताल)

सञ्चर दधर सुधा मधुरध्वनि मुखरित मोहन वंशम्।
चलित दृगञ्चल चञ्चल मौलि कपोल विलोल वतंसम् ॥१॥
रासे हरि मिह विहित विलासम्
स्मरति मनोमम कृत परिहासम् ॥ध्रु०॥
चन्द्रक चारु मयूर शिखण्डक मण्डल वलयित केशम्।
प्रचुर पुरन्दर धनुरनु रञ्जित मेदुर मुदित सुवेशम् ॥२॥
गोप कदम्ब नितम्बवती मुख चुम्बन लम्भित लोभम्।
बन्धु जीव मधुराधर पल्लवमुल्लसित स्मित शोभम् ॥३॥

विपुल पुलक भुज पल्लव वलयित बल्लव युवति सहस्रम् ।
कर चरणोरसि मणिगण भूषण किरण विभिन्न तमिस्रम् ॥४॥
जलद पटल चलदिन्दु विनिन्दक चन्दन तिलक ललाटम् ।
पीन पयोधर परिसर मर्दन निर्दय हृदय कपाटम् ॥५॥
मणिमय मकर मनोहर कुण्डल मण्डित गण्डमुदारम् ।
पीत बसन मनुगत मुनि मनुज सुरासुर बर परिवारम् ॥६॥
विशद कदम्बतले मिलितं कलि कलुष भयं शमयन्तम् ।
मामपि किमपि तरङ्ग दनङ्ग दशा मनसा रमयन्तम् ॥७॥
श्री जयदेव भणित मति सुन्दर मोहन मधुरिपु रूपम् ।
हरि चरण स्मरणं प्रति सम्प्रति पुण्यवतामनु रूपम् ॥८॥

बंशीबारे को ध्यान लग्यो मन भारी
अधरामृत सों बढ़ी माधुरी धुनि पूरित दिश चारी ।
सकल लोक को मोहन कर्ता चञ्चल नैन बजावै भर्ता ।
चपल कपोल ललित कुंडल शिर-मुकट हँसी मुखन्यारी ॥१॥
सुन्दर मोर पंख कंकन छव केश पाश गुँथे निज माधव ।
इन्द्र धनुष ज्यों श्यामघटा में तैसें लगत बिहारी ॥२॥
ब्रज रमनी मुख-चुम्बन लोभी विम्बाधर कोमल दल-छोभी ।
मन्द-मन्द मुसक्यान प्रानधन जीवन कृष्ण मुरारी ॥३॥
नवल बसन्त कल्प पल्लव से गोपी आलिंगन कर हरसे ।
तन आभूषन मनि किरनन सों अन्धकार भय हारी ॥४॥

नवघन श्यामघटा चल-चन्दा माथे मलयज चन्दन बिंदा।
विस्तृत हिये पुष्ट कुच मर्दन निर्दय करत सुधारी ॥५॥
मनिमकराकृत कुँडल मोहें भगत मनोरथ पूरक सोहें।
मुनि मनुष्य सुर-असुर चराचर पति पीताम्बर धारी ॥६॥
कोमल कदम तले मिल पाये हृदय नैनसों मोहि रमाये।
कलिकलमसनस इन्द्र दमन प्रभु व्रजरच्छक गिरिधारी ॥७॥
श्री जयदेव रचित सुन्दरतर कृष्ण केलि लीलारस सागर।
रामराय पद सुमिरन कर्ता सन्त सेव्य सुखकारी ॥८॥

गणयति गुण ग्रामं भ्रामं भ्रमादपि नेहते
बहति च परितोषं दोषं विमुञ्चति दूरतः
युवतिषु बलत्तृष्णे कृष्णे विहारिणि मां बिना
पुनरपि मनोवामं कामं करोति करोमि किम् ॥१॥

रास मिली वनिता अभिलास लखें मनमें अति दुःखहू पाऊँ।
तौहू पिया सुख चाहत हों अपराध भयेपैहू नांहि रिसाऊं।
मोहि तजी तिनआन भजी अपमान कौ ध्यान न चित्त बसाऊँ।
किन्तु प्रसन्न भई मुखसों निज कुञ्जबिहारी गुनावली गाऊँ ॥१॥

(मालव रागेण एकताली ताले गीयते)

निभृत निकुंज गृहं गतया निशि रहसि निलीय वसन्तम्।
चकित विलोकित सकल दिशा गति रभस भरेण हसन्तम् ॥

सखि हे केशि मथन मुदारम् ॥
रमय मयासह मदन मनोरथ भावितया सविकारम् ॥१॥
प्रथम समागम लज्जितया पटु चाटु शतैरनुकूलम् ।
मृदु मधुर स्मित भासितया शिथिली कृत जघन दुकूलम् ॥२
किशलय शयन निवेशितया चिर मुरसि ममैव शयानम् ।
कृत परिरम्भण चुम्बनया परिरभ्य कृताधर पानम् ॥३॥
अलस निमीलित लोचनया पुलकावलि ललित कपोलम् ।
श्रमजल सिक्त कलेवरया वर मदन मदादतिलोलम् ॥४॥
कोकिल कलरव कूजितया जित मनसिज तन्त्र विचारम् ।
श्लथ कुसुमाकुल कुन्तलया नख लिखित घनस्तन भारम् ॥५॥
चरण रणित मनि नुपूरया परिपूरित सुरत वितानम्
मुखर विश्रृंखल मेखलया सकचग्रह चुम्बन दानम् ॥६॥
रतिसुख समय रसालसया दर मुकुलित नयन सरोजम् ।
निःसह निपतित तनुलतया मधुसूदन मुदित मनोजम् ॥७॥
श्री जयदेव भणितमिद मतिशय मधुरिपुनिधुवन शीलम् ।
सुखमुत्कण्ठित राधिकया कथितं वितनोतु सलीलम् ॥८॥

मिलाओ सखी श्री कुञ्जविहरी संग।
मदन मनोरथ मधुर हास केशीमर्दन नवरंग

मौन निकुञ्ज भवनु में आई छिपकरि तिनु एकान्त रमाई।
मन्द हसन बोलन बिलास वस लज्जा प्रथम प्रसंग ॥१॥
चतुर शिरोमनि करत प्रशंसा जघन दुकूल हटावन मंसा।
कोमल दल सिज्जा मुख चुम्बन आलिंगन रस जंग॥२॥
अधिक समें वच्छस्थल ऊपर सोवत पीवत घूंट सुधाधर।
मदनानन्द बंद भये लोचन आलस भयो अनंग ॥३॥
तेहि श्रम स्वेद विन्द भीजोतन पुलकित गोल कपोल-लोल मन।
नवमद मदन अमन्द चन्दमुख सुख पावत जु सुधंग ॥४॥
कोकिल सम अस्फुट रतिवानी बैनी सिथिल पुहप स्रम जानी।
कुच कठोर नख चिन्ह करैया कोक कला उत्संग ॥५॥
पग नूपुर कटि किंकिनि बाजे केलिकलह परि-पूरन गाजे।
केश पाश कर पकर अधर धर सुधापान अरधंग॥६॥
रति सुख रस आलस मुरझाई मनोतमाल बेल अरुझाई।
प्रेमानन्द ध्यान जोगी सम उदै भयो प्रत्यंग॥७॥
श्रीजयदेव कवीश्वर गायो श्रीराधे के मुख कहिवायो।
रामराय उत्कंठित रति को गीत रीत सर्वाङ्ग ॥८॥ मिलावो

हस्त स्रस्त विलास वंश मनृजु भ्रू वल्लिमद्बल्लवी
वृन्दोत्सारि दृगंत वीक्षितमतिस्वेदार्द्रगण्डस्थलम्।
मामुद्वीक्ष्य विलज्जित स्मितसुधा मुग्धाननं कानने
गोविन्दं व्रज सुन्दरी गणवृतं पश्यामि हृष्यामि च ॥१॥

मोहि लखे जिनके करसों मुरली लकुटी दोउ भूमि गिरी री,
भौंहें कमान-सी वान कटाच्छ सुदच्छ ब्रजांगना देखें खरी री।
भीजे कपोल पसीना की बूँद अहो जहलाज सुहास भरी री,
कृष्ण मुखांबुज देखि सखी डूबी आनन्द सिंधु की प्रेम झरी री॥१॥

दुरालोक स्तोक स्तवकनवका शोकलतिका
विकाशःकासारो पवन पवनोपि व्यथयति।
अतिभ्राम्यद्भृङ्गी रणित रमणीया न मुकुल
प्रसूतिश्चूतानां सखि शिखरिणीयं सुखयति॥२॥

नव्य अशोक लतान के गुच्छ खिले कुसुमो खरके तटपे,
बाग सुहाग भरे तिन वायु सुशीतल मंद सुगंध झपे।
श्री गिरिराज पै आम के वृच्छ अली कुल गान करें तिनपे,
हे सखि कृष्ण वियोग के दुःख में अंग अनंग महान तपे॥२॥

साकूतस्मित माकुलाकुलगलद्धम्मिल्ल मुल्लासित
भ्रूवल्ली कमलीक दर्शितभुजा वालार्द्ध हस्त स्तनम्।
गोपीनां निभृतं निरीक्ष्य ललिताकाङ्क्षश्चिरं चिन्तयन्
नन्तर्मुग्ध मनोहरो हरतुवःक्लेशं नवःकेशवः॥४॥

इतिश्रीगीतगोविन्दे अक्लेशकेशवोनाम द्वितीयः सर्गः

भाव भरी मुसकान सों देखत गोपबधू कुच हाथ औ बैनी,
ताही समैंसो धरीहिये ध्यान में सुन्दरि राधिका खंजन नैनी।

नाहि प्रियासम कोहू तिलोकी में मोहत ध्यावत हैं पिकवैनी,
भक्तन कौ सब क्लेश हरें वे ही कृष्ण किशोर जु मूरतिमैनी ॥३॥

श्रीदेव देव जयदेव कवीश गायो,
श्रीकृष्णचन्द्र महिमामृत सिंधु जायो ।
श्रीरामराय तिनके पदकञ्ज पूजौ,
अक्लेश केशव भयो जह सर्ग दूजौ ॥४॥

इतिश्रीकविराजराजेश्वर श्रीजयदेवमहाप्रभु वंशोद्भव-
श्रीरामरायगोस्वामीप्रभुप्रणीतायां श्रीगीतगोविन्द
प्रियायां द्वितीयः सर्गः

तृतीयः सर्गः

कंसारिरपि संसार वासनाबन्ध शृंखलाम्
राधा माधाय हृदये तत्याज ब्रजसुन्दरीः ॥१॥

इतस्ततस्ता मनुसृत्य राधिका
मनङ्ग बाण व्रणखिन्न मानसः ।
कृतानुतापः सकलिन्द नन्दिनी
तटान्त कुञ्जे निषसाद माधवः ॥२॥

जगत वासना बांधिवे हित जगके करतार ।
त्यागदई वृज सुन्दरी श्री राधाके प्यार ॥१॥

श्री राधेकों खोजते पीड़ित विरह कलाप।
जमुना तीर निकुञ्ज में माधव करत विलाप ॥२॥

(सप्तम प्रबन्धो गुर्जरी रागेण गीयते)

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन
सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन ॥१॥
हरिहरि हतादरतया गता सा कुपितेव (ध्रु०)
किंकरिष्यति किंवदिष्यति साचिरं विरहेण।
किंधनेन जनेन किं मम जीवितेन गृहेण ॥२॥
चिन्तयामि तदाननं कुटिलभ्रु रोषभरेण।
शोणपद्म मिवोपरि भ्रमताकुलं भ्रमरेण ॥३॥
तामहं हृदि संगता मनिशं भृशं रमयामि।
किं वनेनु सरामि तामिह किं वृथा विलपामि ॥४॥
तन्वि खिन्न मसूयया हृदयं तवा कलयामि।
तन्नवेद्मि कुतो गतासि नतेन ते नुनयामि ॥५॥
दृश्यसे पुरतो गतागतमेव मे विदधासि।
किं पुरेव ससंभ्रमं परिरम्भणं न ददासि ॥६॥
क्षम्यता मपरं कदापि तवेदृशं न करोमि।
देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि ॥७॥

वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रवणेन।
कन्द बिल्व समुद्र सम्भव रोहिणी रमणेन ॥८॥

मोकों कहाँ गई तजि प्यारी।
सखिन समूह मध्य बैठ्यो लखि निजु अपमानु विचारी।
जा कर्तव में हों अपराधी भय सों रोकिन सक्यो विसारी।
महा मानिनी कहा सहेगी क्रोधानल चिनगारी ॥१॥
अवतिन बिनान धनजन भावे भवन प्रानवन सघन सतावे।
मूलगये पुनि डार-पातकी बात होइ बेकारी ॥२॥
लाल कमल दल अलि जो गाजे ध्याऊँ बंक भृकुटि मुखराजे।
हिये बिराजी कों जो भोगू तौ वन बिलप बृथारी ॥३॥
हे तन्वंगि जिही अनुमानूं ईर्षा दुखित चित्त तुव जानूं।
और आप अपनी जानत हों विनै सुनों सुकुमारी ॥४॥
सन्मुख इत-उत देत दिखाई मिलौ न क्यों पहिले की नांई।
छिमा करो अब न करूँ ऐसो रति पीड़ित लखि भारी॥५॥
कन्द बिल्व वासी जयदेवा करत रोहिनी जिनकी सेवा।
रामराय जह दूजी नारी कृष्णदेव महतारी (मो०)॥६॥

हृदि विसलताहारो नायं भुजङ्गमनायकः।
कुवलय दलश्रेणी कण्ठेन वा गरलद्युति ॥
मलयजरजो नेदं भस्म प्रियारहिते मयि।
प्रहर न हर भ्रान्त्याऽनङ्ग क्रुधाकिमुधावसि ॥१॥

हार मृडाल जि सर्प नहीं गल नील सरोज हलाहल नांई।
प्यारी बियोग की शान्ति के हेतु है चन्दन पंक न भस्म रमाई।
बैरु पुरानो निकारनि कों भ्रमसों तुम मोपै करी है चढ़ाई।
शंकर योगी न जानों हमें पर कृष्ण श्रीराधा वियोगी हूँ भाई॥१॥

पाणौ माकुरु चूत शायक ममुं मा चाप मारोपय
क्रीडा निर्जित विश्व मूर्छितजनाघातेन किंपौरुषम्।
तस्या एव मृगीदृशो मनसिज प्रेङ्खत्कटाक्षानिल
ज्वाला जर्जरितं मनागपि मनो नाद्यापि संधुक्षते॥२॥

खेल सों विश्वविजेता है काम न आमकी मंजरी वान चलाओ।
मूर्छित मारन में न वली तुम तासों दयाकर प्रान वचाओ।
राधिका चञ्चल नैन कटाच्छ की अग्नि शिखाके जरेकों जराओ।
चित्त न सुस्थ है मेरो सखे करो शीतल ताप न नेंकु वढ़ाओ॥२॥

भ्रू पल्लवो धनुरपाङ्ग तरङ्गितानि
वाणा गुणःश्रवण पालिरिति स्मरेण,
तस्या मनङ्गजय जङ्गम देवताया
मस्त्राणि निर्जितजगन्तिकिमर्पितानि॥३॥

हे रतिनाथ कहो जो न मेरो कछू अपराध प्रियाजी को जानों।
क्यों तुम शस्त्र दिये उनकों भृकुटी धनुवान कटाच्छ बखानों।
कानकी पोर वनी धनु डोर जो जोरसों विश्व-विजै हित वानों।
खेल हमारे वताय रहे बिन अस्त्रन वीर कोई पहिचानों॥३॥

भ्रूचापे निहितः कटाक्ष विशिखो निर्मातु मर्मव्यथां
श्यामात्मा कुटिलःकरोतु कवरीभारोपि मारोद्यमम्,
मोहं तावदयं च तन्त्रितनुतां विम्बाधरो रागवान्
सद्वृत्तस्तन मण्डलस्तव कथं प्राणैर्मम क्रीडति ॥४॥

वान सुभाव लगे दुखदेत कटाच्छ धनू भृकुटी पै नचाओ।
ऊपर भीतर कारे औ टेढे ये केशके पास हू काम जगाओ।
रागी तथा विषई जह मोह वढ़ामें विमाधर सोहू बढ़ाओ।
किन्तु सुजान कुचारस सान क्यों प्रान हमारे हरे ये बताओ ॥४॥

तानि स्पर्श सुखानि ते च तरलाः स्निग्धा दृशोर्विभ्रमा
स्तद्वक्त्राम्बुज सौरभं सचसुधास्यन्दी गिरां वक्रिमा
साविम्बाधर माधुरीति विषयासङ्गेपि मन्मानसं
तस्यां लग्न समाधि हंत विरह व्याधिः कथं वर्तते ॥५॥

कवित्त—

सुन्दरी के संग होंय वेही जो परम सुख
चञ्चल कटाच्छ मुख पंकज सुगन्ध है।
अमृत परिपूर्ण व्यंग वानी अधर लाल
माधुरी में रूप-रस स्पर्श और गन्ध है।
मेरो मन विषयन की ओर जोर लागतेहू।
प्रानप्यारी राधेजू के ध्यानमें अमंद है।

जोगी ध्यान वेदना न पावत समाधि बिचु।
मोकों बार-बार क्यों ये भारी दुख द्वन्द है ॥५॥

तिर्यक्कण्ठविलोल मौलितरलोत्तं सस्य वंशोच्चरद्
गीतिस्थान कृतावधान ललना लक्षैर्न संलक्षिता।
सम्मुग्धे मधुसूदनस्य मधुरे राधामुखेन्दौ मृदु
स्पन्दं कन्दलिताश्चिरं दधतु वःक्षेमं कटाक्षोर्मयः ॥६॥

इतिश्रीमदाचार्य गोस्वामी श्रीजयदेवप्रणीते तृतीयः सर्गः

बाजत बाँसुरी गान पदावलि चित्त लगे नहि गोपी निहारें,
सुन्दर राधिका श्रीमुखचन्द कों गुप्त सरूपसों भाव में धारें।
ग्रीवा कों टेढ़ी करेंते सुमोर के पिच्छ औ चंचल कुण्डल चारें,
कृष्ण कटाच्छ की पाँति सौभाँति सभी निजु भक्तनु मंगल सारें॥६॥

कविराज नृप महाराज श्रीजयदेव कविता रसभरी,
महिमा कहेगो कौन श्रीजगदीश की बानी खरी।
जिह सर्ग तीजो है गयो श्रीरामराय सुधा झरी,
श्रीमुग्ध मधुसूदन धरयो एहि नाम भर कैं माधुरी ॥७॥

इतिश्रीदार्शनिकसार्वभौम श्रीरामरायगोस्वामिप्रणीतायां
श्रीगीतगोविन्दप्रियायां श्रीमुग्धमधुसूदनो-
नाम तृतीयः सर्गः

चतुर्थः सर्गः

यमुना तीर वानीर निकुञ्जे मन्द मास्थितम्
प्राह प्रेम भरोद्भ्रान्तं माधवं राधिका सखी ॥१॥

उदासीनु बैठे भये कुंज कलिन्दी तीरु,
प्रेम वेग उद्विग्न मन माधौ महागम्भीरु।
ताही बेतस लतागृह आई अति अभिराम,
कहत राधिका की सखी सुनिये सुन्दर श्याम ॥१॥

(अष्टम प्रबन्धः कर्णाटक रागे एकताली तालेन)

निन्दति चन्दनमिन्दुकिरणमनु विन्दतिखेदमधीरम्
व्यालनिलयमिलनेनगरलमिव कलयति मलयशमीरम् ॥१॥
सा विरहे तव दीना।
माधव मनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयिलीना ॥
अविरल निपतित मदनशरादिव भवदवनाय विशालम्।
स्वहृदयमर्मणि वर्म करोति सजल नलिनीदल जालम् ॥२॥
कुसुम विशिख शरतल्पमनल्प विलासकलाकमनीयम्
व्रत मिव तव परिरंभ सुखाय करोति कुसुमशयनीयम् ॥३॥
वहति च चलित विलोचनजलधरमाननकमल मुदारम्।
विधुमिव विकट विधुन्तुददन्तदलन गलितामृतधारम् ॥४॥

विलिखति रहसि कुरङ्गमदेन भवन्त मसमशरभूतम् ।
प्रणमति मकर मधोविनिधाय करे च शरं नवचूतम् ॥५॥
प्रतिपद मिदमपि निगदतिमाधव तव चरणेपतिताहम् ।
त्वयिविमुखेमयि सपदि सुधानिधिरपि तनुतेतनुदाहम् ॥६॥
ध्यानलयेन पुनःपरिकल्प्य भवन्त मतीव दुरापम् ।
विलपतिहसति विषीदतिरोदितिचञ्चतिमुञ्चति तापम् ॥७॥
श्रीजयदेव भणितमिद मधिकं यदिमनसानटनीयम् ।
हरिविरहाकुलवल्लव युवति सखी वचनं पठनीयम् ॥८॥

हे माधव तव विरह किशोरी ।
मदन वान भय करन भावना मनहुं कृष्ण रसबोरी ॥ ध्रु० ॥
चन्दन की भाखत है निन्दा, शीतल किरन तेई विधि चन्दा ।
सर्प श्वास विष मिली मलय की पवन देत दुख घोरी ॥१॥
रतिपति के तीखे शर भयसों, चाहति लाग्यो तुम्हें हृदयसों ।
मर्म कवच सम कमल दलन कों जल भिजोई रख भोरी ॥२॥
आलिंगन सुख बहुविधि जोवत, काम नाम शर सिज्जा सोवत ।
व्रत कर रही महा जोगिन तनु विरह अगिनि नहिं थोरी ॥३॥
राहु दन्तसों दलित चन्द्रमा, राधामुख शशि विरह सान्द्रमा ।
सुधा धार जनु अश्रु झरतु हैं जिह दुख कठिनु कठोरी ॥४॥
मदन रूप तुव मृगमद चित्रा, आम मंजरी हाथ विचित्रा ।
व्याकुल है ध्वज की मकराकृति नीचे लिखि कर जोरी ॥५॥

इत उत भ्रमत कहति हे माधो, परी चरन तल ममहित साधो।
विमुख भये तब अमरत चन्दा जारत तनु बरजोरी ॥६॥

तुव मुनि दुर्लभ ध्यान जु धरिकें, मूरतिमान कल्पना करिकें।
हँसत विखाद भरी पुनि रोवत आलिंगन सुख गोरी ॥७॥

श्रीजयदेव काव्य रस चाहो, तौ जिह विरह सुधा अवगाहो।
व्याकुल राधा सखी वचन पढ़ि रामराय ब्रजखोरी ॥८॥

आवासो विपिनायते प्रियसखीमालापि जालायते
तापोपि श्वसितेन दावदहन ज्वाला कलापायते
सापि त्वद्विरहेण हन्त हरिणीरूपायते हा कथं
कन्दर्पोपि यमायते विरचयन् शार्दूलविक्रीडितम् ॥१॥

कवित्त—

आपके वियोग मनि मन्दिर विजन वन
प्यारी सखी जाल के समानु लगती रहै,
कन्दरप सिंह औरु जमके सादृश्य लगे
श्वासनु की गरमीसो दावागिन भकती रहै।

राधा भै हिरनी सो बचावै प्रान कौन रूप
ध्यान बीचु सन्मुख तुम्हीं को रखती रहै,
प्यारे मिलि लेहु जो भलाई कछु चाहो निजु
प्यारी प्रान त्यागेगी न जामें नेकु भीर है ॥१॥

(नवम प्रबन्ध देश रागेण एकताली तालेन गीयते)

स्तन विनि हितमपि हारमुदारं।
सा मनुते कृशतनुरिव भारम् ॥१॥
राधिका तव विरहे केशव ॥ ध्रु० ॥

सरस मसृण मपि मलयज पङ्कम्।
पश्यति विषमिव वपुषि सशङ्कम् ।२॥

श्वसित पवन मनुपम परिणाहम्।
मदन दहन मिव वहति सदाहम् ॥३॥

दिशि दिशि किरति सजलकण जालम्।
नयननलिनमिवविगलितनालम् ॥४॥

नयन विषय मपि किशलय तल्पम्।
कलयति विहितहुताश विकल्पम् ॥५॥

त्यजति न पाणि तलेन कपोलम्।
बाल शशिन मिव सायमलोलम् ॥६॥

हरिरिति हरिरिति जपति सकामम्।
विरह विहित मरणेव निकामम् ॥७॥

श्रीजयदेव भणित मिति गीतम्।
सुखयतु केशवपद मुपनीतम् ॥८॥

इत उत भ्रमत कहति हे माधो, परी चरन तल ममहित साधो।
विमुख भये तब अमरत चन्दा जारत तनु बरजोरी ॥६॥

तुव मुनि दुर्लभ ध्यान जु धरिकें, मूरतिमान कल्पना करिकें।
हँसत विखाद भरी पुनि रोवत आलिंगन सुख गोरी ॥७॥

श्रीजयदेव काव्य रस चाहो, तौ जिह विरह सुधा अवगाहो।
व्याकुल राधा सखी वचन पढ़ि रामराय व्रजखोरी ॥८॥

आवासो विपिनायते प्रियसखीमालापि जालायते
तापोपि श्वसितेन दावदहन ज्वाला कलापायते
सापि त्वद्विरहेण हन्त हरिणीरूपायते हा कथं
कन्दर्पोपि यमायते विरचयन् शार्दूलविक्रीडितम् ॥१॥

कवित्त—

आपके वियोग मनि मन्दिर विजन वन
प्यारी सखी जाल के समानु लगती रहै,
कन्दरप सिंह औरु जमके सादृश्य लगे
श्वासनु की गरमीसो दावागिन भकती रहै।

राधा भै हिरनी सो बचावै प्रान कौन रूप
ध्यान बीचु सन्मुख तुम्हीं को रखती रहै,
प्यारे मिलि लेहु जो भलाई कछु चाहो निजु
प्यारी प्रान त्यागेगी न जामें नेकु भीर है ॥१॥

(नवम प्रबन्ध देश रागेण एकताली तालेत गीयते)

स्तन विनि हितमपि हारमुदारं।
सा मनुते कृशतनुरिव भारम् ॥१॥
राधिका तव विरहे केशव ॥ ध्रु० ॥

सरस मसृण मपि मलयज पङ्कम्।
पश्यति विषमिव वपुषि सशङ्कम् ।२॥

श्वसित पवन मनुपम परिणाहम्।
मदन दहन मिव बहति सदाहम् ॥३॥

दिशि दिशि किरति सजलकण जालम्।
नयननलिनमिवविगलितनालम् ॥४॥

नयन विषय मपि किशलय तल्पम्।
कलयति विहितहुताश विकल्पम् ॥५॥

त्यजति न पाणि तलेन कपोलम्।
बाल शशिन मिव सायमलोलम् ॥६॥

हरिरिति हरिरिति जपति सकामम्।
विरह विहित मरणेव निकामम् ॥७॥

श्रीजयदेव भणित मिति गीतम्।
सुखयतु केशवपद मुपनीतम् ॥८॥

सुनहु असाध्य दशा सुकुमारी।
छीन शरीर वियोग तिहारे हीरहार उरजनु पर भारे।
सरस मलय चन्दन शीतलता विख समान तजी डारी ॥१॥
श्वास पवन कामानल धारे नाल बिना चखि कन्जु करारे।
आँसू बहत करत तुव आशा आवत नांहि बिहारी ॥२॥
लाल कमल दलु कोमल सिज्जा होत संदेह अंगार बिछैया।
करतलगोल कपोल बाल शशि राखि विचिन्तित भारी ॥३॥
अन्त समैं जेहिजपु तेहि पावै जह जिय जानि कृष्णहरि गावै।
जातनु नांहि जनम दूजेमें मोहिं मिलहिं गिरिधारी ॥४॥
कृष्ण पदाब्ज निवेदन कीनों सुखद भगत जनकों रसभीनों।
श्री जयदेव कवीश्वर करुना रामराय बलिहारी ॥५॥

सा रोमाश्चति सीत्करोति विलपत्युत्कम्पते ताम्यति
ध्यायत्युद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युद्याति मूर्च्छत्यपि।
एतावत्यतनुज्वरे वरतनु र्जीवेन्न किं ते रसात्
स्ववैंद्यप्रतिम प्रसीदसि यदि त्यक्तोन्यथा हस्तकः ॥१॥

स्वर्ग के बैद समान बिहारीजू रोगिनि राधा कौ हाल सुनाऊँ।
कामकौ ताप बढ्या है विलाप करे मुख शीशीकभूसुन पाऊँ।
कंपित गात भयो पुलकात भ्रमात है ध्यान गलानि बताऊँ।
नैनन मूंदिगिरै धरनी उठि मूर्छित होति हों हात उठाऊँ।
लच्छिन जेते त्रिदोस के हैं सबुही है दवाई में जानति नाऊँ।
बोलत नांहि संकेत करे सोहू थोरीसी बारमें दीखे मिटाऊँ।

राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलयः

श्रीव्रजधाम रावल ग्रामस्थ श्रीयमुना तीरवर्ति श्रीराधामाधवजी की
एकान्त निकुञ्जकेलि में विद्यमान रसिक सम्प्रदायाद्याचार्य
श्रीजयदेवमहाप्रभुः

आप पधारो करो उपचार हे काम रसेस जनाओ न काऊँ।
दीजिये दर्शन राधिकाजी वे ज्ञुसो रस केवल प्रान बचाऊँ।

स्मरातुरां दैवतवैद्यहृद्य त्वदङ्गसङ्गामृतमात्रसाध्याम् ।
विमुक्तवाधां कुरुसे न राधामुपेन्द्रवज्रादपि दारुणोसि ॥२॥

दो० अङ्ग आलिङ्गन साध्य जो जीवन राधाप्रान।
जोन जिवावो बैद तुम कठिन बज्र पाखान ॥२॥

कन्दर्पज्वर संज्वरातुरतनोराश्चर्यमस्याश्चिरं
चेतश्चन्दनचन्द्रमः कमलिनी चिन्तासु संताम्यति ।
किन्तु क्षान्तिवशेन शीतलतनुं त्वामेवमेकं प्रियं
ध्यायन्ती रहसिस्थिता कथमपि क्षीणाक्षणंप्राणिति ॥३॥

दो० रति ज्वर चन्दन-चन्द्रमा कमलिन ध्यान दुखात।
प्रेम अलौकिक आस तव सुमिरन प्रान बचात ॥३॥

क्षणमपि विरहःपुरानसेहेनयननिमीलन खिन्नयाययाते ।
श्वसितिकथमसौरसालशाखांचिरविरहेणविलोक्य पुष्पिताग्राम्

दो० कलन परत पलु पलक लगि बिनु देखें मुखचन्द।
लखि बसन्त ऋतु मंजुरी पिया विरह दुखदुन्द ॥४॥

वृष्टिव्याकुलगोकुलावनरसादुद्धृत्य गोवर्द्धनं
विभ्रद्वल्लभसुन्दरीभिरधिकानन्दाच्चिरं चुम्बितः।

दर्पेणेव तदर्पिताधर तटासिंदूरमुद्राङ्कितो
बाहुर्गोपतनोस्तनोतु भवतां श्रेयांसि कंसद्विषः ॥५॥

इतिश्रीगीतगोविन्दे स्निग्धमाधवोनाम चतुर्थः सर्गः

सबैया—

वर्षा सों व्याकुल गोकुल राखिवे श्री गिरिराज धर्यो गिरिधारी।
हाथनु चुम्बत गोपी सबै तिनु होठकी लाली भली जय कारी।
कंस विधंस प्रशंसित श्री ब्रजराज किशोर विपत्ति निवारी।
रच्छा करें सबु भक्तन की भव भीतिके भंजन कुञ्ज विहारी।
श्री देव-देव जयदेव कवीश गायो।
गोबिन्द गीत रस सागर सों बहायो।
श्री रामराय कछु भाव कनैक धायो।
सुस्निग्ध माधव चतुर्थ जु सर्ग गायो ॥७॥

*इतिश्रीजयदेवभगवद्वंशोद्भव श्रीरामरायगोस्वामि-
प्रणीत श्रीगीतगोविन्दप्रियायां सुस्निग्धमाधवो
नाम चतुर्थः सर्गः*

पंचमः सर्गः

**अहमिह निवसामि याहिराधामनुनय मद्वचनेनचानयेथाः
इतिमधुरिपुणासखीनियुक्तास्वयमिदमेत्यपुनर्जगादराधाम् ॥१॥**

हे सखी तुम जाइ प्यारी सों कहो समुझाय कें।
मैं रहूँ जा कुंज में लावहु तिन्हें पधराय कें॥
जा विधि विहारी की पठाई दूतिका नें आय कें।
श्रीकृष्ण के सन्देश राधे सों कहे समुझाय कें॥१॥

(दशम प्रबन्धो बराडी रागेण रूपक ताले गीयते)

वहति मलय समीरे मदन मुपनिधाय
स्फुटति कुसुमनिकरे विरहि हृदयदलनाय ॥१॥
तव विरहे वनमाली सखि सीदति (ध्रु०)
दहति शिशिर मयूखे मरणमनु करोति।
पतति मदन विशिखे विलपति विकलतरोति॥२॥
ध्वनित मधुपसमूहे श्रवणमपि दधाति।
मनसि वलित विरहे निशि रुजमुपयाति ॥३॥
वसति विपिन विताने त्यजति ललितधाम।
लुठति धरणिशयने बहुविलपति तवनाम॥४॥
रणति पिकसमुदाये प्रतिदिशमनुयाति।
हसति मनुजनिचये विरहमपलपतिनेति ॥५॥
स्फुरति कलरवरावे स्मरतिमणितमेव।
तव रतिसुख विभवे बहुगणयति सुगुणमतीव॥६॥

त्वदभिध शुभदमासं वदति नरि शृणोति ।
तमति जपति सरसं परयुवतिषु न रतिमुपैति ॥७॥
भणित कविजयदेवे विरह विलसितेन ।
मनसि रभस विभवे हरिरुदयतु सुकृतेन ॥८॥

श्री राधे तव वियोग वनमाली ।
काम सहाय बनाय मलय की वायु बहति दुखशाली ॥१॥
विरही हिये बिदारनु कारन कुसुमकली किलकारी ।
पीरा मरन समान दै रही चन्द किरन चिनगारी ॥२॥
भ्रमरगुञ्ज नहि सुनत विरह में निशतनु दशा बिसारी ।
गहवर वन में बास करत हरि धरनि सैन गिरधारी ॥३॥
राधे राधे बोलत विलपत सुन जीवन धन प्यारी ।
बिरहवान बरसत ऊपरसों विकल विलाप विहारी ॥४॥
कोकिल कूक सुनत चहुँदिशिमें जानत तब मुखवानी ।
हँसत लोग जिह दशा देखि तब पुनि लाजत मनमानी ॥५॥
बोध होत रति सबद सुनत सुन्दर पच्छिन की भासा ।
सुरतानन्द होत अनुभव तब करत तासु अभिलासा ॥६॥
राधे राधे नाम कोऊ तिनु सन्मुख सहज बखाने ।
तबु सबुसों तजि प्रीति पियारो सुनत ताहि दे काने ॥७॥
श्रीजयदेव कवीश्वर हरि के विरह विलास उचारे ।
रामराय जा पुण्य तिन्हीं के प्रकट होंय पिय प्यारे ॥८॥

त्वदभिध शुभदमासं वदति नरि शृणोति।
तमति जपति सरसं परयुवतिषु न रतिमुपैति ॥७॥
भणित कविजयदेवे विरह विलसितेन।
मनसि रभस विभवे हरिरुदयतु सुकृतेन ॥८॥

श्री राधे तव वियोग वनमाली।
काम सहाय बनाय मलय की वायु बहति दुखशाली ॥१॥
विरही हिये बिदारनु कारन कुसुमकली किलकारी।
पीरा मरन समान दै रही चन्द किरन चिनगारी ॥२॥
भ्रमरगुञ्ज नहि सुनत विरह में निशतनु दशा बिसारी।
गहवर वन में वास करत हरि धरनि सैन गिरधारी ॥३॥
राधे राधे बोलत विलपत सुन जीवन धन प्यारी।
विरहवान बरसत ऊपरसों विकल विलाप विहारी ॥४॥
कोकिल कूक सुनत चहुँदिशिमें जानत तब मुखवानी।
हँसत लोग जिह दशा देखि तव पुनि लाजत मनमानी ॥५॥
बोध होत रति सबद सुनत सुन्दर पच्छिन की भासा।
सुरतानन्द होत अनुभव तव करत तासु अभिलासा ॥६॥
राधे राधे नाम कोऊ तिनु सन्मुख सहज वखाने।
तबु सवुसों तजि प्रीति पियारो सुनत ताहि दे काने ॥७॥
श्रीजयदेव कवीश्वर हरि के विरह विलास उचारे।
रामराय जा पुण्य तिन्हीं के प्रकट होंय पिय प्यारे ॥८॥

पूर्वं यत्र समं त्वया रतिपतेरासादिता सिद्धयः
स्तस्मिन्नेव निकुञ्ज मन्मथ महातीर्थे पुनर्माधवः ।
ध्यायंस्त्वामनिशं जपन्नपि तवैवालाप मन्त्रावलिं
भूयस्त्वत्कुचकुम्भ निर्भर परीरम्भामृतं वाञ्छति ॥१॥

सवैया—
जा नवकुंज चलीं पहिलें रति संगर सिद्धि मिली ही सुखारी
ता रति तीरथराज विराज निशादिन नाम जपें बनवारी ।
चाहतु कंचन कुम्भ कुचा परिरंभन रूप सुधा रसधारी
ज्यों मुनि ईश्वर ध्यान धरें अनिमादिक आठकी चाह विचारी ॥१॥

(एकादश प्रबन्ध : केदार रागेण एकताली ताले गीयते)

रति सुखसारे गतमभिसारे मदन मनोहर वेशम् ।
न कुरु नितम्बिनि गमन विलम्बनमनुसर तं हृदयेशम् ॥१॥
धीर समीरे यमुनातीरे बसति वने बनमाली ।
गोपी पीनपयोधर मर्दन चञ्चल कर युग शाली ॥२॥
नाम समेतं कृत संकेतं वादयते मृदु वेणुम् ।
बहु मनुते तनुते तनु संगत पवन चलितमपि रेणुम् ॥३॥
पततिपतत्रे विचलति पत्रे शंकित भवदु पयानम् ।
रचयति शयनं सचकित नयनं पश्यति तव पन्थानम् ॥४॥

मुखरमधीरं त्यज मञ्जीरं रिपुमिव केलि सुलोलम् ।
चलसखि कुञ्जं सतिमिरपुञ्जं शीलय नीलनिचोलम् ।।५।।
उरसि मुरारे रुपहित हारे घन इव तरलबलाके ।
तडिदिव पीते रति विपरीते राजसि सुकृत विपाके ।।६।।
विगलित वसनं परिहृत रसनं घटय जघनमपिधानम् ।
किशलय शयने पङ्कज नयने निधिमिव हर्षनिधानम् ।।७।।
हरिरभिमानी रजनि रिदानी मियमपि याति विरामम् ।
कुरु मम वचनं सत्वर रचनं पूरय मधुरिपु कामम् ।।८।।
श्रीजयदेवे कृत हरिसेवे भणति परम रमणीयम् ।
प्रमुदित हृदयं हरिमति सदयं नमत सुकृत कमनीयम् ।।९।।

चलहु किन मानिनि जमुना तीर ।
सुनहु नितम्बिनि बिलम न कीजै बिलसत धीर समीर ।।
मदन मनोहर वेश बिहारी, प्रानुनाथ तुव श्री गिरधारी ।
गोपी पुष्ट कुचन कों मीड़त दोनों हाथ अधीर ।।१।।
राधे नाम जपत मुरली में, मधुर-मधुर मनहर सुर धीमें ।
तुव पद पंकज धूरि पवनु संग पाइ होत बेपीर ।।२।।
पंछी उड़त तिन मद उत्कटसों, पातनु की खरखर आहटसों ।
जानि आगमनु सैन समारत कोमल कुञ्ज कुटीर ।।३।।

करत सबद नुपूर तजि दीजै, शत्रु समान न इनको छीजै।
अँधियारी कुञ्जन में चलिये धारि नील नव चीर ॥३॥

मेघाडम्बर में बगपांती, हीर हार ता विधि हरि छाती।
रति विपरीत बनहु विज्जुत सम श्रीगौरांग शरीर ॥५॥

दल सिज्जा ऊपर हरि संगी, बसन करधनी तजि नवरंगी।
जघनुजघनु कटितट मिलिभेटौ पियौ रसासबछीर ॥६॥

कृष्णचन्द्र भारी अभिमानीं, रुष्ट होंइ कछु देरी जानी।
बीते रात न हाथ परे कछु मदनु मनोरथ बीर ॥७॥

श्रीराधामाधव सेवा फल, भई दया मो ऊपरि उज्जल।
श्रीजयदेव भनित अति सुन्दर गायौ गीत गंभीर ॥८॥

परम प्रसन्न प्राणपति लीला, पुण्य किये पावत नहि हीला।
राजराय भगवान सखी हित गावत धारत धीर ॥९॥

विकिरति मुहुः श्वासनाशाः पुरोमुहुरीक्ष्यते
प्रविशतिमुहुः कुञ्जं गुञ्जन् मुहुर्बहुताम्यति।
रचयति मुहुः शय्यां पर्याकुलं मुहुरीक्षते
मदनकदनक्लान्तः कान्ते प्रियस्तव वर्तते ॥१॥

काम की पीड़ासों पीड़ित माधव श्वास लिये दिश देश निहारें,
कुञ्जसों बाहिर आवत जात सुहोंठन में कछु बात उचारें।
दुःखित है पुनि आश करैं पुनि भीतरु है पर्जंक समारें,
व्याकुलता की कहा कहिये जिह देखत राधिका वेगि पधारें ॥१॥

त्वद्वाक्येन समं समग्रमधुना तिग्माशुरस्तंगता
गोविन्दस्य मनोरथेन च समं प्राप्तंनभःसान्द्रताम्।
कोकानां करुणस्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना
तन्मुग्धे विफलं विलम्बनमसौ रम्योभिसारक्षणः ॥२॥

राधे जू मानुभरे वचनामृत पाइ दिवाकर अस्त भयो है।
गोविन्द जू के मनोरथ पूरन हेतु चलौजु अभी समयौ है।
जे चकई चकबा के समान बिनैभर वाक्य को सार गयौ है,
होइ मिलापु मिटैं सब तापु जिही हितु में अभिसार कह्यो है ॥२॥

आश्लेषादनु चुम्बनादनु नखोल्लेखादनु स्वान्तजात्
प्रोद्बोधादनु सम्भ्रमादनु रतारम्भादनु प्रीतयोः।
अन्यार्थं गतयो भ्र'मान्मिलितयोः सम्भाषणै र्जानतो
र्दम्पत्यो र्निशि कोन कोन तमसि व्रीडाविमिश्रोरसः ॥३॥

जात संकेत निकेत के बीचु अन्धेरे में एक अन्धेर नयो है,
चाहति जाइ न सोतो मिल्यो भ्रम अन्यसों अन्य मिलाप भयो है
प्रेम आलिंगन चुम्बन रेख नखच्छत भोग विलास छयो है,
बोलत बोध पिया पियु को रस कौनसो लाजु ने नांइ दयोहै ॥३॥

सभय चकितं विन्यस्यन्तीं दृशं तिमिरेपथि
प्रतितरु मुहुःस्थित्वा मन्दं पदानि वितन्वतीम्।
कथमपि रहः प्राप्तामंगैरनङ्ग तरङ्गिभिः
सुमुखि सुभगः पश्यन् सत्वामुपैतु कृतार्थताम् ॥४॥

राह अन्धेरे डरी कर चंचल नैनु निहारति वृक्ष के नीचे,
ठेरत जात चले रतिनाइक अंगु में व्यापि रही रस सींचे।
देखत तोइ संकेत निकेत सने बडुभागु सुहागु की कींचे,
देरि करौ न धरौ पगु वेगि निहारें पिया पिय रंग उलींचे ॥४॥

राधामुग्ध मुखारबिन्द मधुपस्त्रैलोक्य मौलिस्थली
नेपथ्योचित नीलरत्नमवनी भारावतार क्षमः।
स्वच्छन्दं व्रजसुन्दरी जनमनस्तोषप्रदोषश्चिरं
कंसध्वंसनधूमकेतुरवतुत्वां देवकीनन्दनः ॥५॥

इतिश्रीगीतगोविन्दे साकाङ्क्षपुण्डरीकाक्षोनाम पञ्चमः सर्गः

सवैया—

राधिका मुग्ध मुखाम्बुज के अधरामृत पानु भये भ्रमरें,
तीनहुँ लोक के मौलि विन्दावन वेश सो नीलमनी की तरें।
भूमि के भार उतारन दच्छ व्रजाङ्गना मोद प्रदोख करें,
कस विधंस कों पुच्छल तारे श्रीदेवकीनन्दन रच्छा करें ॥५॥

दोहा—

कवि नृप श्रीजयदेव के, बचन महारस सिन्धु।
रामराय तिनकी कृपा, तृपित भयो इक बिन्दु ॥१॥
अभिसारक वरनन जु, साकांच्छ पुंडरीकाच्छ।
सरग पाँचमों पूरनो, श्रीहरि कृपा कटाच्छ ॥२॥

इतिश्रीगीतगोविन्दप्रियायां पंचमः सर्गः

षष्ठः सर्गः

अथ तां गन्तु मशक्तां चिरमनुरक्तां लतागृहे दृष्ट्वा
तच्चरितं गोविन्दे मनसिजमन्दे सखी प्राह ॥१॥

दो०—

पंगुभई अनुराग बस चलन सकति अर दास।
श्रीराधा कौ चरित सखि कह्यौ कृष्ण पद पास।

पश्यति दिशि दिशि रहसि भवन्तम्।
त्वदधर मधुर मधूनि पिबन्तम् ॥१॥

(द्वादश प्रबन्धो गुर्जरी रागेण रूपक ताले)

नाथ हरे जयनाथ हरे, सीदति राधावास गृहे ॥ध्रुव॥

त्वदभिसरण रभसेन वलन्ती
पतति पदानि कियन्ति चलन्ती ॥२॥

विहित विशद बिशकिसलय वलया
जीवति परमिह तव रति कलया ॥३॥

मुहुरवलोकित मण्डन लीला
मधुरिपु रहमिति भावन शीला ॥४॥

त्वरित मुपैति न कथमभिसारम्
हरिरिति वदति सखी मनु वारम् ॥५॥

श्लिष्यति चुम्बति जलधर कल्पम्

हरिरुपगत इति तिमिर मनल्पम् ॥६॥

भवति विलम्बिनि विगलित लज्जा

विलपति रोदिति वासक सज्जा ॥७॥

श्रीजयदेव कवेरिद मुदितम्

रसिकजनं तनुता मति मुदितम् ॥८॥

हे हरि जय-जय होइ तिहारी।

निजु अधरामृत पीवति देखति तुमहिं राधिका प्यारी ॥१॥

चहुंदिशि देखि निकट तुव आवति गिरि-गिरि परत दुखारी।

दुर्बल बिरह वेदना सों भई प्यारे तेरी प्यारी ॥२॥

कमल नालु अरु दलके कंकन धारिरहीजु विचारी।

केवल रतिरस रंगु लालसा आशा जीवनु धारी ॥३॥

निजु आभूषन के विलास लखि बोलति बारं-बारी।

तुव समानु रचि वेख कहति है मैं हूँ कुञ्ज विहारी ॥४॥

क्यों नांही संकेत पधारत मेरे मनके हारी।

अन्धकारु कों तुम्हें समझि आलिंगनु चुंबनु धारी ॥५॥

बासक सज्जा तुमहिं न देखति बिलपति निलजु पुकारी।

श्री जयदेव कवीश्वर बाँनी रसिकानन्द प्रचारी ॥६॥

विपुल पुलक पालिः स्फीत सीत्कारमन्त

र्जनित जड़िम काकु व्याकुलं व्याहरन्ती।

तव कितव विधायामन्द कन्दर्प चिन्तां
रस जलधि निग्ना ध्यानउग्ना मृगाक्षी ॥१॥

हिये कामु चिन्ता सों व्याकुल ध्यान मगन भई भारी।
जानति अंगु लग्यो मम प्यारो रोमांचित सुखुकारी।
तेही समें अधर चुम्बन अरु नखछत मनुमें धारी।
शीशी करत भई जड़ विहवल डूबी रस निधि बारी ॥१॥

अङ्गेष्वाभरणं करोति वहुश : पत्रेपि संचारिणि
प्राप्तंत्वां परिशङ्कते वितनुते शय्यांचिरंध्यायति।
इत्याकल्प विकल्प तल्प रचना संकल्प लीलशत।
व्यासक्तापि विनात्वया वरतनुर्नैषा निशांनेष्यति ॥२॥

पत्तनु की खरखर सुनि राधा समुझि आपुकों आयो।
कर पदु धरि आभूखन सुन्दर पौहपनु सैनु सजायो।
करि अनेकु संकल्प विकल्पहि कियो मतो मनु भायो।
रातिगये जीवे नहि जीवे सो न समझि में आयो ॥२॥

किं विश्राम्यसि कृष्णभोगिभवने भाण्डीर भूमिरुहि।
भ्रातर्यासि न दृष्टिगोचरमितः सानन्द नन्दास्पदम्।
राधाया वचनं तदध्वगमुखान्नन्दान्तिके गोपतो
गोविन्दस्य जयन्ति सायमतिथि प्राशस्त्य गर्भागिरः ॥३॥

इतिश्रीगीतगोविन्दे सोत्कण्ठवैकुण्ठोनामः षष्ठः सर्गः

सुनहु पथिक भाण्डीरभूमि में सर्प रहतु इक कारौ।
जासों श्री नन्दालय सुन्दर तामें आपु पधारौ॥
जानि गये गोपीजन वल्लभु ताछिनि वचनु उचारौ।
धन्यधन्य महाराजु आपु इहाँ सुखसों समय निकारौ॥३॥

दोहा—

सोतकंठ वैकुंठ जह सर्ग भयो भरपूर।
रामराय जयदेव प्रभु वानी आनंदमूर॥४॥

इतिश्रीजगदीशावतार श्रीजयदेवगोस्वामिप्रभुवंशोत्पन्नपरमहंस राजराजेश्वर श्रीरामरायगोस्वामिप्रणीतायां श्रीगीतगोविन्दप्रियायां षष्ठः सर्गः

(अधुना चन्द्रोदव्याजेन राधाया विरह व्यथाधिक्यमाह)

सप्तमः सर्गः

अत्रान्तरे च कुलटा कुलवर्त्मपात
सञ्जात पातक इव स्फुटलाञ्छन श्रीः
वृन्दावनान्तर मदीपयदंशुजालै-
दिक्सुन्दरी वदनचन्दनविन्दुरिन्दुः॥१॥

इच्छानुसारि करें अभिसारि जो नारि तिन्ही के निवारनिको।
शाप लग्यो सो प्रतच्छ जग्यो तनु अंकु कलंकु निशातनि को॥
पूर्वदिशा रमनी मुखु पंकजु सोहति बिन्दु सुचन्दनि कौ।
अंसु समूह प्रकाशु कियौ अरुनद्युति चन्द विन्दावनि कौ॥१॥

(त्रयोदश प्रबन्धो गौड मालव रागेण प्रतिमठ ताले गीयते)

प्रशरति शशधरविम्बे विहितविलम्बे च माधवे विधुरा
विरचित विविधविलापं सापरितापं चकारोच्चैः ॥१॥

कथित समयेपि हरि रहह न ययौ वनम्
मम विफल मेतदनुरूप मपि यौवनम्
यामि हे कमिह शरणं सखीजन वचनवंचिता (ध्रु०)
यदनुगमनाय निशि गहनमपि शीलितम्
तेन ममहृदय मिदमसमशर कीलितम् ॥२॥
मम मरण मेव वरमति वितथकेतना
किमिति विषहामि विरहानलमचेतना ॥३॥
मामहह विधुरयति मधुर मधुयामिनी
कापिहरिमनुभवति कृतसुकृतकामिनी ॥४॥
अहह कलयामि वलयादि मणिभूषणम्
हरि विरह दहन वहनेन वहु दूषणम् ॥५॥
कुसुमसुकुमार तनुमतनु शर लीलया
स्रगपिहृदिहन्ति मामतिविशम शीलया ॥६॥
अहमिहनिवसामि न गणित वनवेतसा
स्मरति मधुसूदनो मामपि न चेतसा ॥७॥

हरिचरण शरण जयदेव कवि भारती
वसतुहृदि युवतिरिव कोमल कलावती ॥८॥

दोहा—

चन्द छटा ऊपर छई बिलम ब्रजेश मिलापु।
तुव अनुरागु वियोगिनी राधाकरति विलापु ॥

रे मन वनु न मिले बनुमाली
अचरजु खेदु जिही मम जोवनु जात विफल दुखु घाली।
आये मोहन कहि कहि मोकों करत वंचना आली।
अब विश्वासु न काहू कौ मोहि मरूँ डूबि जलि चाली ॥१॥
जा पिय हेतु अंधेरी निशि में बसी सघनु वनु भारी।
लगे कामु के गाढ वानु हिय तिनु मोहि करी दुखारी ॥२॥
वोधशून भई विरह दवानलु जारति जरी भई कों।
जिह तनु जाउ भलें सुखु मोकों आन न भावति जी कों ॥३॥
दुख की बात वसन्त रात पिय बिनु विहालि निकरे हैं।
पुन्नशालिनी गोपवधू कोउ लै आनन्दु करे हैं ॥४॥
हाइ हाइ मनि कंकनु भूखनु दूखनु सम है मोकों।
महा कठिनु विरहानलु तापित अबु हरि कहाँ विलोकों ॥५॥
कामदेव शर कुसुम माल गल बानु समानु लगे हैं।
काम उदीपक पुहप अंगु तनु तिनसों मदनु जगे हैं ॥६॥
बेतस वनु की लता पता गृह कियो सघनु वन वासा।
वे पिय याद न करें मोहि अबु दूर आगमनु आसा ॥७॥

सुमधुर कल संगीत कलामय अद्भुत नव रसु रासी।
श्री जयदेव महाप्रभु वानी भगति सुधा निधि खासी ॥८॥
रसिकु हिये सोलह सिंगार जुत बसति नाइका जैसे।
रामराय प्रभु के मनुमंदिर कलावती जू तैसे ॥६॥

तत्किंकामपि कामिनीमभिसृतः किंवा कला केलिभिः
बद्धोवन्धुभिरन्धकारिणि वनोपान्ते किमु भ्राम्यति
कान्तःक्लान्तमना मनागपि पथि प्रस्थातु मेवाक्षमः
संकेतीकृतमञ्जु वञ्जुललता कुञ्जेपि यन्नागतः ॥१॥

केलिकलाकुल कामिनि कोऊ कलंकिनि कृष्ण किशोरु हमारे।
राखे नहीं तो रहे निजु बन्धुन हासु विलासु में नन्ददुलारे॥
या घनघोरु निशा पथिभूलि रहे मोहि खोजु वियोगदुखारे।
मंजुल वंजुल कुंज संकेत बताइ सखी पुनि क्यों न पधारे ॥१॥

अथागतां माधव मन्तरेण
सखीमियं वीक्ष्यविषादमूकाम्
विशंकमाना रमितं कयापि
जनार्दनं दृष्टवदेत दाह ॥२॥

माधव लेनुगई कोउ दूती बिनाहीं लियें पुनि लौट कें आई।
दुःखित मौनु अकेली लखी तव पूछति प्यारीजु रोसभराई॥
का कोऊ गोपवधू में रमे मोहि बाति न भावति ऐसी पराई।
नित्य लखों नहि शंक कछू वे तो ढीठ भये करि पीठ रुखाई ॥२॥

श्रीधामवृन्दावनस्थ श्रीराधामाधव सेवाधिकारि

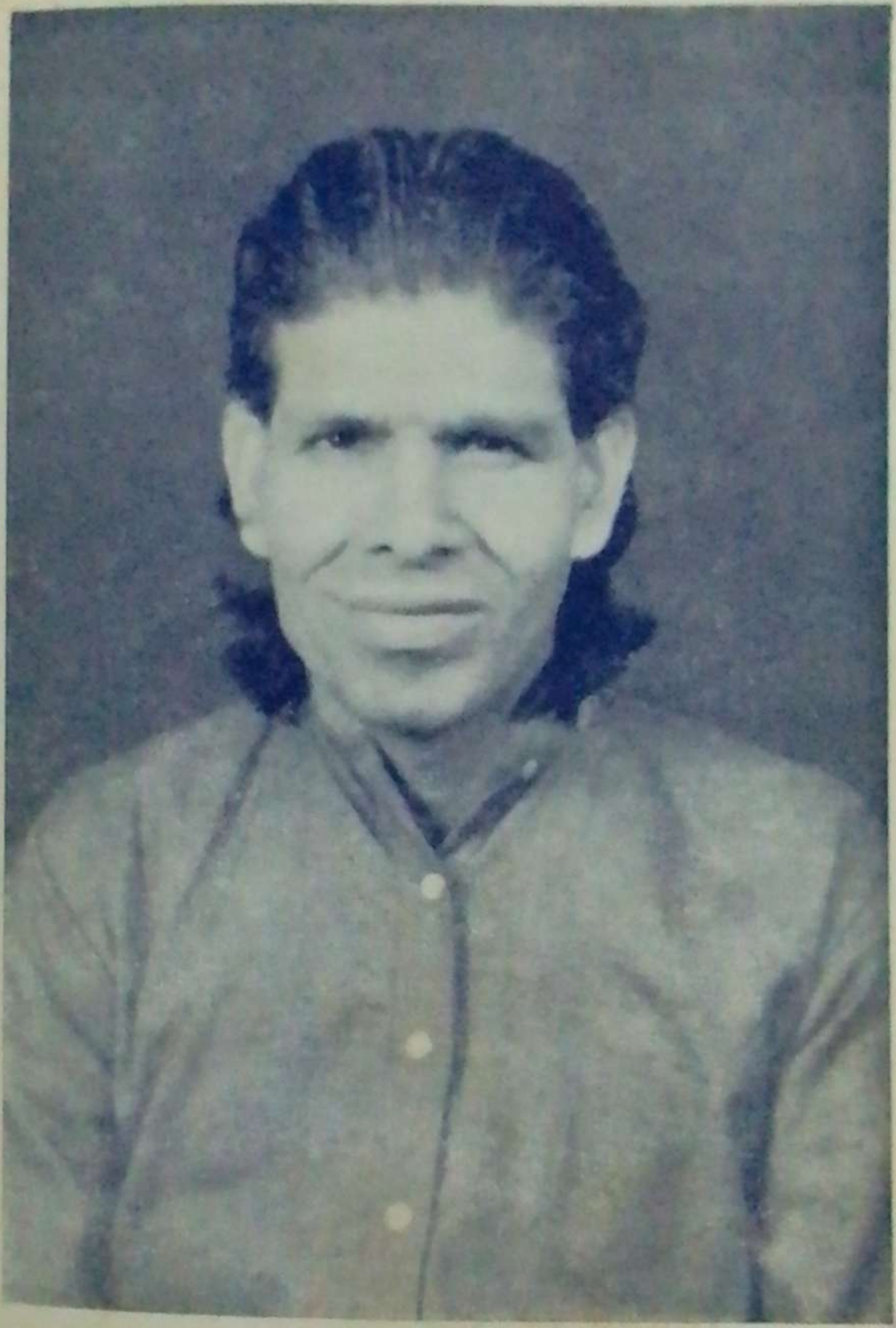

श्रीमद् गीतगोविन्दकर्तृ भगवच्छ्रीजयदेवमहाप्रभुवंशोद्भव भागवतभूषण-

आचार्य श्रीयमुनावल्लभगोस्वामी शास्त्रीजी महाराज

श्रीजयदेवपीठ श्रीवृन्दावनधाम

जन्म सं० १९६० मार्ग शु० १३ मंगलवार

श्रीधामवृन्दावनस्थ श्रीराधामाधव सेवाधिकारि

श्रीमद् गीतगोविन्दकर्तृ भगवच्छ्रीजयदेवमहाप्रभुवंशोद्भव भागवतभूषण-

आचार्य श्रीयमुनावल्लभगोस्वामी शास्त्रीजी महाराज

श्रीजयदेवपीठ श्रीवृन्दावनधाम

जन्म सं० १९६० मार्ग शु० १३ मंगलवार

(अथ चतुर्दश प्रबन्धो वसन्त रागेण एकताले गीयते)

स्मर समरोचित विरचित वेशा
गलित कुसुमदल विलुलित केशा ॥१॥

कापि चपला मधुरिपुणा
विलसित युवति रधिकगुणा

हरि परिरम्भण वलित विकारा
कुचकलशोपरि तरलित हारा ॥२॥

विकच दलक ललितानन चन्द्रा
तदधर पान रभस कृत तन्द्रा ॥३॥

चञ्चल कुण्डल दलित कपोला
मुखरित रसन जघन गति लोला ॥४॥

दयित विलोकित लज्जित हसिता
बहु विध कूजित रतिरस रसिता ॥५॥

विपुल पुलक पृथु वेपथुभङ्गा
श्वसित निमीलित विकसदनङ्गा ॥६॥

श्रमजल कणभर सुभग शरीरा
परिपतितोरसि रति रणधीरा ॥७॥

श्रीजयदेव भणित हरिरमितम्
कलिकलुषं जनयतु परिशमितम् ॥८॥

हे सखि सुनु मधुसूदन बात।
सौतिनु संगु विलासु करति हैं मो संग कीनी घात॥
मोसों अधिक सरसु गुनवारी सुरति समरु आभूखन धारी।
रति विपरीत कुसुम झरि ढीली वैनी चपला गात॥२॥
हरि आलिंगनि कामु विकारा, रतिविपरीति हलति कुचुहारा।
चंचलु मुखुशशि आँचलु अलकै अधर सुधा अलसात॥३॥
कुंडलु चलनि कपोलु दलाये हलति किंकनी नितम चलाये।
हरि कटाच्छ लज्जित रति कूजित, बहुविधि रसु मुसकात॥४॥
रति आनन्दु पुलकि कम्पित तनु गद्गद् सुर गाढ़े आलिङ्गनु।
कामु भावु प्रफुलित मृगलोचनि मीचति हिये सिहात॥५॥
सुरतु परिश्रम स्वेदबिन्दु तनु कियें कृष्णवक्षस्थल आसनु।
रति रनुधीर धरें प्यारे मिलि संभोगिनि सुखुपात॥६॥
कृष्णचन्द संभोगु सुशीला श्रीजयदेव कही जिह लीला।
श्रोता गाइक कलि कल्मस हरु रामराय जिये भात॥७॥

विरह पाण्डु मुरारि मुखाम्बुज।
द्युतिरयं तिरयन्नपि वेदनाम्।
विधुरतीव तनोति मनोभुवः।
सुहृदये हृदये मदनव्यथाम् ॥१॥

हे सखि मेरे वियोग में पीतम पीतभये तिनकी छवि धारी।
श्री मुख पंकजु की समता जिह कामको मित्र करें सुखकारी।
मंडल चन्दको राजतु हेतु आनन्द सबै ब्रजमण्डल भारी।
तौहू न मोहि सुहात जा कामुकी पीड़ा सों पीड़ित चित्त विथारी ॥२॥

(पंचदश प्रवन्धो गुर्जरी रागेण एकताले गीयते)

समुदित मदने रमणीवदने चुम्बन वलिताधरे।
मृगमद तिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे।
रमते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारिरधुना। (ध्रु०)
घनचय रुचिरे रचयति चिकुरे तरलित तरुणानने।
कुरवक कुसुमं चपला सुषमं रतिपति मृग कानने ॥२॥
घटयति सुघने कुचयुगगगने मृगमद रुचि रुसिते।
मणिसरममलं तारक पटलं नखपद शशि भूषिते ॥३॥
जितविसशकले मृदुभुजयुगले करतल नलिनी दले।
मरकत वलयं मधुकर निचयं वितरति हिम शीतले ॥४॥
रतिगृह जघने विपुलापघने मनसिज कनकासने।
मणिमय रसनं तोरणहसनं विकिरति कृतवासने ॥५॥
चरण किसलये कमला निलये नखमणिगण पूजिते।
वहिरपवरणं यावक भरणं जनयति हृदियोजिते ॥६॥

रमयति सुदृशं कामपि सदृशं खलहलधर सोदरे।
किमफल मवसं चिरमिह विरसं वदसखि विटपोदरे॥७॥
इहरसभणने कृतहरिगुणने मधुरिपु पदसेवके।
कलियुग चरितं नवसतु दुरितं कविनृप जयदेवके॥८॥

वा वनु मोहि चलहु लै प्यारी।
कालिन्दी तट श्री बंशीवट रमन करत जहाँ कृष्ण मुरारी।
चुम्बनु सों सकुचित विम्बाधरु मुखपर मृगमद तिलक लिखति कर।
मनहु चन्दमें हरिनु सोंति तनु कामोद्दीपनु कारी॥१॥
मेघमाल जिमि सोहत सुन्दर जुवजन मन चंचलता आकर।
कामु हरिन गृह वनिता कचरुचि गूंथति कुरव सम्हारी॥२॥
कस्तूरी लेपनु अकाश से नखछतु मानहु शशि प्रकाश-से।
तारागनु सम हीरहारु है कुच कठोर सिंगारी॥३॥
कमल नालु सों अति सै कोमल, नव पाटल पौहपनु से करतल।
हिमु शीतल करि मधुकर मरकत मनि कँकन दिये डारी॥४॥
कामदेवजू कौ कनकासन, रति निवास सारी दै सुवसन।
बन्दनवार समान करधनी सघन जघनु मतिवारी॥५॥
रमानिवास सदृश नख मनिगन सोहति सौतनु के युग चरनन।
हिय लगाइ जावक निजु हाथनि देति कृष्ण गिरिधारी॥६॥
हलधरजू के लघुवर भैया कौन सुनयनी सँगुन रमैया।
रस सिंगार बिना किमि बैठी आसा करहु तिहारी॥७॥

जिह सिंगार कृष्ण गुनगाइक, श्री जयदेव देव प्रभुनाइक।
रामराय हिय बसैंन कलिजुग पापु तापु संसारी ॥८॥

नायातः सखि निर्दयो यदि शठस्त्वं दूति किं दूयसे।
स्वच्छन्दं बहुवल्लभः स रमते किं तत्र ते दूषणम्।
पश्याद्यप्रियसङ्गमाय दयितस्याकृष्यमाणं गुणै।
रुत्कण्ठार्तिभरादिव स्फुटदिदं चेतः स्वयं यास्यति ॥१॥

हे सखि दूति जो निर्दय बंचक कृष्ण हमारे समीपुन आये।
क्यों तू दुखी मनमें इतनी बहुबल्लभ वेतौ सवी सुनिपाये।
है बसि सुन्दरतादिक के रति नाइक खेदु महा बउराये।
प्रानु तौ प्रानुपती सों मिलें मन अन्त-अनन्त कौ ध्यानु लगाये ॥१॥

(सोड़श प्रवन्धो देशाङ्कु रागेण रूपक ताले गीयते)

अनिल तरल कुवलय नयनेन।
तपति न सा किशलय शयनेन।
सखि या रमिता वनमालिना ॥ध्रु०॥
विकसित सरसिज ललित मुखेन।
स्फुटति न सा मनसिज विशिखेन ॥२॥
अमृतमधुर मृदुतर वचनेन।
ज्वलति न सा मलयज पवनेन ॥३॥

स्थलजलरुह रुचिकर चरणेन।
लुठति न सा हिमकर किरणेन ॥४॥
सजल जलद समुदय रुचिरेण।
दलति न सा हृदि चिर विरहेण ॥५॥
कनक निकष रुचिसुचि वसनेन।
श्वसिति न सा परिजन हसनेन ॥६॥
सकल भुवन जनवरतरुणेन।
वहति न सा रुजमति करुणेन ॥७॥
श्री जयदेव भणित वचनेन।
प्रविशतु हरिरपि हृदय मनेन ॥८॥

वनमाली कौ विरह सतावै

जो रमनी तिनु संगु रमी नव दलु सिज्जा सुखपावैं।
प्रफुलित कमल कृष्णमुख सों मिलि रतिपीरा न दुखावैं।
परम मधुर बचनामृत हरि संग मलय पवन पहुनावैं।
थल कमलनु समकर चरनाम्बुज मिलै चन्द हरखावैं।
सजल जलद समु श्याम पाइ पुनि विरहन हिये दहावैं।
पीताम्बर सों भोगवती सखि हास श्वास नहि लावैं।
है विपरीत सबै दुख आवत मिटै न नैकु मिटावैं।
श्री जयदेव महाप्रभु बानी, जो कोई जन गावैं।
रामराय सोई प्यारे कों अपुने हृदय बसावैं।

मनोभवानन्दन चन्दनानिल ।
प्रसीद रे दक्षिणमुञ्च वामताम् ।
क्षणं जगत्प्राण विधाय माधवं ।
पुरोमम प्राणहरो भविष्यसि ॥१॥

काम जगावनु हारे अरे मलयानिल बैन सुनों दुखुभारे ।
होहु प्रसन्न गरीवनु पै जगप्रानु के नाइक टेढ़ विसारे ।
एक घरी मोहि देखनु दै करि सन्मुख मोहन नन्ददुलारे ।
ता छिनु बीते पै देरी न हो तुम प्रानहरौ सुखसाध्य हमारे ॥१॥

रिपुरिव सखी सम्वासोयं शिखीव हिमानिलो ।
विषमिव सुधारश्मिर्दूरं दुनोति मनोगते ।
हृदय मदये तस्मिन्नेवं पुनर्वलते वलात् ।
कुवलयदृशां वामः कामो निकामनिरंकुशः ॥२॥

हे सखि श्यामुके देखे बिना सखि संघु सों शत्रु समानु लगैरी ।
अग्निके भान भयो मलयानिल चन्द सुधा विखपानु लगैरी ।
कामके टेढे जा मत्त प्रभाव निरंकुश है नहि ध्यानु लगैरी ।
प्रानपती के वियोग विखें जुवती जनु शूल प्रमान लगैरी ॥२॥

बाधां विधेहि मलयानिल पञ्चबाण
प्राणान् गृहाण न गृहं पुनराश्रयिष्ये ।

किं ते कृतान्तभगिनि क्षमया तरङ्ग-
रङ्गानि सिञ्च मम शाम्यतु देहदाहः ॥३॥

हे मलयानिल देहु व्यथा जितनी मन इच्छा तुम्हारे में है जू।
कामकरो मम प्रान हरो पुनि प्रान गये मन प्यारेमें है जू।
जमुना तुमहू न करो हो छिमा जमराजु की भैन समारे में है जू।
सींचहु अंगु तरंगनु सों तनु तापु हरो जो हमारे में है जू ॥३॥

सान्द्रानन्द पुरन्दरादि दिविषद्वृन्दैरमन्दादरा-
दानम्रैर्मुकुटेन्द्रनीलमणिभिःसन्दर्शितेन्दिन्दिरम् ।
स्वच्छन्दं मकरन्द सुन्दर गलन्मन्दाकिनीमेदुरं
श्रीगोविन्दपदारविन्द मशुभस्कन्दाय वन्दामहे ॥४॥

इतिश्रीगीतगोविन्दे श्रीनागरनारायणोनामसप्तम सर्गः समाप्तः

धन्य श्री गोविन्द पद अरविन्द ।
अति आदरू-पूर्वक प्रसन्न है नमत सतत सुरबृन्द।
मुकुट समूह नीलमनि मानहु झुके अनेक मलिन्द।
जेहि धोवनु गंगाजलु निर्मल न्हात करति सुच्छन्द।
श्री जयदेव पापहरू गायौ सोही गीतगोविन्द।
रामराय नागर नारायन सप्तम सर्ग अमन्द ॥५॥

इतिश्रीगीतगोविन्दप्रियायाँ सप्तमसर्गः समाप्तः

(अधुना श्रीराधा प्रातरागतं प्रियं दृष्ट्वा साभ्यसूयमाह)

अष्टमः सर्गः

अथ कथमपि यामिनीं निनीय

स्मरशर जर्जरितापि सा प्रभाते ।

अनुनयवचनंवदन्तमग्रे-

प्रणतमपि प्रियमाह साऽभ्यसूयम् ॥१॥

काम बानु बिंधि राधिका करि दुख रात बितीत ।

प्रनत नम्र पति सो कहति ईर्षामय जिह गीत ॥१॥

(सप्तदश प्रबन्धो भैरवी रागेण यति ताले गीयते)

रजनि जनित गुरु जागरराग कषायितमलस निमेषम् ।

वहति नयनमनुराग मिवस्फुट मुदित रसाभिनिवेशम् ॥

हरिहरि याहि माधव याहि केशवमावद कैतववाहम् ।

तामनुसरसरसीरुहलोचन या तव हरति विषादम् ॥ध्रु०॥१॥

कज्जलमलिन विलोचन चुम्बन विरचित नीलिमरूपम् ।

दशन वसन मरुणं तव कृष्ण तनोति तनो रनुरूपम् ॥२॥

वपुरनुहरति तवस्मर सङ्गर खरनखर क्षतरेखम् ।

मरकत शकल कलितकलधौत लिपेरिव रतिजयलेखम् ॥३॥

चरणकमलगलदलक्तकसिक्तमिदं तव हृदयमुदारम्।
दर्शयतीवबहि र्मदनद्रुम नवकिसलय परिवारम् ॥४॥
दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदम्।
कथयति कथ मधुनापि मयासह तव वपुरेतदभेदम् ॥५॥
वहिरिव मलिनतरं तव कृष्ण मनोपि भविष्यति नूनम्।
कथमथवञ्चयसे जनमनुगतमसम शरज्वर दूनम् ॥६॥
भ्रमतिभवानवला कवलाय बनेषु किमत्र विचित्रम्।
प्रथयति पूतनिकेव वधूवध निर्दय वालचरित्रम् ॥७॥
श्रीजयदेवभणितरतिवञ्चित खण्डित युवति विलापम्।
शृणुतसुधामधुरं विबुधा विबुधालयतोपि दुरापम् ॥८॥

केशव माधव अब कहा कहिये।
जो दुख हरति कमल दलु लोचन ताही के ढिगु जइये।
कपट वचनु में सुन्यों न चाहति सो मोकों न सुनइये।
रैनि जागरन अरुन नैन भये अब पुनि कहा बतइये ॥२॥
सौतनि के सिंगार रसासवु पी मनु मत्त बनइये।
हरे रामु बहु कष्ट विषय जिह कहा तुम्हें जु जनइये ॥३॥
जो बोलो में राति तिहारे हेतु जग्यो तेहि लाली।
तो काजर कारे बिम्बाधर कहां भये वनमाली ॥४॥

काम जुद्ध में तीखे नख छत रेख विजय सुख चाखे।
मानहु नील मनिन की पाटी कनकु वरन लिखि राखे ॥५॥
कहो कदाचित् तुमहि खोजते कंटकु लगे निशा में।
काम लता पातनु सम महावर दीसत हृदय दिशा में॥६॥
ओठनु लगे दन्त छत मेरी सौतिन के घरि प्यारे।
पीडा भई हृदय मेरे में देखहु नन्द दुलारे ॥७॥
तुमरे हेतु कमलु तोरन गयो अधर भमर नें मारे।
अब तुमकों हों समझूं निहचें तनु कारे मनु कारे ॥८॥
जा वनु में अबलाजन मारनु हेतु भ्रमन तुव भारी।
बालु चरित्र पूतना मारी सो जिह बात पुकारी ॥९॥
श्री जयदेव रचित सुर दुर्लभ खंडित जुवति विलापहि।
श्री रामराय हरि चरित हरेंगे भक्त बृन्द भवतापहि ॥१०॥

तवेदं पश्यन्त्याः प्रसरदनुरागं बहिरिव
प्रिया पादालक्तच्छुरितमरुणद्योति हृदयम्।
ममाद्य प्रख्यात प्रणयभरभंगेन कितव
त्वदालोकः शोकादपि किमपिलज्जां जनयति ॥१॥

हे हरि गोप वधू पद कौ हिये रंगु महावर छाइ रह्यो है।
रागु न भीतर नेंकु कहूं जिह बात प्रतच्छ बताइ रह्यो है॥
प्रेमु बनावट में नट सौ मोहि शोक औ लाजु जनाइ रह्यो है।
सो कपटी जनु कौ मिलिवौ न भलौ जिह शास्त्र सिखाइ रह्यो है॥१॥

प्रातर्नीलनिचोलमच्युत मुरः संवीत पीतांशुकं
राधायाश्चकितं विलोक्य हसतिस्वैरं सखीमण्डले ।
व्रीडाचञ्चलमञ्चलं नयनयोराधाय राधानने
स्वादुस्मेरमुखोयमस्तु जगदानन्दाय नन्दात्मजः ॥२॥

इतिश्रीभगवत्पूज्यपादरसिकाचार्य श्रीजयदेवमहाप्रभुप्रणीते श्रीगीतगोविन्दे खण्डितावर्णनेविलक्ष्यलक्ष्मीपति र्नामाष्टमः सर्गः

मांझ—ललित लता मन्दिर के आंगन प्रात समें राजत पिय प्यारी।
प्रीतम कौ पट पीत प्रिया पै ओढें लालु प्रिया की सारी॥
हंसत सखीजन देखति लज्जित प्रिया दृष्टि कजरारी।
रामराय सबु जग कों सुख दें श्री राधा कुंजबिहारी ॥२॥

इति श्रीजगन्नाथस्वरूप श्रीजयदेवमहाप्रभु वंशोद्भव रसनिधि श्रीरामरायप्रणीत श्रीगीतगोविन्दप्रियायां अष्टमः सर्गः ।

नवमः सर्गः

अथ तां मन्मथखिन्नां रतिरसभिन्नां विषादसम्पन्नाम्
अनुचिन्तितहरिचरितां कलहान्तरितामुवाच रहःसखी ॥१॥

कामदेव पीडा सों पीडित रति रस रहित न सोहै।
अति दुःखित ह्वै तिरस्कार करि पतिकों जो जग मोहै॥

हरि के चरित चिन्तवनु करि करि कलहान्तरिता जो है।
लखि एकान्त कहति सखि तासों प्यारी तुम सम को है ॥१॥

(अष्टादशप्रबन्धो गुर्जरीरागेण यतिताले गीयते)

हरिरभिसरति वहति मधु पवने
किमपरमधिक सुखं सखिभवने ॥१॥
माधवे माकुरु मानिनि मानमये (ध्रु०)
तालफलादपि गुरुमति सरसम्
किं विफली कुरुसे कुच कलसम् ॥२॥
कति न कथितमिद मनुपदमचिरम्
मा परिहर हरि मतिशय रुचिरम् ॥३॥
किमिति विसीदसि रोदिसि विकला
विहसति युवति सभा तव सकला ॥४॥
सजल नलिनीदल शीलित शयने
हरिमवलोकय सफलय नयने ॥५॥
जनयसि मनसि किमिति गुरुखेदम्
शृणु मम वचनमनीहित भेदम् ॥६॥
हरिरुपयातु वदतु बहुमधुरम्
किमिति करोषि हृदयमतिविधुरम् ॥७॥

श्रीजयदेव भणित मतिललितम्
सुखयतु रसिकजनं हरिचरितम् ॥८॥

मान न करु वृषभानु दुलारी।
माधव सों माधव में मिलिये हृदय खोलि सुकुमारी ॥१॥
ऋतु वसन्त में पवन वहन लखि, आये हरि संकेत स्वयं सखि।
जासों अधिक न सुख कोऊ गृह, जुवती जोवन वारी ॥२॥
इन सम कठिनु ताल के फलु क्यों, ऐसे कुंभकुचा निष्फल क्यों।
देखति मत्त करति मोहनुकों, आलिंगनु करि प्यारी ॥३॥
सुन्दर कृष्ण चन्द्रमा छोड़े, तिरस्कार करि २ मुख मोड़े।
अब उनके कारन कांदत क्यों, जुबति हँसति दै तारी ॥४॥
मृदुनलिनी दल शीतल शैया, नैन सफलु अवलोकि कन्हैया।
अधिक विकलु जिन होहु बात मम सुनहु कहूँ हितकारी ॥५॥
हियसों ग्रंथि कोपुकी खोलौ, मधुर वचनु प्रीतम सों बोलौ।
विनती मेरी मानहु राधे, कारजु बनहि सुखारी ॥६॥
धीरजु धरि विपदा क्यों पाई, जाकौ कारन है गरुआई।
दीनु बने साधन फलु मिलि हैं, प्राननाथ परिवारी ॥७॥
श्री जयदेव ललित रस वानी, रसिक वृन्द आनन्द विधानी।
रामराय भगवानदास हितु, कृष्ण कथा अवतारी ॥८॥

स्निग्धे यत्परुषासि यत्प्रणमति स्तब्धासि यद्रागिणि
द्वेषस्थासि यदुन्मुखे विमुखतां यातासि तस्मिन्प्रिये

तद्युक्तं विपरीत कारिणि तव श्रीखण्डचर्चाविषं
शीतांशु स्तपनो हिमंहुतवहः क्रीडामुदोयातनाः ॥१॥

हरि विपरीत न कछु सुख पावो।
गोपीनाथ मधुर हँसि बोलैं तुम कटु वचनु सुनावो ॥
गोकुलनाथ करत विनती जब मूक सदृश बनि जावो।
प्रेम भरें श्री मदनमोहन तुम वैरभावु झलकावो ॥
सन्मुख भये आपु मुख फेरौ निजु इच्छा हठ लावो।
कृष्ण विरह कौ फलु जिह सामइ सुनें न जाहि सुनावो ॥
चन्दनु लेपु दूर चन्दनु की चर्चा विख सम भावो।
रामराय शशि सूर्य हिमानलु केलि कलप दुख पावो ॥१॥

अन्तर्मोहन मौलि घूर्णन मिलन्मन्दार विस्रंसन
स्तब्धाकर्षण दृष्टिहर्षण महामन्त्रःकुरङ्गीदृशाम्
दृप्यद्दानव दूयमान दिविषदुर्वारदुःखापदां
भ्रंसःकंशरिपोर्व्यपोहयतु वः श्रेयांसि वंशीरवः ॥२॥

इतिश्रीरसिकसम्प्रदायाद्याचार्य श्रीजयदेवमहाप्रभुप्रणीत–
श्रीगीतगोविन्दे मुग्धमुकुन्दोनाम नवमः सर्गः

(चतुरचतुर्भुजोनाम)

दशमः सर्गः

अत्रान्तरे मसृणरोष वशादसीम-
निःस्वास निःसह मुखी सुमुखीमुपेत्य ।
सव्रीड मीक्षित सखीवचनं दिनान्ते
सानन्द गद्गदपदं हरिरित्युवाच ॥१॥

रोषु भरी तेहि रोषु के कारन स्वासु न लेत भली विधि सों।
साँझ समें निजु लाल सखी मुख देखि रही जो भली विधि सों ॥
ऐसे सुभावु के भावु भरी जिय प्यारी के पास भली विधि सों।
श्री मुरलीधर राधिका सों विनती करि जोर भली विधि सों ॥१॥

(एकोनविंशःप्रबन्धो देश वराडी रागेण अष्टताले गीयते)

वदसि यदि किञ्चिदपि दन्तरुचि कौमुदी
हरति दरतिमिर घोरम् ।
स्फुरदधरसीधवे तव वदन चन्द्रमा
रोचयति लोचन चकोरम् ।
प्रिये चारुशीले मुंच मयि मानमनिदानम् ॥
सपदि मदनानलो दहति मम मानसं ।
देहि मुखकमल मधुपानम् ॥ (ध्रु०) ॥१॥

सत्यमेवासि यदि सुदति मयि कोपिनी
देहि खरनखरशरघातम् ।
घटय भुजबन्धनं जनय रदखण्डनं
येन वा भवति सुखजातम् ॥२॥
त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनं
त्वमसि मम भवजलधिरत्नम् ।
भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनी
तत्र मम हृदयमतियत्नम् ॥३॥
नीलनलिनाभमपि तन्वि तव लोचनं,
धारयति कोकनदरूपम् ।
कुसुमशरबाणभावेन यदि रञ्जयसि,
कृष्णमिदमेतदनुरूपम् ॥४॥
स्फुरतु कुचकुम्भयोरुपरि मणिमञ्जरी,
रञ्जयतु तव हृदयदेशम् ।
रसतु रसनापि तव जघनघनमण्डले,
घोषयतु मन्मथनिदेशम् ॥५॥
स्थलकमलगञ्जनं मम हृदयरञ्जनं,
जनितरतिरङ्गपरभागम् ।

भण मसृणवाणि करवाणि चरणद्वयं,
सरसलसदलक्तकरागम् ॥६॥
स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनं,
धेहि पदपल्लवमुदारम् ।
ज्वलति मयि दारुणो मदनकदनानलो,
हरतु तदुपाहितविकारम् ॥७॥
इति चटुलचाटुपटुचारु मुरवैरिणो,
राधिकामधि वचनजातम् ।
जयति जयदेवकविभारती भूषितं,
मानिनीजनजनितशातम् ॥८॥

सुन्दर सुभावु वारी प्रानु प्यारी मानु तजि ॥
कारन विनु रोप नाहीं भावत हे भामती जू,
काम की अगिन मोकों जरावे तासों मान अजि ।
शीतल करिवे कों मोहि मुख कमलु सुधा प्याउ,
हिय के हरसाइवे कों सोही सिंगारु सजि ॥
बोलन में दन्तावलि चान्दनी को गर्व हरे-
भय रूपी घोर अन्धकार कों मनोज धजि ।
मुख रूपी चन्द्र तेरो अधरु सुधा को पानु,
देवे कों नैनहि चकोर ललचात लजि ॥१॥

शुभ्रदन्ति! मो पे जदि साँचे ही रुष्ट भई,
तीखे नख रूप बान सुख सों चलाइये।
बांधि लेहु मोहि दोनों भुज तो मन चैनु परे,
दन्त पांति काटि मोहि मन कों सलाइये ॥२॥

मेरी तो भूषनु धनु जीवनि तुमी हो प्रिये,
संसारी रत्नाकर रत्ननि की मालिये।
होवो अनुकूल चित्त चाहत प्रसन्नु देख्यो,
राधा सब बाधा हरु निजु जनु कों पालिये ॥३॥

नैना नीले कमलु के समानु प्रानु प्यारी तेरे,
तोहू क्रोध कारनु अनोखे लाल है रहे।
काम पुष्पबानु ही के भाबु सों हे भामती जू,
रंग्यो चाहो कृष्ण कों तो ऐसे भले रहे ॥४॥

कंचनु कलशा से कुच हीरा के हारु धरो,
हृदे देश रंजित हैं उझले झले रहे।
घन सी जघनस्थली पै कामदेव आज्ञा कों,
घोसित करि वे को जिह किंकनी ढली रहे ॥५॥

मृदु बानी जो तुम कहो तो थल कमनल सों,
शोभित महानु पद - पंकजु तिहारे में।
मेरे हिय रंजन परस्पर रति रंग विषे,
आनँद अमन्द दाता सो विधि समारे में ॥६॥

राधिके मोहि जे दारुन काम प्रकामु की आगु सतावे महा,
संग भूल्यो अनन्त वदन्त प्रिये अबु सोचु जिही कि कहू में कहा,
आश है एकु विश्वासु विशेषु मेरे शिरु भूषनु रूपु महा,
श्री पद पल्लव थापिये शीतलता हियु होइ कहे मधुहा ॥८॥

अलता के रागु बड़भागु निजु हाथनु सों,
रंगत रंगीले करूँ संगत सहारे में।
रामराय शोभा की खानु वृषभानु सुते,
नित्य नित्य देखे पै नवीनु ही निहारे में ॥७॥

परिहर कृतातङ्के शङ्कां त्वया सततं घन-
स्तनजघनयाऽऽक्रान्ते स्वान्ते परानवकाशिनी।
विशति वितनोरन्यो धन्यो न कोऽपि ममान्तरं
स्तनभरपरीरम्भारम्भे विधेहि विधेयताम् ॥ १ ॥

शंक विहाय निशंक बनें नहीं मेरें है तो विनु दूजी दुलारी,
कुम्भ समानु कठोर कुचा जघनस्थल चित्त वसे तजि सारी,
केवल काम कूं छोड़ कोऊ मनमन्दिर वासु नहीं अधिकारी,
दीजे आलिंगन भारी अरी सुन में तेरो प्यारो ओ तू मेरी प्यारी ॥१॥

कवित्त— जैसे चतुराई प्रेम रसु में विशेषु पगे,
वानी जयदेव जू की शोभा सरसाये हैं।
मानवती नायिका समूह कों सुखी ही करें,
त्याग कें कठोरताई हिये में समाये हैं।

राधिका के तोष कों जो भाखे शिरी रामराय,
कृष्ण चन्द्रमाजू बड़े ऊँचे भावु भाये हैं।
धन्य धन्य लीला जिह कुञ्ज के विहारीजू की,
धन्य जयदेव कविराजु राजु गाये हैं॥

मुग्धे विधेहि मयि निर्दयदन्तदंश-
दोर्वल्लिबन्धनिबिडस्तनपीडनानि।
चण्डि त्वमेव मुदमञ्चय पञ्चबाण-
चण्डालकाण्डदलनादसवः प्रयान्ति॥ २॥

दन्त डशो करि निर्दय चित्त जो चूक भई कछु मोसों नवेली।
बन्धनु कीजे भुजा भरिकें दृढ़ बंधन बांधि रखो अलबेली॥
क्रोधु तजो अबबोधु भजो आनन्द प्रदान करों रस पेली।
कामु न प्रानु हमारे हरे तेहि पूर्व उरोजन देहु ढकेली॥२॥

शशिमुखि तव भाति भंगुरभ्रू
र्युवजनमोहकरालकालसर्पी।
तदुदितभयभञ्जनाय यूनां
त्वदधरसीधुसुधैव सिद्धमन्त्रः॥३॥

हे शशिकान्तमुखी सुनिहो जिह कैसो अपूरव खेलु भयो।
जोर किशोर अवस्था भई तुब बांकी सी भौंहें कहा न कयो॥
सर्पिन रूप डसे जु हरी नहीं और उपाय कछू उलयो।
मंत्र महा अधरामृत है पुनि क्यों न बचाओ जो कीर्ति छयो॥३॥

व्यथयति वृथा मौनं तन्वि प्रपञ्चय पञ्चमं
तरुणि मधुरालापैस्तापं विनोदय दृष्टिभिः ।
सुमुखि विमुखीभावं तावद्विमुञ्च न वञ्चय
स्वयमतिशयस्निग्धो मुग्धे प्रियोऽहमुपस्थितः ॥ ४ ॥

हे कृश अङ्गि न भावे हमें जिह मौनु तिहारो सदा रहिवों ।
हे तरुणी मधुरे स्वर पंचम में बचनामृत को कहिवो ॥
नैन प्रतापु सों तापु हरो हिय आनन्द सन्मुखता चहिवो ।
वंचनु मोहि करो न प्रिये मैं तो आयो हूँ आप चहू गहिवो ॥४॥

बन्धूकद्युतिबान्धवोऽयमधरः स्निग्धो मधूकच्छवि-
र्गण्डश्चण्डिचकास्तिनीलनलिनश्रीमोचनं लोचनम् ।
नासाभ्येति तिलप्रसूनपदवीं कुन्दाभदन्ति प्रिये
प्रायस्त्वन्मुखसेवया विजयते विश्वं स पुष्पायुधः ॥५॥

कवित्त— वन्धू वन्धूक के हैं सु अधर अनोखे लाल ।
चिकने महुआ के फूल सम जे कपोल हैं ॥
श्यामल कमल नैनु नासा तिल पुहप रूप ।
कुन्द की कली सी दन्त आवलि अमोल है ॥
कामु के हू पांच वान वने पांच पौहपन सों
तिनु को मुखादि अंगु अंगु सबु टोल है ॥
जाही जगु जीतवे को वलु पायो महा तेरे
मुखकंज्जु सेवा कीये फलति अतोल है ॥५॥

दृशौ तव मदालसे वदनमिन्दुमत्यान्वितं
गतिर्जनमनोरमा विधुतरम्भमूरुद्वयम् ।
रतिस्तव कलावती रुचिरचित्रलेखे भ्रु वा
वहो विषुधयौवतं वहसि तन्वि पृथ्वीगता ॥६॥

यौन मदु मत्त नैन मुख हू सो चन्द्र सैन
मनु कों आनन्द देत गमन मराल है॥
जंघा कदली सुखंभ रति कीड़ा कामरंग
चित्ररेखा तुल्य भोंहें सुन्दर विशाल हैं॥
मदालसा इन्दुमती रंभा औरु कलावती
मनोरमा अपछरा जे पूरन गुन वाल है॥
पृथिवी पै वासु करि सबु को परिहासु करे
राजति श्री रामराय स्वामिनी रसाल है॥६॥

प्रीतिं वस्तनुतां हरिः कुवलयापीडेन सार्धं रणे
राधापीनपयोधरस्मरणकृत्कुम्भेन सम्भेदवान् ।
पत्रे विभ्यति मीलति क्षणमपि क्षिप्रं तदालोकनाद्
व्यामोहेन जितं जितं जितमभूद्व्यालोलकोलाहलः ॥७॥

मांझ—कुवकय पीड़ हस्ति के मस्तक प्रिया उरोजु समारे ।
मार्‍यो कंस प्रशंसा करि सबु ब्रजगोपालु पुकारे ॥
श्री जयदेव देव भक्तनु की प्रीति बढ़ावें प्यारे ।
रामराय सो चतुर चतुर्भुज दशम सर्ग सुख भारे ॥१॥

इति श्री जगन्नाथदेवावतार थी जयदेव महाप्रभु वंशोद्भव परमहंसावतंस दार्शनिक सार्वभौम श्रीरामराय गोस्वामी प्रणीतायां पद्यावल्यां

दशमः सर्गः

एकादशः सर्गः

सुचिरमनुनयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षीं
गतवति कृतवेशे केशवे कुञ्जशय्याम् ।
रचितरुचिरभूषां दृष्टिमोषे प्रदोषे
स्फुरति निरवसादा कापि राधां जगाद ॥१॥

क०—प्रेम भरी वोलनि सों करिकें प्रसन्न चित्त
राधा मृगु नैनी कोसो बिधिना संभारे हैं ॥
अंधकार भरी सांझि अपनो सिंगारु सजि
केशव हू कुञ्ज केलि सिज्जा में पधारे है ॥
ताही छिनु प्यारी जू को भूखन नवीनु धरि
वसनु विचित्र सखी बृन्द हू सिगारे हैं ॥
ललिता मल्लूक महा रामराय कहे कहा
मेरी महारानी जू कों वचन उचारे हैं ॥

(अथ विंशः प्रबन्धो वसन्तरागेण रूपकताले गीयते)

विरचितचाटुवचनरचनं चरणे रचितप्रणिपातम् ।
सम्प्रति मञ्जुलवञ्जुलसीमनि केलिशयनमनुयातम् ॥१॥
मुग्धे मधुमथनमनुगतमनुसर राधिके ॥ ध्रु० ॥
घनजघनस्तनभारभरे दरमन्थरचरणविहारम् ।
मुखरितमणिमञ्जीरमुपैहि विधेहि मरालनिकारम् ॥२॥
शृणु रमणीयतरं तरुणीजनमोहनमधुरिपुरावम् ।
कुसुमशरासनशासनबन्दिनि पिकनिकरे भज भावम् ॥३॥
अनिलतरलकिसलयनिकरेण करेण लतानिकुरम्बम् ।
प्रेरणमिव करभोरु करोति गतिं प्रति मुञ्च विलम्बम् ॥४॥
स्फुरितमनङ्गतरङ्गवशादिव सूचितहरिपरिरम्भम् ।
पृच्छ मनोहरहारविमलजलधारममुं कुचकुम्भम् ॥५॥
अधिगतमखिलसखीभिरिदं तव वपुरपि रतिरणसज्जम् ।
चण्डि रणितरशनारवडिण्डिममभिसरसरसमलज्जम् ॥६॥
स्मरशरसुभगनखेन सखीमवलम्ब्य करेण सलीलम् ।
चल वलयक्वणितैरवबोधय हरिमपि निजगतिशीलम् ॥७॥
श्रीजयदेवभणितमधरीकृतहारमुदासितवामम् ।
हरिविनिहितमनसामधितिष्ठतु कण्ठतटीमविरामम् ॥८॥

पद—श्री राधे सुनु बात हमारी।

बहु प्रकार मृदु वचन विलासी, तव पद कंजु नवत सुखराशी।
शीघ्र निकट तिनके जु पधारो, निधुवन शयन विहारी॥ १॥
हे घनु जघनी पीन इस्तनी, धीरे धीरे पदु धर धरुनी।
मनि नूपुर धुनि हंसा गमनी, चल पिय पास पियारी॥ २॥
तरुनी जनु मोहनु त्रतु प्यारो, मुरली धुनि गावत मत बारो।
काम बन्दि कोकिल छवि धारो, बोलहु मधुर उचारी॥ ३॥
हे करभोरु सुनों सुखवानी, लता भवन चलु पल्लवु पानी।
कर संकेत कहत रस खानी, देहु विलम्ब निकारी॥ ४॥
जदि विश्वास न मोर सहेली, काम तरंग कंप कुच मेली।
सूचित हरि अलिंगन केली, हीर हार जल धारी॥ ५॥
रति रनु हेतु सजी सबु भाँती, तजि लज्जा किंकिनि धुनि माती।
क्रोधु छांडि धारहु मनु शान्ती, हम सब सखी तिहारी॥ ६॥
मदनु मत्त मोहि नाहिं सुनावहु, कंकन धुनि आगमनु जनावहु।
कामु बान सम नख के भावहु, चलि सखि हाथ समारी॥ ७॥
श्री जयदेव रचित रत्ना वलि, लज्जाकारी ललित पदावलि।
रामराय जुबती करि घायलि, भक्त गान सुखकारी॥ ८॥

सा मां द्रक्ष्यति वक्ष्यति प्रियकथां प्रत्यङ्गमालिङ्गनैः
प्रीतिं यास्यति रंस्यते सखि समागत्येति चिन्ताकुलः।
स त्वां पश्यति वेपते पुलकयत्यानन्दति स्विद्यति
प्रत्युद्गच्छति मूर्च्छति स्थिरतमः पुञ्जे निकुञ्जे प्रियः॥१॥

पद—सखि तोहि बात कहों समुझाई।
अन्धकार मय कुञ्जभवनु में बैठे पिय कों चिन्ता छाई।
बिकल बिचारत प्यारी मोकों मधुर बचनु बोलेंगी॥
पुनि सर्बांग करें आलिंगन परिरंभन डोलेंगी।
जा विधि बिबिध मनोरथ करि २ तुम्हें देखि काँपे हैं॥
प्यारी मोहि कहा अबु कहि है ध्यानु धरत झाँपें हैं।
अंग परस रोमांच जुक्त है रति रसु बस थकि जावें॥
श्रम जलु बिन्दु भयो तर बिग्रह ध्यानु मध्य सबु भावें।
कबहुँ खड़े आदर सों देखे अलखु भये सुधि त्यागें॥
देर न कर अनुरक्त महा तोहि रामराय अनुरागें॥

अक्ष्णोर्निक्षिपदञ्जनं श्रवणयोस्तापिच्छगुच्छावलिं
मूर्ध्नि श्यामसरोजदाम कुचयोः कस्तूरिकापत्रकम्।
धूर्तानामभिसारसत्वरहृदां विष्वङ् निकुञ्जे सखि
ध्वान्तं नीलनिचोलचारु सुदृशां प्रत्यङ्गमालिङ्गति॥२॥

काश्मीरगौरवपुषामभिसारिकाणा-
माबद्धरेखमभितो मणिमञ्जरीभिः।
एतत्तमालदलनीलतमं तमिस्रं
तत्प्रेमहेमनिकषोपलतां तनोति॥३॥

प्यारी सुनु जिहि विनय विशाला
कज्जल नैनु तमाल गुच्छ श्रुति पहिरो नील कमल शिरमाला।

नीलु निचोल अंधेरी कों करि कुच कस्तूरी रचना जाला ॥
केशर सम जिन गौर वरनु तन तिन कोहोय कसोटी अंधाला ।
सुवरन ज्यों त्यों तहां परीक्षा सुवरन को निकषी तम माला ॥
सहजु होइ सिंगार सोंई जिह विलमु न करहु अशेष रसाला ।
रामराय अभिलाषा भारी भरे बिराज रहे नन्दलाला ॥२-३॥

हारावलीतरलकाञ्चनकाञ्चिदाम —
केयूरकङ्कणमणिद्युतिदीपितस्य ।
द्वारे निकुञ्जनिलयस्य हरिं निरीक्ष्य
व्रीडावतीमथ सखी निजगाद राधाम् ॥४॥

हीरा के हार सुवर्ण की किंकिनि मोती के जामें जराव जराये ।
कंकन मंडित नाना मनिन सों ऊपर बाजू के बन्द जुराये ॥
कुञ्ज के द्वार निहार श्री नन्दकुमार कौ लज्जित नैन लजाये ।
ताई समें कोऊ प्यारी सहेली ने प्यारे सों प्यारे जे बैन सुनाये ॥४॥

(अथैकविंशतितमः प्रबन्धो वराडीरागेण आढवताले गीयते)

मञ्जुतरकुञ्जतलकेलिसदने ।
विलस रतिरभसहसितवदने ॥
प्रविश राधे माधवसमीपमिह ॥१॥ध्रु०॥
नवभवदशोकदलशयनसारे ।
विलस कुचकलशतरलहारे ॥२॥

कुसुमचयरचितशुचिवासगेहे।
विलस कुसुमसुकुमारदेहे ॥३॥

मृदुचलमलयपवनसुरभिशीते ।
विलस रसवलितललितगीते ॥४॥

विततबहुवल्लिनवपल्लवघने ।
विलस चिरमिलितपीनजघने ॥५॥

मधुमिलितमधुपकुलकलितरावे
विलस मदनरभसरसभावे ॥६॥

मधुरतरपिकनिकरनिनदमुखरे ।
विलस दशनरुचिरुचिरशिखरे ॥७॥

विहितपद्मावतीसुखसमाजे ।
कुरु मुरारे मंगलशतानि,
भणति जयदेवकविराजराजे ॥८॥

श्री राधे भीतर पग धारो ।
सुन्दर कुञ्ज सदन के आंगन केलि भवन भावना विचारो ।
रति क्रीड़ा उत्साह हास जुत मुदित मुखी माधव प्रभु पारो ॥
कनक कलश कुच चञ्चल मुक्ता हारावली त्रिवली तट धारो ।
कुसुम समूह सुगन्ध लतागृह तुव अंग पुष्प समाना ॥

सरस गीत गान्धर्वै मलयज पवनु सदन तुव प्राना।
घन जघनी घन सघन लता वनु रति पति रस सों साजी॥
रस पीवन को भये इकत्रित मधुप तहां अति राजी।
दन्त कान्ति की दमक मनिद्युति जहाँ कोकिला बोलें।
ऋतु वसन्त सों चञ्चलु कूजित हैं रही विविध कलोलें॥
पद्मावति सुखदायक हरिजन गायक श्री जयदेवा।
कविराजनु के राजु दीजिए रामराय कों सेवा॥८॥

त्वां चित्तेन चिरं वहन्नयमतिश्रान्तो भृशं तापितः
कन्दर्पेण च पातुमिच्छति सुधासम्बाधविम्बाधरम्।
अस्यांकं तदलंकुरु क्षणमिह भ्रूक्षेपलक्ष्मीलव-
क्रीतो दास इवोपसेवितपदाम्भोजे कुतः सम्भ्रमः॥१॥

सा ससाध्वससानन्दं गोविन्दे लोललोचना।
सिञ्जाना मञ्जुमञ्जीरं प्रविवेश निवेशनम्॥२॥

श्रीराधे सुनु माधवु को हाल।
प्रेमु पंकु में धसि रसरागी भये तहां वेहाल॥
वेस अनेक तुम्हें हियु धारत काम ताप सों श्रान्त।
पीवन चहत सुधा विम्वाधर गोद विठाइ नितान्त॥१॥
भृकुटि कटाच्छ लच्छ पद सेवक लीने मोहनु मोल।
अब हिय में संकोच न कीजे मिलै गांठ सबु खोल॥
श्रीहरि विषय नैन चञ्चलु चलि लज्जा सह आनन्द।
रामराय नूपुर धुनि करतीं मिलै कुञ्ज निर्द्वन्द॥२॥

(अथ द्वाविंशतितमः प्रबन्धो वराडीरागेण रूपकताले गीयते)

राधावदनविलोकनविकसितविविधविकारविभङ्गम् ।
जलनिधिमिव विधुमण्डलदर्शनतरलिततुङ्गतरङ्गम् ॥
हरिमेकरसं चिरमभिलषितविलासम् ।
सा ददर्श गुरुहर्षवशंवदवदनमनङ्गविकाशम् ॥१॥ ध्रु० ॥

हारममलतरतारमुरसि दधतं परिलम्बितदूरम् ।
स्फुटतरफेनकदम्बकरम्बितमिव यमुनाजलपूरम् ॥ २ ॥

श्यामलमृदुलकलेवरमण्डनमधिगतगौरदुकूलम् ।
नीलनलिनमिव पीतपरागपटलभरवलयितमूलम् ॥ ३ ॥

तरलदृगञ्चलचलनमनोहरवदनजनितरतिरागम् ।
स्फुटकमलोदरखेलितखञ्जनयुगमिवशरदि तडागम् ॥४॥

वदनकमलपरिशीलनमीलितमिहिरसमकुण्डलशोभम् ।
स्मितरुचिरुचिरसमुल्लसिताधरपल्लवकृतरतिलोभम् ॥५॥

शशिकिरणच्छुरितोदरजलधरसुन्दरकुसुमसुकेशम् ।
तिमिरोदितविधुमण्डलनिर्मलमलयजतिलकनिवेशम् ॥६॥

विपुलपुलकभरदन्तुरितं रतिकेलिकलाभिरधीरम् ।
मणिगणकिरणसमूहसमुज्ज्वलभूषणसुभगशरीरम् ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवभणितविभवद्विगुणीकृतभूषणभारम् ।
प्रणमत हृदि प्रणिधाय हरिं सुचिरंसुकृतोदयसारम् ॥८॥

निरखत प्रिया प्रानपति शोभा।
निजु मुख चन्द दरश आल्हादित उच्छल निधि सम लोभा॥
देख चन्द मंडलु कों चञ्चल उज्ज्वल रस विधि नाना।
केवल प्रिया प्रीति के पोसक तेहि विहार मधि प्राना॥१॥
काम भावु परिपूर्ण भये वस परमानन्द उपासी।
फेनिल जमुना जलु सम हीरा हारु धारु सुख राशी॥२॥
पीत पराग समूह पीत पटु नील कमलु तनु राजे।
शरद प्रफुल्ल कमलु मधि क्रीडत खंजन जनु जलु साजे॥३॥
तरल तडाग तरङ्ग कटाच्छन छोड़त श्री मुख सो है।
रति अभिलाषिन भामिन को मन कामु उदय करे मोहै॥४॥
मुख सरोज़ दर्शन हित चलु दलु कुण्डलु शोभा साजी।
मृदु मुसकन विम्वाधर लखि रति हेतु भई सवु राजी॥५॥
चन्द्र किरन शोभित घन अन्तर कुसुम सुशोभित केशी।
तिमिर उदितु विधु मण्डल निर्मल चन्दन तिलक सु वेशी॥६॥
रोमां चितु तनु आलिंगन मनु मनि भूषित सज्जित तन।
इक टक निरखत हरखत राधा मदनमोहन निजु जींवन॥७॥
श्री जयदेव कवीश्वर वरननु सों दूने आभूषन।
रामराय रस तत्व पूर्ण निज पुण्य करो हिय धारन॥८॥

अतिक्रम्यापांगं श्रवणपथपर्यन्तगमन-
प्रयासेनेवाक्ष्णोस्तरलतरतारं पतितयोः ।
इदानीं राधायाः प्रियतमसमालोकसमये
पपात स्वेदाम्बुप्रसर इव हर्षाश्रुनिकरः ॥ १ ॥

दोहा—प्रीतम के दर्शन समें राधा नैन अपांग ।
करन कुहर पर्यन्त भै सीमा सहज उलांघ ॥
प्रेम भरे आनन्द सों वरसावत रसधार ।
मनु प्रस्वेद प्रवाह है कौन करे निरधार ॥ १ ॥

भजन्त्यास्तल्पान्तं कृतकपटकण्डूतिपिहित-
स्मितं याते गेहाद्बहिरवहितालीपरिजने ।
प्रियास्यं पश्यन्त्याः स्मरशरवशाकूतसुभगं
सलज्जा लज्जापि न्यगमदिव दूरं मृगदृशः ॥ २ ॥

स०—कान खुजानो वहानो किये मुसकानु भरीं सगरी सखियां ।
प्रेमु प्रिया प्रनयी वतियां परजंकु चढ़े रति की अखियां ॥
कुञ्ज के बाहिर श्री मतियां भई लाजु को लाजु इन्हें लखियां ।
श्री मुख चन्द विलोकि प्रिया प्रिय कौनु को कौनु कहे सुखियां ॥

जयश्रीविन्यस्तैर्महित इव मन्दारकुसुमैः
स्वयं सिन्दूरेण द्विपरणमुदामुद्रित इव ।
भुजापीडक्रीडाहतकुवलयापीडकरिणः
प्रकीर्णासृग्बिन्दुर्जयति भुजदण्डो मुरजितः ॥ ३ ॥

दोहा—हते कुवलया पीड की रुधिर विन्दु संग्राम।
मनों मुदित सिन्दूर रंगु लेपनु कियो ललाम॥
जयलक्ष्मी वरसा किये पारिजात के फूल।
तिन सों पूजित कृष्ण भुज मेटें भक्तन शूल॥
श्री जयदेव दया करी दरशायो सुख कन्द।
रामराय शिव सर्ग जह रसानन्द गोविन्द॥

इतिश्री सारस्वत कुलाब्धिकौस्तुभ श्री जगदीश अवतार श्रीजयदेव महाप्रभु वंशोद्भव दार्शनिक सार्वभौम श्रीरामराय गोस्वामि प्रणीतायां श्री गीतगोविन्द प्रियायां सानन्दगोविन्दनामैकादश सर्गः।

द्वादशः सर्गः

गतवति सखिवृन्देऽमन्दत्रपाभरनिर्भर-
स्मरशरवशाकूतस्फीतस्मितस्नपिताधरम्।
सरसमनसं दृष्ट्वा राधां मुहुर्नवपल्लव-
प्रसवशयने निक्षिप्ताक्षीमुवाच हरिः प्रियाम्॥१॥

दोहा—कुंज भवनु बाहिर भई जब सबु सखी समाजु।
मदन वेग वश हँस रही श्री राधा अति लाज॥१॥
मन्द मन्द मुसक्यान में दिये अधर मनु पाग।
पल्लव सिज्जा दीठ दे बदति कृष्ण अनुराग॥२॥

(अथ त्रयोविंशातितमः प्रबन्धो विभासरागेण एकतालीताले गीयते)

किसलयशयनतले कुरु कामिनि चरणनलिनविनिवेशम् ।
तव पदपल्लववैरिपराभवमिदमनुभवतु सुवेशम् ॥
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर मां राधिके ॥१॥ ध्रु० ॥
करकमलेन करोमि चरणमहमागमिताऽसि विदूरम् ।
क्षणमुपकुरु शयनोपरि मामिव नूपुरमनुगतिशूरम् ॥ २ ॥
वदनसुधानिधिगलितममृतमिव रचय वचनमनुकूलम् ।
विरहमिवापनयामि पयोधररोधकमुरसि दुकूलम् ॥ ३ ॥
प्रियपरिरम्भणरभसवलितमिव पुलकितमतिदुरवापम् ।
मदुरसि कुचकलशं विनिवेशय शोषय मनसिजतापम् ॥ ४ ॥
अधरसुधारसनुपनय भामिनि जीवय मृतमिव दासम् ।
त्वयि विनिहितमनसं विरहानलदग्धवपुषमविलासम् ॥ ५ ॥
शशिमुखि मुखरय मणिरशनागुणमनुगुणकंठनिदानम् ।
मम श्रुतियुगले पिकरवविकले शमयचिरादवसादम् ॥ ६ ॥
मामतिविफलरुषा विकलीकृतमवलोकितुमधुनेदम् ।
मीलति लज्जितमिवनयनं तव विरम विसृजरतिखेदम् ॥ ७॥
श्रीजयदेवकवेरिदमनुपदनिगदितमधुरिपुमोदम् ।
जनयतु रसिकजनेषु मनोरमरतिरसभावविनोदम् ॥ ८

सुनु सुन्दरि प्रिय पद पल्लव कों पलुभर पल्लव शैया जू।
पधरावो निजु समता को फलु दीजै जाहि दलैया जू॥१॥
पगु मगु थकित भई हो तासों निज कर कमल दबाऊं जू।
गति अति धीर वीर नूपुर श्रम सुख सिज्जा पधराऊं जू॥२॥
वदन सुधानिधि सों रस वतियां पीवत अति हर साऊं जू।
विरह सदृश वक्षस्थल अंचल हटे कुचनु सरसाऊं जू॥३॥
मम आलिंगन हित सन्मुख है रोमांचित मेरे सम जू।
और हि अलभु उरोज लागि मोहि दूर करो मदन श्रम जू॥४॥
विरह दवानल व्याकुल दासहि भामिनि जीवित चाओ जू।
तो आसक्त चित्त अपने में अधर सुधारस प्याओ जू॥५॥
चन्द्रमुखी निजु कण्ठ गीत समु किंकिनि शब्द सुनाओ जू।
कोकिल कूक बिकल बिरही कों सुखमय शांत बनाओ जू॥६॥
निष्फल कोप विकल भये मोकों लखि लज्जित सम वंदे जू।
नैनु खोलकरि रमनु संग मम दीजै परमानन्दे जू॥७॥
पदु पदु में आनन्द रसदाता श्री जयदेव वनायो जू।
रामराय श्रीकृष्णचन्द्र सुख हित भगवान सुनायो जू॥८॥

प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निबिडाश्लषे निमेषेण च
क्रीड़ाकूतविलोकितेऽधरसुधापाने कथाकेलिभिः।
आनन्दाधिगमेन मन्मथकलायुद्धेऽपि यस्मिन्नभू-
दुद्भूतः स तयोर्बभूव सुरतारम्भः प्रियं भावुकः॥ १॥

पद—श्रीराधा माधव सुरतारंभु।

गाढ़ालिंगनु रोमु विघनु सम नैन कटाच्छ दच्छ कों दंभु।
अधर सुधा रस पान करन में वचनु रचन भावत न विडंव।
रामराय सोहै न कला कोऊ आनंद आल्हादिनि परिरंभ ॥१॥

दोर्भ्यां संयमितः पयोधरभरेणापीडितः पाणिजै-
राविद्धो दशनैः क्षताधरपुटः श्रोणीतटेनाहतः।
हस्तेनानमितः कचेऽधरमधुस्यन्देन सम्मोहितः
कान्तःकामपि तृप्तिमापतदहो कामस्य वामा गतिः ॥२॥

मारांके रतिकेलिसंकुलरणारम्भे तया साहस-
प्रायः कान्तजयाय किञ्चिदुपरि प्रारम्भि यत्सम्भ्रमात्।
निष्पन्दा जघनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लिरुत्कम्पितं
वक्षो मीलितमक्षि पौरुषरसः स्त्रीणां कुतः सिद्धयति ॥३॥

रति विपरीत पिया पिय भावे।

सुरति समरु में सुभट लाडिली विजय मेलि जिह खेल दिखावे।
भुज बन्धन में बांधि विधी कों जुगल उरोजन सों पुनि दावे।
नखछत करति अधर रस मोहति पकरि केश कटि तटहि नचावे।
श्रम सों शिथिलु जघनु वच्छस्थल ढीली भुजा हियो धरकावे।
नैन बन्द आनन्द मगनु भई प्यारो पूर्ण तृप्त सुखु पावे।
रामराय पौरुष रसभारी ताकों प्यारी निजहि जनावे ॥२-३॥

तस्या पाटलपाणिजांकितमुरो निद्राकषाये दृशौ
निर्धूतोऽधरशोणिमा विलुलितस्रस्तस्रजो मूर्धजाः ।
काञ्चीदामदरश्लथाञ्चलमिति प्रातर्निखातैर्दृशो-
रेभिःकामशरैस्तदद्भुतमहो पत्युर्मनः कीलितम् ।।४।।

रतिरस चिन्ह अनोखे मोहैं ।
प्रिया उरोजु लगीं नख रेखा जनु शिव शीश चन्द्रदलु सोहैं ।
रैन जागरन नैन अरुण भये चुम्बन अधरु लाल सों सेत ।
केश पास कुसुमावलि विथकित शिथिल किंकिनी कटी समेत ।
मदन पंचशर लगे प्रिया के वेध्यो मदन मोहनु को जाय ।
रामराय जो निरखत वश भये अद्भुत सुख कहते न बनाय ।।४।।

त्वामप्राप्य मयि स्वयम्वरपरां क्षीरोदतीरोदरे
शंके सुन्दरि कालकूटमपिबन्मूढो मृडानीपतिः ।
इत्थं पूर्वकथाभिरन्यमनसो विक्षिप्य वामाञ्चलं
राधायाः स्तनकोरकोपरि लसन्नेत्रो हरिः पातु वः ।।५।।

मोहनु को मनु नांहि अँघावे ।
प्रिया उरोज सरोज निरखिवे हितु कछु चातुर बात बनावे ।
हे सुन्दरि छीरोदधि तट पर मोहि स्वयं तुमने वर लीनों ।
तुम्हें न देखि भवानी पति ने दुख सों विष को भच्छन कीनो ।
जा विधि भोरी नवल किशोरी इकटक ठाढ़ी करीं बिहारी ।
रामराय नैननु सुख लीनों बसनु हटाय मिटाय चिहारी ।।५।।

व्यालोलः केशपाशस्तरलितमलकैः स्वेदलोलौ कपोलौ
स्पष्टा दष्टाधरश्री कुचकलसरुचा हारिता हारयष्टिः ।
काञ्ची काञ्चिद्गताशां स्तनजघनपदं पाणिनाच्छाद्य सद्यः
पश्यन्तीचात्मरूपं तदपि विलुलितस्रग्धरेयं धिनोति ॥६॥

जिह सिंगार न क्यों मनु करसे ।
जाको देखि विश्व को सुन्दर परम तृप्ति मानति अति हरसे ॥
केशपास विलुलित अलकावलि चंचल श्रमकन ललित कपोलु ।
विंधे अधरु पल्लव की शोभा त्रुटित कंचु कुचहारु अमोलु ॥
कटि करधनी चली निज थल सों जघन सघन कर पल्लव दाव ।
दूजे कर आच्छाद उरोजन रमन कमन जह सहज सुभाव ॥
टूटी लर लटकत मोती की चोटी की मर्दित वनमाल ।
रामराय ऐसी प्यारी लखि माधवलाल भये बेहाल ॥६॥

ईषन्मीलितदृष्टि मुग्धहसितं सीत्कारधारावशा-
दव्यक्ताकुलकेलिकाकुविकसद्दन्तांशुधौताऽधरम् ।
श्वासोत्कम्पिपयोधरोपरि परिष्वङ्गात्कुरङ्गीदृशो
हर्षोत्कर्षविमुक्तनिःसहतनो धन्यो धयत्याननम् ॥७॥

कौन बिहारी सम बड़ भागी ।
वामु केलि उत्कंठा समुदित श्वास चलित उरजनु अनुरागी ॥
आलिंगन सों अधिक हर्षवश शिथिल कार्य अच्छम मृगनैनी ।
अधखुले नैन मुखाम्बुज मुसकनि सीतकार सों मनु धनु लैनी ॥

प्रगट न करे हृदय व्याकुलता किन्तु कछुक बातनु मुख भाखे।
दशन किरन सुख सदन वदन कों रामराय पूरन तप चाखे ॥७॥

अथ निर्गतबाधा सा राधा स्वाधीनभर्तृका।
निजगाद रतिक्लान्तं कान्तं मण्डनवाञ्छया ॥८॥
इति सहसा सुप्रीतं सुरतान्ते मानितातिखिन्नाङ्गी।
राधा जगाद सादरमिदमानन्देन गोविन्दम् ॥९॥

॥ दोहा ॥

सुरत अन्त स्वाधीन पति प्यारी सब विधि शान्त।
प्यारे सों श्रम हरनु हित वदति वचनु एकान्त ॥१॥
हे प्यारे हे प्रानपति हे वल्लभ सुकुमार।
अब मेरो उपचार करि करु सुन्दर सिंगार ॥२॥

यद्राधा निजगाद तदेव गीतेनाह—

(अथ चतुर्विंशतितमः प्रबन्धो रामकरीरागेण यतिताले गीयते।)

कुरु यदुनन्दन चन्दनशिशिरतरेण करेण पयोधरे।
मृगमदपत्रकमत्र मनोभवमङ्गलकलशसहोदरे ॥१॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने। ध्रु०
अलिकुलगञ्जनसञ्जनकं रतिनायकसायकमोचने।
त्वदधरचुम्बनलम्बितकज्जलमुज्ज्वलय प्रिय लोचने ॥२॥
नयनकुरङ्गतरङ्गविलासनिरोधकरे श्रुतिमण्डले।
मनसिजपाशविलासधरे शुभवेष निवेशय कुण्डले ॥३॥

भ्रमरचयं रचयन्तमुपरि रुचिरं सुचिरं मम सम्मुखे ।
जितकमले विमले परिकर्मणि नर्मजनकमलकं मुखे ॥४॥
मृगमदरसवलितं ललितं कुरु तिलकमलिकरजनीकरे ।
विहितकलंककलं कमलानन विश्रमितश्रमशीकरे ॥५॥
मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद मनसिजध्वजचामरे ।
रतिगलिते ललिते कुसुमानि शिखण्डिशिखण्डकडामरे ॥६॥
सरसघने जघने मम शम्बरदारणवारणकन्दरे ।
मणिरशनावसनाभरणानि शुभाशय वासय सुन्दरे ॥७॥
श्रीजयदेववचसि शुभदे हृदयं सदयं कुरु मण्डने ।
हरिचरणस्मरणामृतनिर्मितकलिकलुषज्वरखण्डने ॥८॥

हे जदुनन्दन करहु सिगार ।

कामदेव मंगल कुच कलशन, चन्दन शीतल निजु करु कमलन ।
केलि लिखो कस्तूरी पत्रक मकरी बेल सुचार ॥१॥
काम कटाच्छ वानु से रोचक, त्वदधर चुम्बन कज्जल मोचक ।
मधुप समूह समान बनावहु कज्जल रेखा प्यार ॥२॥
हे शुभ वेष नैन हरिनन के, सुख विलास रोधक श्रवनन के ।
मदन मनोहर पास सदृश कुण्डल पहिरावहु सार ॥३॥
अलकावलि अलिकुल सम जोहे, निर्मल मुख मंडल भलि सोहे ।
केश पास गूँथहु कंघी ले धीरे धीरु सुधार ॥४॥

रतिश्रम स्वेद बिन्दु के धारक, अर्धचन्द के चिन्ह स्मारक।
कमल समान सुकोमल मुख पिया मृग मद तिलक समार ॥५॥
कामदेव ध्वजचौर सहेली, मोर पिच्छ की मानहु वेली।
वैनी ढीले भये फूल फिर दीजै मानु अपार ॥६॥
काम मत्त मद हस्थि मन्दरा, रस सिंगार गम्भीर कन्दरा।
जघन देश मनि किंकिन भूषन वसनु धराउ उदार ॥७॥
कृष्ण ध्यान धारा कलिजुग में, भक्त पाप नाशक जग मग में।
रामराय भूषन सम धारहु श्री जयदेव उचार ॥८॥

रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयो-
र्घटय जघने काञ्चीमञ्च स्रजा कबरीभरम्।
कलय वलयश्रेणीं पाणौ पदे कुरु नूपुरा-
वितिनिगदितः प्रीतः पीताम्बरोऽपि कथाकरोत् ॥१॥

॥ मांझ ॥

कुच फल पत्र कपोल चित्र लिख कटि कांची पहिरावो।
केश पाश कुसुमनु सों गूथो कर कंकनजु धरावो॥
चरन कमल नूपुर घन सुन्दर पीताम्बर सुख पावो।
रामराय प्यारी भाखन सुनि गोकुलनाथ सरावो ॥१॥

पर्यङ्कीकृतनागनायकफणश्रेणीमणीनां गणे
सङ्क्रान्तेप्रतिबिम्बसङ्कलनया विभ्रद्वपुर्विक्रियाम्।

पादाम्भोरुहधारिवारिधिसुतामक्ष्णां दिदृक्षुः शतैः
कायव्यूहमिवाचरन्नुपचिताकूतो हरिः पातु वः ॥२॥

पलका पन्नग राजु बनायो ताकी मनि परछांई।
सेवति चरनु कमलु कों कमला कला अनेक दिखांई॥
ताही विधि अगनित स्वरूप हरि अगनित नैन निकाई।
मदनु सदनु श्री जी कों निरखति रामराय सुखदाई॥२॥

यद्गान्धर्वकलासु कौशलमनुध्यानञ्च यद्वैष्णवं
यच्छृङ्गारविवेक तत्त्वरचनाकाव्येषु लीलायितम्।
तत्सर्वं जयदेवपण्डितकवेः कृष्णैकतानात्मनः-
सानन्दाः परिशोधयन्तु सुधियः श्रीगीतगोविन्दतः॥३॥

जो गान्धर्व कला सप्तस्वर राग रंग चतुराई।
राधामाधव ध्यान धारना नव नव कुञ्ज रचाई॥
रस सिंगार भेद की रचना श्री जयदेव बनाई।
रामराय इकतान चित्त लखि गीत गोविन्द लखाई॥३॥

श्रीभोजदेवप्रभवस्य राधादेवीसुतश्रीजयदेवकस्य।
पराशरादिप्रियवर्गकण्ठे श्रीगीतगोविन्दकवित्वमस्तु॥४॥

सारस्वत द्विजवंश प्रशंसित भोज देव गुनु भारी।
श्री राधापत्नी कों संग ले बसे बंग रुचिकारी॥
तहां भये जयदेव रूप धरि श्री जगदीश मुरारी।
रामराय तिन श्यालु पराशर गीत गोविन्द लिखारी॥४॥

साध्वी माध्वीकचिन्ता न भवति भवतः शर्करेकर्कशासि
द्राक्षे द्रक्ष्यन्ति के त्वाममृतमृतमसि क्षीर नीरं रसस्ते ।
माकन्द क्रन्दकान्ताधर धरणितलं गच्छ यच्छन्तिभावं-
यावच्छृङ्गारसारस्वतमिह जयदेवस्य विष्वग्वचांसि ।।५।।

महुआ मत चिन्ता कर शर्कर तो में कर्कश तांई ।
दाख तोहि देखेंगे अब को सुधा धरा में नांई ॥
खीर नीर रस कान्ताधर तू धरनि रसालु रुवाई ।
जब तक श्री जयदेव देव की भूतल पर कविताई ।।५।।
द्वादश सर्ग कुञ्ज द्वादश सम राधा माधव राई ।
कविनृप चक्रवर्ति करुना करि तिनु की लीला गाई ॥
जह सु प्रीत पूर्व पीताम्बर नामक सृष्टि बनाई ।
रामराय निज कुल की रचना बड़े भागसों पाई ।।६।।
संवत सोलह सो बाईसा ऋतु वसन्त सरसाई ।
माधव मास राधिका माधव की जह लीला गाई ॥
जमुना तट अद्वैत निकट वट मदन गोपाल सहाई ।
रामराय श्री वृन्दावन की अति अद्भुत प्रभुताई ।।७।।

इतिश्रीजगदीशावतार श्रीजयदेवमहाप्रभुवंशोद्भव दार्शनिक-सार्वभौम,रसिकसम्प्रदायाचार्य श्रीरामरायगोस्वामीप्रभु प्रणीतार्या श्रीगीतगोविन्दप्रियायांपदावल्यां सुप्रीतपीताम्बरो नामद्वादशसर्गः समाप्तः । शुभम्

Vrindavan Das
Govind Kund, Vrindavan
Nityananda Baba Ashr

❀ श्रीराधामाधवाष्टकम् ❀

आनन्दः परमानन्दः पूर्णानन्दः परात्परः ।
प्रेमानन्दादिसन्दोहः श्रीराधामाधवो मम ॥१॥

धर्मार्थकाममोक्षाणां स्मृतिमात्रेण दायकः ।
बुद्धिव्यामोहकः साक्षात् श्रीराधामाधवो मम ॥२॥

राकारो राधिका धाम मकारो माधवेङ्गितः ।
रामनामाधाररूपः श्रीराधामाधवो मम ॥३॥

साकारः सर्वदासोऽयं निराकारो नहि क्वचित् ।
सदा गोलोक निलयः श्रीराधामाधवो मम ॥४॥

सुखनाम्ना स्वयंसर्वान् कर्षति हृदयङ्गमः ।
कृष्णनामावतारी सः श्रीराधामाधवो मम ॥५॥

व्रजवृन्दावनानन्दी नित्यः श्रीनन्दनन्दनः ।
गोपी गोपालकप्रेष्ठः श्रीराधामाधवो मम ॥६॥

जयदेवस्वरूपेण स्वगानकरणोत्सुकः ।
गीतगोविन्दरसधीः श्रीराधामाधवो मम ॥७॥

रावलग्रामसम्प्राप्तस्तातपादकृतादरः ।
कृपासिन्धुर्दीनबन्धुः श्रीराधामाधवो मम ॥८॥

जयदेवतनूजेन कृष्णेनाष्टकमद्भुतम् ।
कृतं तेन प्रसन्नोहि श्रीराधामाधवो मम ॥९॥

इति श्रीसारस्वतद्विजकुलाब्धिकौस्तुभ भगवच्छ्री जयदेवमहाप्रभुतनूज
रसिकाचार्य श्रीकृष्णदेव गोस्वामिप्रभुप्रणीतं
श्रीराधामाधवाष्टकं समाप्तम् ।

Ratnakar Press, Calcutta-7.